Publication date- 5th September 2025, Posting date- 9/10th September 2025. Place of posting- Naraina
संख्या No. U (W)-11/2024-26 PRGI No.DELBIL/2005/16236 Postal Regn. No. DL (W) 10/2129/24-26

PRGI No. DELBIL/2005/16236

श्रद्धा सबूरी

श्री साई सुमिरन टाइम्स

मासिक समाचार पत्र

वर्ष-21 अंक-12 नई दिल्ली सितम्बर 2025 वार्षिक मूल्य 700 रू. (प्रति कॉपी 60 रू.) पृष्ठ-16

साई मंदिर रोहिणी में जन्माष्टमी महोत्सव धूमधाम से सम्पन्न

दिल्ली: दिनांक 16 अगस्त 2025 को सुप्रसिद्ध शिरडी साई बाबा मन्दिर, सैक्टर-7, रोहिणी में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का त्यौहार धूमधाम एवं हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस पावन अवसर पर पूरे मंदिर को फूलों, रंग बिरंगी लाईटों व गुब्बारों से बहुत ही सुन्दर सजाया गया। मंदिर में श्रीकृष्ण भगवान की लीलाओं की अनेक आकर्षक झांकिया लगाई गई, जिन्हें देखने के लिए भारी संख्या में भक्तगण मंदिर में आए। सुबह से ही मंदिर में भक्तों का आना शुरू हो गया था। भक्तों ने श्री कृष्ण भगवान के बाल गोपाल स्वरूप को झूला भी झुलाया। रात को पूरा मंदिर रंग बिरंगी लाईटों से सजा बहुत सुन्दर लग रहा था। दिनभर मंदिर में भजनों का गुणगान चलता रहा। शाम

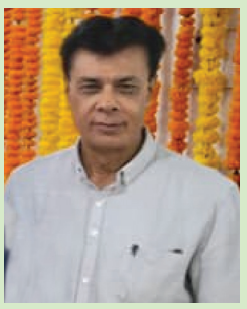

की आरती के बाद सांय 8 बजे से रात 10 बजे तक श्री परवीन मुदगुल, गुरूजी ब्रिज मोहन नागर, श्री भुवनेश नाथनी, परवीन मलिक एवं नरेश नागर ने भजनों का गुणगान किया। रात्रि 10 बजे से श्रद्धेय श्रवण जी महाराज द्वारा भजनों का गुणगान किया गया जो रात 12 बजे तक चलता रहा। इस अवसर पर बहुत से भक्तों ने मंदिर में पहुंच कर भजनों का

शेष पृष्ठ 4 पर

मैं एक राहगीर हूं

मैं एक राहगीर हूं
तुम भी एक राहगीर हो
हम सभी राहगीर हैं,
हम आये हैं तो जायेगें भी
यह अकाट्य सत्य है
क्या इस सत्य को जान पायेंगे कभी
क्योंकि मैं एक राहगीर हूं
राह में चलते-चलते शिरडी गांव आ गया
मेरे साई का स्थान आ गया
मेरे बाबा का स्थान आ गया
ऐसा लगा बाबा ने मुझे बुला लिया
राह में चलते-चलते थक गया था
बाबा के श्री चरणों में बैठकर
थोड़ा तो आराम पांऊ मैं,
राहगीर हूं तो क्या हुआ
मुझे भी हक है जीने का
द्वारकामाई-चावड़ी में रूकने का
थोड़ा शीतल जल-अमृत
द्वारकामाई में रखे घड़े से पीने का
थोड़ी देर अपने बाबा के पास बैठ जाऊँ
कुछ आप बीति उनसे कहूं
कुछ सद्गुरू से पा जाऊं मैं
अब अपने बाबा के सिवा कहां जाऊं मैं।
मुझे देख साई बाबा हंसे और बोले:-
ऐ राहगीर,
तू जहां जायेगा मुझे ही पायेगा
मैं ही शिरडी में हूं मैं ही तेरे भीतर हूं
जन्मों-जन्मों से तू मेरा था और
मुझमें ही समा जायेगा।
ये जीवन एक राह है
जिसमें प्रेम के सिवा कुछ भी नहीं।
जब तू यह जान जायेगा तो मुझे पा जायेगा।

-विकास मेहता

शैलेन्द्र भारती शिरडी में समाधि दिवस पर करेंगे भजन

शिरडी: दिनांक 2 अक्टूबर 2025 को सुप्रसिद्ध भजन गायक श्री शैलेन्द्र भारती जी शिरडी में साई भजनों का गुणगान करेंगे। शिरडी साई बाबा संस्थान द्वारा उन्हें बाबा के समाधि दिवस, 2 अक्टूबर 2025 पर शिरडी में साई भजनों का गुणगान करने के लिए आमंत्रित किया गया है। श्री शैलेन्द्र

भारती जी साई समाधि शताब्दी मंडप पर सांय 7 बजे से रात 9:30 बजे तक अपनी मधुर आवाज़ में साई भजनों की प्रस्तुति देंगे। इस कार्यक्रम में आप सभी भक्त शामिल होकर उनके भजनों का आनंद ले सकते हैं। शिरडी में समाधि दिवस दिनांक 1 अक्टूबर से 4 अक्टूबर तक मनाया जाएगा।

काश हर कस्बे को ऐसे डॉक्टर मिल जाते

गोडसे काका को रोज़-रोज़ मरते हुए पूरा गांव देख रहा था। एक दिन उनकी पीड़ा देखकर रहा न गया तो स्वप्निल ने मां से पूछा, 'आई क्या काका का इलाज नहीं हो सकता?' मां ने बस इतना ही कहा था, 'बेटा, डॉक्टर सिर्फ उन्हीं को ठीक करते हैं, जिनके पास पैसे होते हैं।' दुनिया के तमाम धर्मों ने सेवा को सर्वोच्च कर्म क्यों कहा? क्योंकि इनके प्रणेताओं को यह एहसास था कि एक दौर आएगा, जब इंसान इतना खुदगर्ज़ हो जाएगा कि समाज का अस्तित्व ही शायद खतरे में पड़ जाए। समाज को जोड़े रखने और मानव मूल्यों की रक्षा के लिए उन्होंने सेवा, करूणा और परमार्थ को सर्वोच्च धर्म बताया। आज जब अपने ही देश में हम अस्पताल का बिल न भर पाने के कारण शव को बंधक रखने या इलाज न करा सकने के कारण गरीबों के तड़प-तड़प कर मरने की खबरें पढ़ते-सुनते हैं, तो स्वप्निल माने जैसे लोग हमें देवदूत लगते हैं।

आज से 43 साल पहले महाराष्ट्र के एक छोटे से गांव सोनगांव में स्वप्निल पैदा हुए। पिता कॉपरेटिव बैंक में सहायक की नौकरी करते थे और मां गृहणी थीं। ज़ाहिर है, पिता की मामूली तनख्वाह में किसी तरह परिवार का गुज़ारा हो पाता था। मगर माता-पिता, दोनों स्वप्निल की शिक्षा को लेकर जागरूक थे। वे उन्हें बड़े सपने देखने को प्रेरित करते। ज़िला परिषद का सरकारी स्कूल घर से दो किलोमीटर दूर था। नन्हें स्वप्निल को आते-जाते चार किलोमीटर की वह दूरी पैदल ही तय करनी पड़ती। मगर उन्होंने कभी कोई बहाना नहीं बनाया। पढ़ाई के प्रति बेटे का लगाव देख माता-पिता बहुत खुश होते, मगर एक बात उन्हें लगातार परेशान करती कि स्वप्निल की भविष्य की पढ़ाई संबंधी ज़रूरतें वे कैसे पूरी कर सकेंगे? बहरहाल, प्राइमरी की पढ़ाई पूरी करने के बाद स्वप्निल को 12वीं कक्षा तक शाहू महाराज

शेष पृष्ठ 2 पर

बाबा ने मेरे रूप में राखी बंधवाई

मैं अपनी पत्नी भारती बेन के साथ अमेरिका गया था। मेरी बहन अमेरिका में है उसकी तबीयत ठीक नहीं थी, इसलिए हम जून 2025 में उसे मिलने अमेरिका चले गये। मुम्बई में मेरी एक साई बहन डॉक्टर आशा है जो हर साल मुझे राखी बांधती है। वह बाबा की परम भक्त है और बाबा को बहुत मानती है। वो मुझे शिरडी के समाधि मंदिर में मिली थी तब से वो हर साल मुझे राखी बांधती है। इस वर्ष रक्षा बंधन के दिन मैं यू.एस.ए. में था। उस दिन वो मुम्बई में जब पार्क में सैर करने निकली तो मुझे बहुत याद कर रही थी। तभी उसे लगा जैसे मैं पार्क में सामने बैठा हूं। वो उठ कर गई और उसने पूछा कि क्या आप डॉक्टर अनिल रावल हैं? तो उस व्यक्ति ने गुजराती में कहा कि हां मैं डॉक्टर रावल हूं आज रक्षा बंधन है तो मैं राखी बंधवाने आपके पास आया हूं, मुझे साई बाबा ने भेजा है। आशा बेन बहुत हैरान हो गई कि मैं यहां कैसे आ गया। दरअसल वो साई बाबा थे जो मेरे रूप में उससे राखी बंधवाने पहुंच गये, क्योंकि वो मुझे बहुत याद कर रही थी। बाबा ने उसकी इच्छा पूरी कर दी। अगले दिन 10 अगस्त को उसने मुझे फोन किया और पूछा अनिल भाई, क्या आप मुम्बई में हो? तो मैंने उसे बताया कि नहीं मैं अमेरिका में हूं। तो उसने मुझे बताया कि कल उसने मुझे पार्क में देखा और राखी बांधी। उसने पूछा कि क्या तुम्हारा कोई भाई है। तब मैंने उससे कहा कि मेरा कोई भाई नहीं है, मेरी तीन बहनें हैं। उसने कहा कि कल उसने मुझे पार्क में देखा और उसने मेरी फोटो भी खींची और मुझे वो फोटो भेजी। वो फोटो बिल्कुल मेरी ही है। हम दोनों बहुत हैरान थे कि बाबा मेरे रूप में उससे राखी बंधवाने मुम्बई पहुंचे। यह सुनकर उसकी आंखों में आंसू आ गये। बाबा अपने भक्तों को कभी उदास नहीं देख सकते और उनकी मदद करने स्वयं दौड़े चले आते हैं।

आशा बेन द्वारा खींची फोटो

डॉ. अनिल रावल

-डा. अनिल रावल, ऊझा, गुजरात

Since 1990
aarcee
World renowned name in
WALL PAPER
Awnings, Blinds & Canopies
Visit Before You Buy
Show room: 9-A, Aurobindo Place, HAUZKHAS,
Aurobindo Marg, New Delhi-110016
Terrace Awning
Basket Awning
R.C. Gupta
Ph. 9810030709, 9910030709

श्रद्धा सबूरी
TANEJA JEWELLERS PVT. LTD.
हमारे यहां साई बाबा जी के चांदी के सिंहासन, छत्र, पादुका व मुकुट हर साईज में तैयार किए जाते है
Gold, Diamond, Kundan, Silver Ornaments & Birth Stones
Exclusive Range of Silver Utensils & Gift Articles
Naresh Taneja - 9211760000, 41720094, 29830855
J-37 B, Central Market, Lajpat Nagar-II, New Delhi-24.

• Curtain & Sofa Cloth • Bed Sheets & Bed Covers
• Towels/Table Linen • Quilts & Blankets
• Mattresses & Pillows • Carpets & Rugs • Wallpaper
• Curtains Rods & Venetian Blinds • Cushion Cover
SITA Fabrics
Furnishing Homes For Better Living
D-37, Central Market, Lajpat Nagar-II,
New Delhi-110024. Ph: 011-41750253/254
We accept all major Credit/Debit Cards
ALL DAYS OPEN
SPECIAL OFFER ON WALLPAPER

सम्पादकीय

दोस्तों श्री साई सुमिरन टाइम्स ने अपने सफर के 21 साल पूरे कर लिये हैं। इस दौरान हमें हमारे सदस्यों और पाठकों का भरपूर प्यार और सहयोग मिला जिसके लिए हम सदा आप सबके आभारी रहेंगे। हम विज्ञापन दाताओं के भी आभारी हैं जिनके सहयोग से हम आगे बढ़ पाते हैं। साई भक्ति की ज्योत घर-घर में जलाने के उद्देश्य से ही श्री साई सुमिरन टाइम्स की शुरूआत की गई। बाबा की शिक्षाऐं, बाबा के चमत्कार व बाबा की लीलाऐं घर-घर पहुंचाना ही हमारा मकसद है और श्री साई सुमिरन टाइम्स का ये प्रयास सदैव जारी रहेगा। दोस्तों, जब हम बाबा के साथ हुए भक्तों के अनुभव पढ़ते हैं तो बाबा के प्रति श्रद्धा उमड़ती है और हमारा विश्वास दृढ़ होता है। अगर हमारे जीवन में भी कोई समस्या हो तो अन्य भक्तों के अनुभव पढ़ कर हमें भी एक आशा की किरण नज़र आती है। बाबा की सच्ची भक्ति हमारा जीवन बदल सकती है। दोस्तों हम अक्सर बाबा से कुछ ना कुछ मांगते ही रहते हैं और उम्मीद करते हैं कि बाबा हमारी सारी मनोकामनाऐं पूरी करें, और बाबा करते भी हैं। कभी-कभी हमारी कोई इच्छा पूरी नहीं होती तो हमारा विश्वास डगमगाने लगता है। अगर हम स्वयं को बाबा को समर्पण कर दें तो हमारी हर मुश्किल आसान हो सकती है। बाबा जानते हैं कि हमारे लिए कब और क्या सही है। मुश्किल से मुश्किल वक्त को अगर हम बाबा की रज़ा मान लें तो वो मुश्किल वक्त आसानी से कट जाता है। इसलिए जीवन में दुख-सुख जो भी हमारे साथ हो, उसे स्वीकार करो तो आप बाबा को सदा अपने साथ महसूस करोगे और बाबा से हमें बड़ी से बड़ी कठिनाई को झेलने की शक्ति मिल जाऐगी और हम अपने जीवन को सुख-शान्ति से व्यतीत कर सकते हैं। जीवन में मुश्किलें आना भी ज़रूरी है क्योंकि मुश्किल वक्त में ही हमें लोगों की पहचान होती है और हम ईश्वर के भी करीब आते हैं। ओम साई राम। **-अंजु टंडन**

पृष्ठ 1 से आगे

काश हर कस्बे को ऐसे.....

विद्यालय लातूर से छात्रवृत्ति मिल गई। वह और मन लगाकर पढ़ने लगे। मगर उन्हीं दिनों एक ऐसी घटना घटी, जिसने स्वप्निल का भविष्य तय दिया।

तब वह आठवीं कक्षा में थे। पढ़ने में काफी होशियार होने के कारण गांव के सारे लोग उन पर खूब स्नेह लुटाते। पड़ोस के गोडसे काका भी उनमें शामिल थे। गोडसे काका दिहाड़ी मजदूर थे। रोज़ाना 50-60 रूपये कमाते, जिससे उनका परिवार चलता था। एक दिन वह ऐसा बीमार पड़े कि बिल्कुल बिस्तर से लग गए। पता चला, उन्हें कैंसर है। स्वप्निल के पिता ने थोड़ी-बहुत माली मदद की, मगर वह भी कितना कर पाते। गोडसे को रोज़ दर्द से कराहते, तड़पते और मरते हुए पूरा गांव देख रहा था। एक दिन उनकी पीड़ा देखकर रहा न गया तो स्वप्निल ने मां से पूछा, 'आई, क्या काका का इलाज नहीं हो सकता?' मां का जवाब बेचैन करने वाला था। उन्होंने बस इतना कहा था, 'बेटा, डॉक्टर सिर्फ उन्हीं का इलाज करते हैं, जिनके पास पैसे होते हैं।'

गोडसे काका बिना इलाज तड़पते हुए मर गए। मगर उसी समय स्वप्निल ने अपनी मां से वायदा किया- 'आई, मैं पढ़ लिखकर डॉक्टर बनूंगा और जिनके पास पैसे नहीं होंगे, उनका भी इलाज करूंगा।' मां की आंखें अनायास बरस पड़ी थीं।

सन् 1999 स्वप्निल के लिए एक यादगार वर्ष बनकर आया। 12वीं की परीक्षा पास करने के बाद उन्हें प्रवर मेडिकल ट्रस्ट के एक प्रतिष्ठित मेडिकल कॉलेज में MBBS में दाखिला मिल गया। साल 2005 में ए ग्रेड के साथ MBBS की डिग्री हाथ में थी। स्वप्निल के लिए अवसरों के अनेक दरवाज़े खुल चुके थे, मगर उनका लक्ष्य बिल्कुल स्पष्ट था। उन्हें तो गरीब कैंसर मरीज़ों की सेवा करनी थी। उस वक्त माली हालत ऐसी नहीं थी कि वह अपना अस्पताल शुरू कर पाते, लिहाज़ा उन्होंने टाटा मेमोरियल हॉस्पिटल के स्त्री रोग संबंधी ऑन्कोलॉजी में काम करना शुरू कर दिया। वहां उन्हें काफी कुछ अध्ययन व शोध करने को मिला।

एक दिन वह अस्पताल के गलियारे से गुज़र रहे थे, तभी उनकी निगाह एक ऐसे शख्स पर पड़ी, जो हताश-मायूस खड़ा था। वह एक कैंसर रोगी था, जो अस्पताल तक तो किसी तरह आ गया था, पर उसके पास न इलाज के बिल चुकाने के पैसे थे और न घर लौटने का किराया था। स्वप्निल उसकी कैफियत समझ रहे थे। उन्होंने उस मरीज को तत्काल अपनी जेब से कुछ रूपये दिए और उसके इलाज की फीस के लिए एक एन.जी.ओ. से मदद मांगी। मदद मिली भी। इलाज पूरा होने के बाद जब वो घर लौट रहा था तो बेहद खुश था। बार-बार स्वप्निल के कदमों में झुक जाता। स्वप्निल ने उसी क्षण फैसला किया कि वह मुंबई नहीं, किसी गांव में इलाज करेंगे।

वह अपने राहुरी तालुका पहुंचे। स्वप्निल यह जानकर हैरान थे कि वहां प्रति 100 में से एक महिला को 'सर्वाइकल कैंसर' है, मगर पचास किलोमीटर तक न जांच की कोई सुविधा है और न विशेषज्ञ डॉक्टर उपलब्ध हैं। उन्होंने मामूली फीस पर मरीज़ों को देखना शुरू कर दिया। रोगियों की भीड़ उनके यहां उमड़ने लगी। इससे स्थानीय डॉक्टर नाराज़ हो गए। डॉक्टरों के संघ ने उन्हें नोटिस जारी कर तत्काल चैरिटी बंद करने को कहा। मगर स्वप्निल की पत्नी सोनाली माने पूरी मजबूती से उनके साथ खड़ी रहीं और दोनों ने उसी फीस पर गरीबों का इलाज जारी रखा।

गरीबों की दुआएं खाली नहीं जातीं। कई अन्य डॉक्टरों ने स्वप्निल के साथ जुड़कर अपने जीवन को भी सार्थक बनाने की इच्छा जताई। वे सभी मिले, जुड़े और 'डॉ माने मेडिकल फाउंडेशन एंड रिसर्च सेंटर' की शुरूआत हो गई। साल 2011 से इस फाउंडेशन के तहत साईधाम हॉस्पिटल ने भी काम करना शुरू कर दिया। बीते 14 वर्षों में स्वप्निल और उनकी टीम ने कैंसर की पहचान के लिए कई गावों में 1,119 शिविर लगाए हैं। उनके अस्पताल में अब तक 18,000 गरीब मरीज़ों का मुफ्त ऑपरेशन हो चुका है और लाखों लोगों की ज़िंदगियों में सुखद बदलाव आया है। निस्संदेह, स्वप्निल जैसे निस्वार्थ सेवा भाव और नेक दिल डॉक्टर को लोग गरीबों का मसीहा मानते हैं। **-गायत्री सिंह**

बाबा ने आगे पंहुचाया

आप सबको मेरा साईराम। मेरा नाम अक्षय है। मैं गुजरात के वलसाड ज़िला के पानेरा गांव में रहता हूं। मैं एक बार अपने दोस्तों के साथ शिरडी गया था। शिरडी पहुंच कर मैं अपने दोस्तों के साथ बाबा के दर्शन करने जा रहा था, मुझे गुटखा खाने की बहुत आदत थी, तो मैं गुटखा खाने चला गया और मेरे दोस्त लोग मुझे छोड़ कर बाबा के दर्शन करने चले गए। मैं पीछे रह गया। मंदिर में जाकर देखा तो मेरे सारे दोस्त मेरे से बहुत आगे थे। मैंने बाबा को मन ही मन प्रार्थना की कि बाबा मुझे सबसे आगे बुला लोगे तो मैं गुटखा खाना छोड़ दूंगा। थोड़ा चलने के बाद मैं अचानक मंदिर में गिर गया। मंदिर के सिक्योरिटी गार्ड ने मुझे गिरते हुए देखा तो वो लोग दौड़कर मेरे पास आये और मुझे उठाया। फिर कुछ कदम चलने के बाद मैं फिर से गिर गया। सिक्योरिटी गार्ड ने मुझे फिर उठा कर बाबा के पास आगे छोड़ दिया। मैं आगे पंहुच गया और मेरे दोस्त लोग देखते ही रह गए। बाबा को मैंने प्रणाम किया बाबा के चरणों को स्पर्श किया। बाबा ने मुझे बहुत अच्छे दर्शन दिये।

अगले दिन मैं घर वापस आ गया। उसके बाद मेरा गुटखा खाना भी छूट गया। यह बात 5 साल पुरानी है। बाबा की कृपा पाकर मैं धन्य हो गया। **-अक्षय,** गुजरात

बाबा का चलिया

आप सभी को मेरे और मेरे परिवार की तरफ से ऊँ साई राम जी। मैं लोधी रोड साई बाबा मंदिर में सन् 2003 से हर बृहस्पतिवार को जाया करता था, एक बार सन् 2004 मार्च में किसी कारण से मैं बहुत उदास था। कोई भी काम चाहे वो व्यापार हो या परिवार से सम्बंध रखता हो सब कुछ विपरीत हो रहा था। मैं बहुत परेशान रहता था। तब मेरे एक चचेरे भाई ने राय दी कि मैं लोधी रोड साई मंदिर का चलिया रख लूं अर्थात 40 दिन तक लगातार रोज़ मंदिर में बाबा को मत्था टेकने जाऊं। सब ठीक हो जायेगा। मैंने उसी दिन से चलिया शुरू कर दिया। उन चालीस दिनों को मैं ज़िन्दगी में कभी भूल नहीं पाऊँगा क्योंकि उन्हीं चालीस दिनों में मेरे व्यापार, परिवारिक और शादी से संबधित सभी कार्य मेरी इच्छानुसार होते चले गये। वह चालीसवां दिन था 13 अप्रैल 2004, उसके बाद से लेकर आज तक मैं लोधी रोड के साई बाबा मंदिर में नियमित रूप से हाज़री दे रहा हूं।

अगर मैं दिल्ली या भारत से बाहर होता हूं तो बाबा की कृपा से वहीं साई बाबा का मन्दिर मिल जाता है और बाबा के दर्शन हो जाते हैं। बाबा अपने भक्तों के मन के भाव भी समझते हैं और उन्हें कभी निराश नहीं करते। **-आदित्य नागपाल,** दिल्ली

बाबा जाने दिल की बात

मेरा नाम नीतू है मैं दिल्ली में रहती हूं। बाबा के प्रति मेरी बड़ी आस्था है। मैं 24 साल से बाबा से जुड़ी हूं। मैं सबसे पहले देव नगर स्थित साई बाबा मंदिर में गई थी, तब वो मंदिर छोटा सा था। धीरे-धीरे मुझे वहां बाबा से लगाव हुआ और मेरी बाबा के प्रति श्रद्धा बढ़ती गई। मैं राधा रानी और बांके बिहारी जी को भी बहुत मानती हूं। 14 साल पहले मैंने दीक्षा भी ली थी। हमारे गुरूजी जी को जब पता चला कि मैं बाबा की भक्त हूं तो उन्होंने मुझे कहा कि सबका सम्मान करना चाहिए, उन्होंने मुझे बाबा के विरूद्ध कुछ नहीं कहा।

पिछले दिनों कुछ लोग बाबा के बारे में उल्टा सीधा बोल रहे थे। एक बार मैं शिरडी से दर्शन करके वापस आई थी, रात को मैं बैठे-बैठे बाबा से मन ही मन बातें कर रही थी कि बाबा आपके बारे में लोग क्या क्या कहते हैं, हालांकि इससे मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता पर मेरी इच्छा है कि आप मुझे प्रमाण दें कि क्या आप हैं? उसी रात जब मैं सोई तो मेरे सपने में बाबा आये। मुझे बाबा की टूटी फूटी द्वारकामाई दिखाई दी, उस टूटी फूटी मस्जिद में बाबा मुझे टहलते हुए नज़र आए, फिर बाबा पत्थर पर बैठे दिखे और फिर मैंने बाबा को दीप जलाते देखा। मैं यह सब देखकर बहुत हैरान हुई। मुझे बहुत आनंद भी महसूस हुआ क्यों कि बाबा ने मुझे प्रमाण दे दिया कि बाबा हैं। मैंने अपने सभी परिवार वालों को उस सपने के बारे में बताया। अब मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता कि लोग बाबा के बारे में क्या कहते हैं।

मैंने अपने घर में साई बाबा के साथ लड्डू गोपाल जी भी विराजमान किये हैं। मैं जब भी कभी बाहर जाती हूं तो बाबा से कहकर जाती हूं कि आप बड़े हो मेरे लड्डू गोपाल का ध्यान रखना।

मेरी बहन भी बाबा को बहुत मानती है। उसकी शादी को चार साल हो गये थे पर उसकी कोई औलाद नहीं थी। जिसके कारण वो बहुत परेशान रहती थी। उसे बाबा पर बहुत विश्वास है। एक दिन उसका फोन आया, उस समय मैं मंदिर में बैठी थी। वो रोते-रोते मुझसे बात कर रही थी। मैं भी उसके लिए बहुत चिन्तित रहती थी। मैंने बाबा से कहा कि अब बहुत हो गया, वो आपको बहुत मानती है, आपकी इतनी पूजा करती है, आप उसकी गोद जल्दी से भर दो। बाबा तो अपने भक्तों की हमेशा सुनते हैं। बाबा ने कृपा की और अगले महीने ही मेरी बहन ने खुशखबरी सुना दी। मैंने बाबा से कहा था कि जब मेरी बहन के बच्चा होगा तो उसको माथा टिकाने शिरडी आपके पास लेकर आऊंगी। उसका बेटा अब चार साल का हो गया है, वो बहुत ही प्यारा बच्चा है और मेरे साथ उसका बहुत लगाव है। मैं जल्द ही उसे शिरडी लेकर जाऊंगी।

बाबा के प्रति हमारे सारे परिवार की बहुत श्रद्धा है और मेरी बाबा से प्रार्थना है कि हमेशा हमें अपने चरणों में रखें और अपनी कृपा हम सब पर बनाए रखें।

-नीतू तनेजा, दिल्ली

श्रद्धांजली

दिनांक 24 अगस्त 2025 को सुप्रसिद्ध गायिका शिल्पी मदान जी की पूज्य माताजी श्रीमती प्रोमिला सक्सैना जी का निधन हो गया। वह कुछ समय से बीमार थी हमारी साई बाबा से प्रार्थना है कि उन्हें अपने श्री चरणों में स्थान दें और उनके पति श्री प्रेम नारायण सक्सैना जी एवं समस्त परिवार को इस सदमें को सहने की शक्ति दें। श्री साई सुमिरन टाइम्स की तरफ से हम उन्हें भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। **-अंजु टंडन**

जन्मदिन की बधाई

12 सितम्बर को दीपक अग्रवाल के जन्मदिवस के शुभ अवसर पर मम्मी पापा, की तरफ से हार्दिक बधाई।

-राजेन्द्र कुमार

श्री साई सुमिरन टाइम्स

की सदस्यता लेने के लिए जानकारी

भारत में वार्षिक मूल्य डाक द्वारा 700 रू. व कोरियर द्वारा 1000 रू.
आजीवन सदस्यता 11000 रू., विदेशों में वार्षिक मूल्य 2500 रू.

आप अपना सदस्यता शुल्क Paytm, M.O. या QR Code द्वारा या श्री साई सुमिरन टाइम्स के HDFC बैंक, खाता संख्या 01292000015826, IFSC: HDFC0000129 में Net banking या चैक से जमा कर सकते हैं। अथवा State Bank of India, खाता संख्या 35247638760, IFSC: SBIN0017413 में जमा कर सकते हैं। Ch/DD in F/o Shri Sai Sumiran Times. कृपया राशि जमा करने की सूचना अवश्य दें। आप अपना पता व फोन न. हमें email/whatsapp/sms या डाक द्वारा भेज सकते हैं। हमारा पता है: श्री साई सुमिरन टाइम्स, F-44-D, MIG Flats, Hari Kunj Society, Hari Nagar, New Delhi - 110064.
Ph: 9212395615, 9818023070, Email: saisumirantimes@gmail.com

नोट: इसमें विज्ञापन देने के लिए भी सम्पर्क कर सकते हैं।

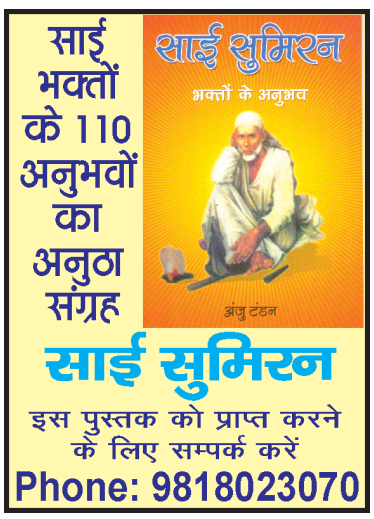

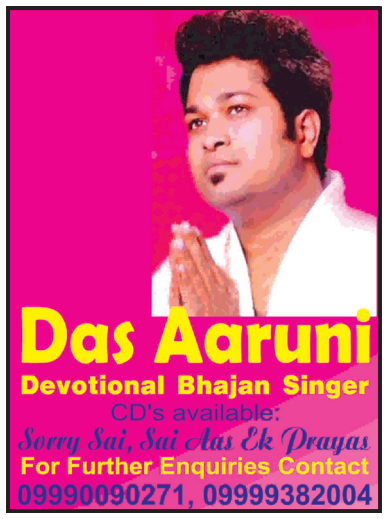

जाने चले जाते हैं कहां दुनिया से जाने वाले

परिवार जिसका मंदिर था, स्नेह जिसकी शक्ति थी, परमार्थ जिसकी भक्ति थी, ऐसी दिव्य आत्मा श्रीमती नीलम नागपाल जी को भगवान शांति प्रदान करें।

दिल्ली: दिनांक 21 अगस्त 2025 को बाबा के परमभक्त श्री सुनील नागपाल जी की धर्मपत्नी श्रीमती नीलम नागपाल सदा के लिए बाबा के चरणों में लीन हो गई। यह दुखद समाचार सुनकर समस्त साई परिवार गमगीन हो गया। नीलम जी कुछ समय से बीमार थी। दिनांक 23 अगस्त 2025 को श्री रघुनाथ मंदिर, कालकाजी नई दिल्ली में श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। जिसमें तेज़ वर्षा के बावजूद बड़ी संख्या में लोग उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करने पहुंचे। कई भक्त दूरदराज के शहरों से भी उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करने आये। इस अवसर पर सक्सैना बधु, श्रद्धेय श्री सुरेन्द्र सक्सैना जी एवं श्री अतिम सक्सैना जी ने अपने हृदयस्पर्शी भजनों द्वारा उन्हें श्रद्धांजलि दी। वहां उपस्थित सभी भक्तों की आंखे नम थी। श्री साई सुमिरन टाइम्स परिवार की तरफ से हम बाबा से प्रार्थना करते हैं कि बाबा उन्हें अपने चरणों में स्थान दें और उनके पति श्री सुनील नागपाल, पुत्र मोहित नागपाल, बहु एशले नागपाल, पौती शनाया, बेटी मिंशु भल्ला, दामाद श्री करून भल्ला व दौती साईशा को इस सदमें को सहने की शक्ति दें।

श्रीमती नीलम नागपाल कई वर्षो से बाबा की सेवा में सलंग्न थी। वे कालका जी महिला मंडल की प्रधान थी और साई अमृतवाणी, श्री साई सच्चरित्र पारायण एवं भजन कीर्तन व नाम जाप का आयोजन करती थी। उनका पूरा जीवन बाबा के चरणों में ही गुज़रा। श्री सुनील नागपाल जी जो कई मंदिरों से जुड़े हैं और दिन रात बाबा की सेवा में जुटे हैं, उनके लिए भी वे प्रेरणा स्त्रोत थी। उनके जाने से जो कमी हुई है उसे कोई पूरा नहीं कर सकता। उनका मुस्कुराता चेहरा, मधुर वाणी में बोलना और मिलनसार व्यवहार हम कभी भूल नहीं पायेंगे।

परिवार जिसका मंदिर था, स्नेह जिसकी शक्ति थी, परमार्थ जिसकी भक्ति थी, ऐसी दिव्य आत्मा को भगवान शांति प्रदान करें। **-अंजु टंडन**

जन्मदिन पर बाबा ने दिया आशीर्वाद

मेरा नाम नीरज है, मैं दिल्ली में रहती हूं। बाबा के प्रति मेरी बहुत श्रद्धा है। मैं हर साल 21 जून को अपने जन्मदिन पर बाबा के दर्शन करने शिरडी जाती हूं और बाबा के लिए प्रसाद लेकर जाती हूं। एक बार मैं अपने जन्मदिन पर दिल्ली से काजू कतली और बादाम लेकर गई। मैं अपने बेटे के साथ दर्शन करने गई थी, उस समय समाधि मंदिर में बहुत भीड़ थी। मैं सोच रही थी कि इतनी भीड़ है, पता नहीं प्रसाद चढ़ा पाऊंगी या नहीं। बाबा के सामने जाकर मैंने बाबा को नमस्कार किया। जैसे ही मैं दर्शन करके वापस मुड़ी तभी पीछे से किसी ने मेरे कंधे को थपथपाया मैंने पीछे मुड़कर देखा तो गार्ड खड़ा था। उसने मुझे कहा कि आपको आगे बुला रहे हैं। मैं आगे गई मेरे बैग के अन्दर बर्फी का डिब्बा और बादाम का पैकेट था जिसके बारे में किसी को मालूम नहीं था। जब मैं बाबा के करीब पहुंची तो पंडित जी ने कहा कि आप बैग में जो लाए हो वो निकालो। यह सुनकर मैं हैरान हो गई और मेरा पूरा शरीर कांपने लगा। मैंने बर्फी का डिब्बा और बादाम का पैकेट कांपते हाथों से पंडित जी को दिया। पंडित जी ने बर्फी और बादाम समाधि पर चढ़ा दिये और फिर बड़ी श्रद्धा के साथ बाकी प्रसाद मुझे लौटा दिया और साथ में बाबा के चरणों से मोगरे की माला भी दी। जिस गार्ड ने मुझे आगे जाने को कहा था उसने पीछे से आकर मेरे सिर को पकड़ कर समाधि के आगे झुका दिया। प्रसाद लेने के बाद मैं बहुत देर तक रोती रही। मुझे विश्वास ही नहीं हो रहा था कि बाबा ने मेरा प्रसाद कितने अद्भुत तरीके से स्वीकार किया। बाबा का आशीर्वाद पाकर मैं बहुत खुश थी। मेरी लिए ये जन्मदिन बहुत विशेष और यादगार बन गया। ओम साई राम। **-नीरज उप्पल,** दिल्ली

बाबा ने सकुशल यात्रा कराई

दिनांक 29 मई 2025 को जबलपुर से हम 10 परिजन मिलकर देहरादून, चार धाम यात्रा के लिये रवाना हुए। घर से स्टेशन निकलते समय मैंने व मेरी पत्नी वंदना ने बाबा की उदि एक डिब्बी में रखकर बाबा से प्रार्थना की कि अब आपको हम अपने साथ चार धाम यात्रा पर ले चल रहे हैं, हम सभी को आपके सान्निध्य में यह यात्रा सम्पन्न करनी है और एक आत्मविश्वास लेकर हम रवाना हो गए। देहरादून पहुंचकर हम दस लोगों की यात्रा का प्रारूप ही बदल गया। हेलीकाप्टर यात्रा में मुझे व मेरी पत्नी को किसी रेड्डी फैमिली के साथ कर दिया गया। बाकी परिवार अलग-अलग हेलीकाप्टरों से जायेंगे ये बताया गया। 10 लोगों में से एक बिटिया हमारे ग्रुप में शामिल की गई जबकि उसके मां, पिताजी अलग वाले ग्रुप में रखे गये। बाबा ने प्रथम यमनोत्री यात्रा 1 जून 2025 को कराई, वहां से फिर लगातार 2 जून को गंगोत्री और 3 जून को केदारनाथ बड़े इंतज़ार के बाद पहुंचे क्योंकि मौसम खराब था। उड़ान नहीं भरी जा रही थी। हमने बाबा से प्रार्थना की कि कल बद्रीनाथ जी पहुंचा दीजिये, दर्शन कर वापस जायें। लेकिन फिर मौसम के कारण बद्रीनाथ में -3 डिग्री टैम्परेचर में रहना पड़ा। हम 6 जून 2025 को हेलीकाप्टर से सकुशल देहरादून वापस पहुंचे। हमें पता चला कि इसी बीच दो हेलीकॉप्टर क्रेश हुए। हम सभी को बाबा सकुशल घर वापस ले आये। इसे बाबा का आशीर्वाद कहें या चमत्कार, ये घटना हम जबलपुर से चार धाम यात्रा पर गये परिवारों पर साक्षात् फलीभूत हुई। बाबा को अनन्य प्रणाम। साईनाथ महाराज की जय।

-चन्द्रशेखर दवे, जबलपुर

जन्मदिन मुबारक

श्री साई सुमिरन टाइम्स की सदस्यता एवं विज्ञापन के लिए सम्पर्क करें-
Ph: 9818023070
9212395615
For Daily Shirdi Darshan, Experiences of Sai Devotees & Latest News Subscribe Youtube Channel of Shri Sai Sumiran Times

Parmhans Enterprises
Disposable & Safety Items
Disposable Bed Sheet, Dispo Panty, Dispo Gown, Letex Gloves, Gillette Razor, Dispo Towell, Dispo Tissue, Dispo Face Mask, Dispo Bra, Dispo Cap, Dispo Shoes Natral Gloves, Dispo Hair Band, Cover Surgi Care Gloves M Fold C Fold, Tissue Box,
Customer Care No.
08700652184
E-mail : parmhans.kedar@gmail.com

वह बाबा ही थे

मैं, गौरी ऑबरोय साई ग्लोबल महापारायण से हूं। बाबा की सेवा और प्रचार-प्रसार करने में मुझे बहुत आनंद मिलता है। बाबा की कृपा को मैंने हर पल महसूस किया है, ऐसे ही कुछ अनुभव मैं आप सबको बताना चाहती हूं।

सन् 2023 में गुरु पूर्णिमा के पर्व पर 3 जुलाई को बाबा ने अचानक मुझे शिरडी बुला लिया। मैं दिल्ली से अकेली ही शिरडी गई थी। मेरा मन साई के प्रति श्रद्धा, प्रेम और समर्पण से भरा हुआ था। शिरडी में मुझे जो अनुभव हुए वो बाबा की कृपा ही है। बाबा की तीन अद्भुत लीलाएँ, जिनसे ऐसा लगा जैसे बाबा हर कदम पर, हर पल मेरे साथ चल रहे हों।

जब मैं दिल्ली से शिरडी जाने वाली दोपहर की फ्लाईट में चढ़ी तो मुझे बहुत प्यास लगी थी। मैंने चारों ओर देखा और सोचा, कोई बात नहीं साई, मैं सबुरी के साथ तब तक इंतज़ार करूँगी जब तक वे फ्लाईट में पानी नहीं देते। यह विचार मेरे मन में आया ही था कि तभी एक एयर हौस्टैस, विमान में सभी यात्रियों को नज़रअंदाज़ करते हुए मेरे पास आई और मुस्कान के साथ मुझे पानी की एक बोतल दी। मैडम, आपके लिए पानी है। सिर्फ मैं ही क्यों? उसी पल क्यों? ऐसा लगा जैसे बाबा स्वयं आये थे। बाबा ने ही मेरे लिए पानी भेज दिया था। बाबा, जो अपने बच्चे को प्यासा नहीं देख सकते थे।

शिरडी पंहुच कर मैंने समाधि मंदिर में बाबा के दर्शन किए। शाम को धूप आरती करने के बाद मैंने बाबा को मिठाई के दो पैकेट चढ़ाए। पुजारी ने प्रेमपूर्वक उन्हें साई बाबा की समाधि पर लगाया और मुझे लौटा दिए। जैसे ही मैं बाहर निकली और सीढ़ियों की ओर बढ़ी, संस्थान का एक कर्मचारी पता नहीं कहां से आया और मुझे आदिरसम के दो टुकड़े दिए, जो मेरी सबसे पसंदीदा मिठाई है। बाबा ने मेरी मिठाई स्वीकार की और अपने आशीर्वाद के साथ मेरे लिए भी भेजी। बाबा का यह कहने का कितना अच्छा तरीका है कि मैं तुम्हारी भक्ति स्वीकार करता हूँ, मेरे बच्चे।

जब मैं लेंडी बाग गयी, तो वहाँ मैंने भक्तों को एक विशेष स्तंभ पर दीपक जलाते देखा। मैंने अपने साथ आए प्रसाद नाम के लड़के से पूछा कि मैं भी यहां पर दीपक कैसे जला सकती हूँ। उसने कहा, 'तुम्हें बाहर से तेल और बत्ती लानी होगी।' मैंने सोचा कि मैं कल ले आऊंगी। लेकिन मन में आया कि कम से कम उस स्तंभ को छू ही लूँ जहां बाबा का आशीर्वाद है और सब दीये जला रहे हैं। मन ही मन बाबा से प्रार्थना करते हुए जैसे ही मैंने उस स्तंभ पर अपना हाथ रखा, तभी मेरे पीछे से एक बूढ़े व्यक्ति की आवाज़ आयी, 'बेटी, यह लो' उन्होंने एक बाती और तेल की एक छोटी बोतल मुझे दी और कहा, 'तुम दीया जलाओ।'

मेरा हृदय काँप उठा। मेरी आँखों में आँसू भर आए। मैंने उस वृद्ध व्यक्ति के मार्गदर्शन में दीया जलाया। उस क्षण, मुझे एहसास हुआ कि वह बाबा ही थे। वे साकार रूप में आए थे, ठीक वैसे ही जैसे मैंने प्रार्थना की थी। उन्होंने मुझे न केवल अपने दर्शन दिए, बल्कि अपना प्रकाश दिया और अपने पावन लेंडी बाग में दीप जलाने का सुअवसर भी दिया। उन्होंने मुझे कितने सुंदर तरीके से उनकी सेवा करने का अवसर दिया।

इन भावुक क्षणों में, बाबा ने मेरी आत्मा से फुसफुसाते हुए कहा: 'जब तुम्हें प्यास लगी, जब तुमने प्रसाद चढ़ाया, जब तुमने दीया जलाया, हर पल मैं तुम्हारे साथ था। जब तुम्हारा हृदय मुझे पूर्ण समर्पण भाव से पुकारता है, तो मैं किसी न किसी रूप में अवश्य आता हूँ।'

गुरु पूर्णिमा पर मेरी शिरडी यात्रा साई बाबा का पवित्र प्रेम पाकर धन्य हो गई। उन्होंने मेरा हाथ थामा, मेरी आत्मा को तृप्त किया और मेरा मार्ग प्रकाशित किया।

बाबा, मुझे अपनी लीलाओं का साक्षी बनाने के लिए धन्यवाद। मैं सदैव आपकी स्मृति में रहूँ, ऐसा आशीर्वाद चाहिए। साई नाथाय नमः। **-गौरी ओबेराय,** दिल्ली

हमें ये बताते हुए बहुत खुशी हो रही है कि अब आप सब साई बाबा की देश विदेश की खबरें, भक्तों के अनुभव, बाबा के अनूठे चमत्कार व बाबा के विभिन्न live कार्यक्रम, श्री साई सुमिरन टाइम्स की YouTube Channel पर भी निःशुल्क देख सकते हैं। इसके लिए आप सबसे अनुरोध है कि आप सब अपने फोन पर Shri Sai Sumiran Times की YouTube Channel को subscribe करें।

नोयडा में श्री कृष्ण जन्माष्टमी उत्सव

नोयडा: श्री साई समिति, सैक्टर-40, नोयडा में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का पावन पर्व बड़े ही धूमधाम और श्रद्धा भाव से मनाया गया। इस अवसर पर मंदिर परिसर को फूलों और फलों से सुंदरता पूर्वक सजाया गया। विधिवत पूजा-अर्चना के पश्चात् शाम 7:30 बजे से साई विद्या निकेतन विद्यालय के बच्चों

द्वारा भगवान श्रीकृष्ण की मनमोहक लीलाओं का मंचन किया गया, जिसे उपस्थित भक्तों ने बड़े चाव से देखा और सराहा। इस कार्यक्रम के ओवरऑल इंचार्ज समिति के कोषाध्यक्ष श्री ब्रिज लाल गर्ग जी रहे।

इस अवसर पर श्री साई समिति के महासचिव श्री देव राज गोयल, सह सचिव श्रीमती रेनू फोतेदार, सदस्य श्री सुनील भान, विद्यालय प्रभारी श्री ए.एम. त्रिपाठी, श्रीमती विनीता सक्सैना, विद्यालय की प्रधानाचार्या एवं शिक्षिकाएं विशेष रूप से उपस्थित रही।

सांय 8:30 बजे से रात्रि 11:30 बजे तक साई भजन मंडली द्वारा भक्तिमय भजनों की संगीतमय प्रस्तुति दी गई, जिसने पूरे वातावरण को आध्यात्मिक बना दिया। ठीक रात्रि 12 बजे भगवान श्रीकृष्ण का जन्म उत्सव धूमधाम से मनाया गया। अंत में आरती संपन्न हुई और मिश्री-माखन एवं फलों का प्रसाद वितरिण किया गया।

भक्तों की भारी भीड़ ने पूरे कार्यक्रम को भक्ति और उल्लास से सराबोर कर दिया। **-देवराज गोयल,** महासचिव

साई मंदिर रोहिणी में गणेश चतुर्थी पर विराजे गणपति

दिल्ली: गणेश चतुर्थी के पावन अवसर पर सुप्रसिद्ध साई बाबा मंदिर, सैक्टर-7, रोहिणी में दिनांक 27 अगस्त 2025 को गणपति जी को हर्षोल्लास के साथ विराजित किया गया। 6 सितम्बर 2025

को धूमधाम से बैंड-बाजे के साथ गणपति जी का विसर्जन किया गया। इन दिनों रोज़ गणपति जी की विधिवत् पूजा अर्चना की गयी। इसकी विस्तृत जानकारी अगले अंक में दी जाएगी। **-कृष्णा पुरी**

शिल्पी मदान और प्रवीन मलिक द्वारा भजनों का गुणगान

दिल्ली: विश्व विख्यात भजन गायक प्रवीन मलिक और शिल्पी मदान ने दिना. ांक 17 अगस्त को अरविन शर्मा के 18वें जन्मदिवस पर सूर्या ग्रैंड बैंक्वेट, द्वारका में खाटू श्याम का भजन कीर्तन किया। खाटू श्याम जी का

दरबार बहुत सुंदर सजा हुआ था। शर्मा परिवार खाटू श्याम जी के अनन्य भक्त हैं। उन्होंने बहुत ही श्रद्धा से इस कार्यक्रम का आयोजन किया। प्रवीन मलिक और शिल्पी मदान ने अपने मधुर भजन सजा दो घर को गुलशन सा, तू खाटू बुलाता रहे और मैं आता रहूं, हारा हूं बाबा, कीर्तन की है रात और अनेकों भजनों द्वारा माहौल को भक्तिमय कर दिया। अरविन के जन्मदिन की खुशी में सारे परिवार ने खूब नृत्य किया। संजू सावरे आर्ट ग्रुप ने बहुत सुंदर महारास में सबको भक्ति के रंग में डूबो दिया। आरती के बाद सबने प्रसाद ग्रहण कर प्रस्थान किया। **-जी.आर. नंदा**

साई धाम देव नगर में जन्माष्टमी

दिल्ली: दिनांक 16 अगस्त 2025 को प्राचीन साई धाम मंदिर, देव नगर, करौल बाग में श्री कृष्ण जन्माष्टमी का पर्व अत्यंत धूमधाम से मनाया गया। मंदिर में बड़ी संख्या में भक्तों ने आकर ये पर्व श्रद्धा पूर्वक मनाया। इस अवसर पर मंदिर को गुब्बारों से बहुत

सुन्दर सजाया गया। भक्तों का प्रात:काल से ही मंदिर में आना प्रारम्भ हो गया। पंडित जी ने प्रात:काल कृष्ण भगवान जी का मंगलस्नान करवा कर बहुत सुन्दर श्रृंगार किया जो सभी भक्तों को अपनी ओर आकर्षित कर रहा था। दिनभर भक्तों का आना-जाना लगा रहा। रात्रि 8 बजे से 12 बजे तक महिला भक्तों द्वारा विशेष रूप से भजनों का गुणगान किया गया। कई भक्तों ने भावविभोर हो नृत्य भी किया, जिससे पूरा माहौल भक्तिमय हो गया। रात्रि 12 बजे कृष्ण जन्म के पावन अवसर पर आरती की गई। उसके बाद सबको पंजीरी व फल का प्रसाद और पंचामृत का वितरण किया गया। जिसे सब भक्तों ने आदर-पूर्वक ग्रहण किया। कार्यक्रम का आयोजन मंदिर के संस्थापक श्री नीरज कुमार जी के मार्ग दर्शन में किया गया। **-मंजु पालीवाल**

पृष्ठ 1 से आगे

साई मंदिर रोहिणी में जन्माष्टमी ...

आनन्द लिया। रात 12 बजे आरती की गई। तत्पश्चात् सभी भक्तों को फल और पंजीरी का प्रसाद वितरित किया गया।

मंदिर के प्रधान श्री के.एल. महाजन, उपप्रधान श्री संजीव अरोड़ा, महासचिव श्री रमेश कोहली, कोषाध्यक्ष श्री अशोक रेखी, सचिव श्रीमती प्रोमिला मखीजा एवं सदस्य श्री पी.डी. गुप्ता व श्री विमल शर्मा ने सम्पूर्ण व्यवस्था को सुचारू रूप से चलाने में अपना-अपना योगदान दिया। **-कृष्णा पुरी**

साई मंदिर रोहिणी में नवरात्र एवं समाधि दिवस पर भक्तों को आमन्त्रण

दिल्ली: मिनी शिरडी के नाम से मशहूर साई बाबा मंदिर, सैक्टर-7, रोहिणी में नवरात्रों का त्योहार 22 सितम्बर 2025 से 1 अक्टूबर 2025 तक धूमधाम से मनाया जाएगा। नवरात्रों के दौरान माता की चौकी का आयोजन भी किया जाएगा।

दिनांक 2 अक्टूबर 2025 को श्री साई बाबा के महासमाधि दिवस के उपलक्ष्य में प्रात: 9 बजे से 12 बजे तक भजनों का गुणगान किया जाएगा। प्रात: 10 बजे मंदिर परिसर से बाबा की भव्य पालकी शोभा यात्रा धूमधाम से निकाली जाएगी जो रोहिणी भ्रमण के पश्चात् दोपहर 12 बजे पुन: मंदिर में पहुंचेगी। दोपहर को मध्यान आरती के पश्चात् सभी भक्तों के लिए भंडारे का आयोजन किया जाएगा। 12:30 बजे से रात शेज आरती तक विभिन्न भजन गायकों द्वारा भजनों का गुणगान जारी रहेगा।

सम्पूर्ण कार्यक्रम का आयोजन मंदिर के प्रधान श्री के. एल. महाजन, उपप्रधान श्री संजीव अरोड़ा, महासचिव श्री रमेश कोहली, कोषाध्यक्ष श्री अशोक रेखी, सचिव श्रीमती प्रोमिला मखीजा एवं सदस्य श्री पी.डी. गुप्ता, श्री बी.पी. मखीजा व श्री विमल शर्मा द्वारा किया जाएगा।

मंदिर के समस्त कार्यकारिणी सदस्यों की तरफ से सभी भक्तों से अनुरोध है कि आप सब सपरिवार मंदिर में पहुंच कर मैय्या एवं साई बाबा का आशीर्वाद प्राप्त **-कृष्णा पुरी**

साई धाम मंदिर गुड़गांव में श्री कृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव

गुड़गांव: साई धाम मंदिर, उप्पल साउथएंड गुड़गांव में दिनांक 16 अगस्त 2025 को श्री कृष्ण जन्माष्टमी पर्व बड़े ही धूमधाम एवं जोश और उमंग के साथ मनाया गया। इस अवसर पर मंदिर को रंग-बिरंगी लाईटों और फूलों से अति सुंदर सजाया गया। इस अवसर पर वृंदावन धाम के पूज्य व्यास जितेन्द्र जी द्व ारा श्रीकृष्ण भजनों का गुणगान किया गया। सभी भक्तों को श्रीमद्भागवत् और श्रीकृष्ण जी का आशीर्वाद प्राप्त हुआ। व्यास जी के भजनों से मंदिर का सारा वातावरण वृंदावनमय हो गया। ऐसा कार्यक्रम गत

वर्षों में पहली बार सम्पन्न हुआ जिसमें हज़ारों भक्तों ने भजनों का भरपूर आनन्द लिया। पूज्य व्यास जितेन्द्र जी एवं भक्तों ने मिलकर रात 12 बजे श्रीकृष्ण जन्म उत्सव मनाया। सभी भक्तों ने श्रीकृष्ण नाम के जयकारे लगाये। उसके बाद सभी भक्तों को चरणामृत एवं फलों का प्रसाद वितरित किया गया। श्री कृष्ण जी के जयघोष के साथ महोत्सव का समापन हुआ।

इस अवसर पर हरिचन्द्र प्रकाशवंती चैरिटेबल ट्रस्ट के सभी ट्रस्टी उपस्थित रहे। उनके सान्निध्य में सारा कार्यक्रम श्रद्धापूर्वक सम्पन्न हुआ। सभी ट्रस्टीयों ने मिलकर विश्व कल्याण के लिए प्रार्थना की। मुख्य ट्रस्टी आदरणीय श्री नरेन्द्र मिश्रा जी के कुशल मार्गदर्शन में सभी कार्यक्रमों का विधिवत् संचालन किया गया। **-आचार्य विनय मिश्रा,** गुड़गांव

श्री शिरडी साई मन्दिर कुरुक्षेत्र में गुरू पूर्णिमा उत्सव

कुरूक्षेत्र: दिनांक 10 जुलाई को श्री शिरडी साई मन्दिर में गुरुपूर्णि िमा उत्सव बड़ी श्रद्धा और उल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का आगाज़ बाबा की काकड़ आरती से हुआ और उसके तुरंत बाद उपस्थित साई भक्तों द्व ारा साई मंगल स्नान कराया गया और पूजा अर्चना की। इस अवसर पर उपस्थित साई भक्तों द्वारा सामूहिक रूप से सत्यनारायण भगवान की कथा की गई। पूरे दिन मन्दिर में साई भक्तों का तांता लगा रहा और उन्होंने बाबा के दर्शन कर आशीर्वाद एवं प्रसाद ग्रहण कर अपने को धन्य किया। शाम को मन्दिर में रवि राजन द्वारा साई भजनों की प्रस्तुति की गई और पूरा वातावरण बाबामय हो गया। इस अवसर पर मन्दिर में सिलाई का प्रशिक्षण पा रही छात्राओं में प्रथम रही दो छात्राओं को शहर के प्रमुख समाज सेवी दीपक चिब तथा धीरज गुलाटी के कर-कमलों द्वारा सिलाई मशीन भी पुरस्कार स्वरूप दी गयी तथा सभी सफल छात्राओं को प्रमाण पत्र दिए गए। इसके बाद विशाल भंडारे का भी आयोजन किया गया और सभी भक्तों ने बड़ी श्रद्धापूर्वक प्रसाद ग्रहण किया। इस आयोजन में मन्दिर के प्रधान डॉ. विजय शर्मा के अतिरिक्त साई भक्त प्रदीप गोयल, परमिंदर मनचंदा, चन्द्र भान, अनिल गिजवानी, सुरेश कुमार, कमलेश रानी, श्यामसुंदर सेठी, अनिल अरोड़ा, सीमा अरोड़ा, तरुण ढींगरा, गौरव गर्ग, प्रदीप अरोड़ा, अजय मदान, राजेश्वर, संगीता, विश्वास मनचंदा, करुणा शर्मा, प्रवीण सैनी, राकेश आहूजा, नीना रानी सहित बड़ी संख्या में श्रद्धालु मौजूद रहे।

-यश अरोड़ा, कुरूक्षेत्र

रघुनाथ मन्दिर कालका जी में साई मंदिर का स्थापना दिवस

दिल्ली: दिनांक 12, 13 व 14 अगस्त 2025 को श्री रघुनाथ मन्दिर, एन-ब्लॉक, कालका जी में स्थित साई मंदिर के 29वें स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में तीन दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन श्री सुनील नागपाल जी के मार्ग दर्शन में किया गया। दिनांक 12 अगस्त को शाम 5 बजे से 7 बजे तक श्री साई सच्चरित्र का पारायण किया गया।

दिनांक 13 अगस्त को शाम 5 बजे श्री रघुनाथ मंदिर से साई बाबा की पालकी शोभा यात्रा निकाली गई, जो विभिन्न क्षेत्रों से होती हुई 7 बजे वापस मंदिर में पहुंची। बहुत से भक्त पालकी यात्रा में शामिल हुए। सुनील नागपाल जी ने पालकी शोभायात्रा की सम्पूर्ण व्यवस्था बखूबी संभाली।

दिनांक 14 अगस्त को प्रात: 9 बजे साई बाबा को मंगल स्नान करवाया गया। शाम को 7 बजे से मंदिर में विशाल साई भजन संध्या का आयोजन किया गया। भजनों के गुणगान के लिए राजेश जी एवं साई मनीष मधुर जी को आमंत्रित किया गया। मनीष जी ने भजनों के कार्यक्रम का शुभारंभ गणेश वंदना से करने के बाद अनेक मधुर भजन सुनाकर समां बांध दिया। सभी भक्तों ने उनके मधुर भजनों का भरपूर आनन्द लिया। उनके भजनों पर कई भक्तों ने बाबा की मस्ती में नृत्य भी किया। आरती के बाद सभी भक्तों ने अत्यंत स्वादिष्ट भण्डारा प्रसाद ग्रहण किया। रघुनाथ मन्दिर के प्रधान श्री राकेश चन्द्र ईस्सर जी एवं साई मंदिर के संस्थापक श्री राकेश जुनेजा जी व श्रीमती गीता जुनेजा जी भी वहां मौजूद रहे। उन्होंने भजनों का भी खूब आनंद लिया।

बाबा के परम भक्त, सीता फैब्रिक्स के MD, श्री राकेश जुनेजा व श्रीमती गीता जुनेजा ने श्री रघुनाथ मन्दिर में 29 वर्ष पूर्व साई बाबा की मूर्ति स्थापना करवाई। स्थापना दिवस के अवसर पर श्री राकेश जुनेजा व श्रीमती गीता जुनेजा जी ने साई बाबा को फूल माला, चोला व प्रसाद अर्पित किया।

कार्यक्रम का आयोजन मंदिर के प्रधान श्री रमेश ईस्सर, महासचिव श्री रमेश सतीजा, सचिव श्री सुनील नागपाल, उपप्रधान श्री गुलशन अरोड़ा, श्री शिवेन्द्र कश्यप, श्री धर्मपाल ठक्कर, श्री प्रतीक गेरा, श्री राजेश ईस्सर, श्री विवेक मारवाह व श्री बबलू कुमार एवं समस्त कार्यकारिणी सभा, मंदिर के पुजारीगण, समस्त महिला मंडली, श्री श्याम सेवक परिवार व साई पालकी श्री रघुनाथ मंदिर के सदस्यों द्वारा बखूबी किया गया। **-सुनील नागपाल**

साई धाम मिनी शिरडी मुरादनगर में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव सम्पन्न

सलेमाबाद: दिनांक 16 अगस्त 2025 को श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का पावन पर्व साई धाम, मिनी शिरडी, साई नगर, रावली रोड, सलेमाबाद, मुरादनगर में बड़े धूमधाम व हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ दोपहर 12 बजे मध्यान्ह आरती के पश्चात् भजन कीर्तन से आरंभ हुआ। बाबा को अति सुन्दर सजाया गया। उसके उपरांत बाल गोपाल द्वारा बहुत ही सुंदर नृत्य प्रस्तुत किए गए व आमंत्रित कलाकारों द्वारा राधा-कृष्ण की मनमोहक झांकियों का प्रदर्शन भी रखा गया जिसका सभी भक्तों ने आनंद लिया। इस अवसर पर सांय 5 बजे से बाल गोपाल मटकी फोड़ प्रतियोगिता भी आयोजित की गई जिसमें आस-पास के गांवों से आई विभिन्न टीमों ने भाग लिया। भव्य भंडारे का भी आयोजन किया गया जो निरंतर चलता रहा। हज़ारों भक्तों ने स्वादिष्ट भण्डारा प्रसाद ग्रहण किया।

साई धाम के संस्थापक व बाबा के परम भक्त श्री वी.के. शर्मा व श्रीमती मीनाक्षी शर्मा ने मंदिर में आए सभी भक्तों को जन्माष्टमी की हार्दिक शुभकामनाऐं दी

हर्ष साई द्वारा साई मंदिर लोधी रोड में भजन

दिल्ली: दिनांक 31 जुलाई 2025 गुरूवार को सुप्रसिद्ध साई भजन गायक हर्ष साई जी ने साई बाबा मंदिर, लोधी रोड में बाबा के समक्ष भजनों का गुणगान किया। हर्ष जी ने अपने निराले अंदाज़ में कई भजन सुनाकर पूरे माहौल को भक्तिमय बना दिया। पूरा मंदिर भक्तों से भरा हुआ था। सभी भक्तों ने उनके भजनों का खूब आनन्द लिया।

साई धाम मंदिर हौज़ खास में श्री कृष्ण जन्माष्टमी

दिल्ली: साई धाम मंदिर, हौज़ खास में दिनांक 16 अगस्त 2025 को श्री कृष्ण जन्माष्टमी का त्यौहार अत्यंत हर्षोल्लस से मनाया गया। इस अवसर पर मंदिर को रंग-बिरंगी लाईटों और फूलों से अति सुंदर सजाया गया। भजनों का कार्यक्रम शाम 8:30 बजे से आरंभ हुआ जो श्रीकृष्ण भगवान जी के जन्मोत्सव रात 12 बजे तक चला। भजनों का गुणगान वृंदावन के गायक द्वारा किया गया। उन्होंने एक से बढ़कर एक भजनों की प्रस्तुतियां दी जिसका सबने आनंद लिया। भक्तों ने श्रीकृष्ण भगवान की दिव्य झांकियों के भी दर्शन किए। रात्रि 12:30 बजे सभी भक्तों को फल और पंजीरी प्रसाद वितरित किया गया।

मुख्य ट्रस्टी आदरणीय श्री नरेन्द्र मिश्रा जी के कुशल मार्गदर्शन में सभी कार्यक्रमों का विधिवत् संचालन किया गया। आरती के बाद श्री नरेन्द्र मिश्रा जी ने सभी भक्तों के लिए आरोग्य जीवन, दीर्घायु एवं सुख समृद्धि की कामना करते हुए श्री कृष्ण जी के नामों के जयघोष के साथ महोत्सव का समापन किया। **-कृष्णा पुरी**

साई धाम महावीर नगर में जन्माष्टमी महोत्सव

दिल्ली: दिनांक 16 अगस्त 2025 को साई धाम मंदिर, गली न. 2, ओल्ड महावीर नगर में जन्माष्टमी महोत्सव बड़ी धूमधाम एवं हर्षोल्लास से मनाया गया। पूरे मंदिर को गुब्बारों एवं लाइटों से अति सुंदर सजाया गया। लड्डू गोपाल जी का छोटा सा झूला फूलों और मोर पंखों से सजाया गया। मंदिर में विराजित बाबा भी बहुत खूबसूरत लग रहे थे। मंदिर में स्थानीय महिलाओं ने भजन कीर्तन किया। सभी भक्तों ने उनके भजनों का आनंद लिया। उसके बाद दही हांडी का कार्यक्रम हुआ। साई बाबा एवं श्रीकृष्ण भगवान को छप्पन प्रकार के व्यंजनों एवं फल, मक्खन, पंचामृत का भोग लगाया गया। मक्खन से भरी मटकी के आकार का अति सुंदर केक काटा गया। रात एक बजे तक कार्यक्रम चलता रहा। अंत में सभी भक्तों को प्रसाद वितरित किया गया।

साई धाम मंदिर में हर त्यौहार श्रद्धा पूर्वक मनाया जाता है। कार्यक्रम का आयोजन साई धाम मंदिर समिति के सभी सदस्यों द्वारा अति सुचारू रूप से किया गया। **-जी.आर. नंदा**

लखनऊ में पालकी एवं भजन संध्या

लखनऊ: दिनांक 15 अगस्त 2025 को साई आश्रम ट्रस्ट लखनऊ परिवार द्वारा वार्षिक शिरडी साई पालकी दोपहर चांद गंज से बड़ी धूमधाम से निकाली गई जिसमें कई स्थानों से भक्त इस पालकी में शामिल हुए। सर्वप्रथम पालकी की विधि विधान से जयशंकर वर्मा जी और शिरडी से पधारे तांबे जी ने पूजा करके पालकी का शुभारंभ किया। इस बार का आकर्षण नंदी पर शिव पार्वती, गंगा आरती, लिल्ली घोड़ी ग्रुप और आर.टी. धमाल ग्रुप थे जिन्होंने कार्यक्रम में चार चांद लगा दिये। संध्या मिश्रा जी और मीनू सचदेवा जी के कंधों पर निकली पालकी अब अन्य साई भक्तों को भी अपने भार का अहसास करवा रही थी, मानो पालकी में स्वयं देवा आ गए हों। विशाल झंडे को मनोज पुजारी बाबा संभाल कर चल रहे थे। लखनऊ के विभिन्न मार्गों से होते हुए, शिव शक्ति साई मन्दिर कपूरथला पहुंचने पर बाबा का भव्य स्वागत हुआ और आरती के साथ अभिवादन हुआ। किरण श्रीवास्तव जी और शशांक जी द्वारा बाबा का अभिषेक किया गया। पालकी को उठाते हुए संजय निगम, डॉ हिमांशु श्रीवास्तव, जितेंद्र श्रीवास्तव, उमेश यादव, अजय जयसवाल, अभिषेक साहू आदि भक्तों ने बाबा का अनुभव किया। राम कृष्ण मठ और विवेकानंद होते हुए पालकी यात्रा हर्षोल्लास के साथ जे.सी. गेस्ट हाउस पहुंची, जहां कुछ क्षण के विश्राम के बाद मीनू सचदेवा जी ने मधुर-मधुर साई भजनों की प्रस्तुति दी। विभिन्न भजनों के माध्यम से मीनू जी ने बाबा का आव्हान किया और सारा हॉल उनके भजनों से गूंज उठा। आरती के बाद सबने भोग भंडारे का आनंद लिया।

इस अवसर पर सबसे अधिक सबके प्रेरणा स्त्रोत, संजय मिश्रा जी (दादा) व ट्रस्ट के अन्य सदस्य इंद्रेश सिंह, शिव राम त्रिपाठी, अतुल मिश्रा, दानवीर सिंह, दीपक, हरीश सनवाल, राजेश पटेल, अजय त्रिपाठी मुन्ना भाई, बीनू शुक्ला, सी.एम. शर्मा, सुधा सिंह एडवोकेट, सरला चाची, राजीव तूली और डॉक्टर दीपक अग्रवाल ने उत्सव की शोभा बढ़ायी। सुनील सिंह, नीलेश सोनकर, योगेश पांडेय, अनुराधा सिंह, श्रीमती मनोज सिंह और डॉ ऋतु जयसवाल भी उपस्थित रहे। अगले दिन पालकी को शिरडी लेकर जाने के लिए, रेलवे स्टेशन पहुंचने के संकल्प के साथ ही सबने विदा ली।

-हिमांशु श्रीवास्तव, लखनऊ

मेरे निराकार स्वरूप का निरन्तर ध्यान करो

बाबा सभी को यही कहते, 'मेरा नाम लो, मेरी शरण में आओ। ज्ञान की जीवन्त मूर्ति, सर्वोच्च निर्मल चैतन्य अथवा आनंद-धन यह मेरा वास्तविक स्वरूप है। इसलिये मेरे निराकार सच्चिदानंद स्वरूप का निरन्तर ध्यान करो, यदि तुम ऐसा करने में असमर्थ हो तो मेरे साकार रूप का ही ध्यान करो। अपना मन व बुद्धि मुझे समर्पित कर दो और निरंतर मेरा ही स्मरण करो।' बाबा ने यथार्थ में उपरोक्त आश्वासनों से हर भक्त को समझाया कि 'नाम जाप' पाप के पर्वत को भी तोड़ सकता है। नाम जाप आवागमन के बंधन से छुड़ा देता है। नाम लेने के लिये स्नान करना अवश्यक नहीं हैं, नाम तो जीभ का आभूषण है परमार्थ का पोषण है। निरंतर मेरा नाम जपने से तुम सुरक्षित भवसागर पार कर जाओगे। तुम्हे किसी अन्य साधन की ज़रूरत नहीं है। जो हर क्षण मेरा नाम जाप करते हैं, वो मेरे लिए उत्तम से उत्तम व्यक्ति से भी श्रेष्ठ हैं।

नाम स्मरण की महिमा से हर भक्त परिचित है कि कैसे 'राम' दो अक्षर को उल्टा पढ़कर एक लुटेरा संत वाल्मीकि कहलाया। मरा-मरा यानि राम-नाम का उल्टा उच्चारण करते हुए ही उनकी जिव्हा पर राम की कृपा हो गई और उन्होंने राम-जन्म से पूर्व ही राम जी का जीवन चरित्र लिख डाला।

श्री साई बाबा ने कई बार कहा कि मैं जल, थल, जन, वन, देश विदेश हर जगह व्याप्त हूं। इस ब्रह्मलिखित वचन का अनेकों भक्तों को प्रत्यक्ष अनुभव मिला, जैसा कि श्री बालाराम मानकर बाबा के परम भक्त थे। पत्नी के देहांत होने पर वे निराश हो गए और घर परिवार संतान को सौंप कर शिरडी में बाबा के पास ही रहने लगे। भक्त की भक्ति देख बाबा ने उन्हें 12 रूपये देकर मच्छिन्द्रगढ़ जाकर पूजा अर्चना करने को कहा। पहले तो उन्होंने मना कर दिया, परन्तु फिर बाबा का आदेश मानकर चले गये। पूजा अर्चना करते हुए एक दिन समाधि से पहले जागृतवस्था में उन्हें प्रत्यक्ष बाबा के दर्शन हुए। मुझे इस निर्जन स्थान पर क्यों भेजा, पूछने पर बाबा ने कहा-'मैं केवल शिरडी में ही हूं, इस भम्र को मिटाने हेतु ही तुम्हें यहां भेजा है। प्रत्यक्ष देख लो मैं सारे विश्व में व्याप्त हूं। अब मेरे बताये हुए मार्ग से पूजा-अर्चना करो। इतना कहकर बाबा अदृश्य हो गए। कुछ समय वहां बिताकर वे पुनः शिरडी आ गये और बाबा श्री की देखरेख में जप-तप करते हुए शान्ति से साई चरणों में विलीन हो गए।

सन् 1905 में रूस-जापान युद्ध के समय कैप्टन जहांगीर दारूवाला जहाज़ों के साथ समुद्र में थे। दुश्मन हमला कर चुका था, सबके जीवन का अंत नज़दीक था। परम भक्त होने के नाते वे बाबा का चित्र अपने पास सदा रखते थे, चित्र के आगे बाबा से रक्षा करने को कहा। ठीक उसी समय इधर द्वारकामाई में बैठे बाबा ने 'हक-हक' चिल्लाना शुरू किया। बाबा का शरीर पूरी तरह से भीग गया। भक्तों ने बाबा को एक सूखी कफनी दी। एक भक्त ने इस पानी को तीर्थ रूप में जब लिया तो वो पानी नमकीन था। तभी दारूवाला ने अपने जहाज़ पर बाबा को प्रत्यक्ष खड़े देखा। स्वयं बाबा जहाज़ को रस्सों से खींच कर किनारे पर सुरक्षित ले आये। सब कर्मचारी व सामान आदि सुरक्षित रहा। बाबा की कृपा के लिये उन्होंने तार भेज कर धन्यवाद दिया। वापस आने पर वे स्वयं शिरडी आये और श्री चरणों से लिपट गये। उन्होंने बाबा को प्रणाम कर 2200/- रूपये (दो किश्तों में) सभा मंडप की मरम्मत हेतु दान में दिए। यह राशि धन्यवाद का प्रतीक था। (साभार साई लीला)

शिरडी में अपने निवास के दिनों में एक दोपहर को जब श्रीमति तर्खड भोजन की थालियां परोस रही थी कि एक भूखा

कुत्ता वहां आ गया। श्रीमति तर्खड ने तुरंत रोटी का एक टुकड़ा उसे दिया, तभी एक सुअर भी आया, माता ने उसे भी टुकड़ा दिया। दोनों प्राणी रोटी खाकर चले गये। संध्या समय जब श्रीमति तर्खड द्वारकामाई गई, बाबा बोले, 'मां आज तुमने बड़े प्रेम से खिलाया, मेरी भूखी आत्मा शांत हो गई।' याद रखो, पहले भूखों को भोजन कराओ, उसके पश्चात् स्वयं ग्रहण करो। इसका अर्थ माता को समझ में नहीं आया, अतः चुप रही। तब बाबा ने समझाया, जो कुत्ते व सुअर ने तुमसे भोजन प्राप्त किया है वो यथार्थ में मेरे ही स्वरूप हैं। मैं ही उनके आकारों में डोल रहा हूं। जो इन प्राणियों में मेरा दर्शन करता है, वह मुझे अत्यंत प्रिय है। ठीक इसी प्रकार बाबा ने नाना साहेब चन्दोरकर से एक बार कहा था कि मैं केवल शिरडी में ही नहीं हूं, मैं तो सभी प्राणियों में हूं, हां इस चींटी में भी। नाना कुछ न समझ सके। अतः बाबा ने इस प्रकार समझाया, एक दिन बाबा ने नाना साहेब से पूरन पोली बना कर लाने को कहा। नाना ने जब पूरन पोली से भरी थाली बाबा के सामने रखी तो बाबा ने हाथ नहीं लगाया। इस बीच कुछ मक्खियां पोली पर आकर बैठ गई। बाबा ने थाली वापस ले जाने को जब कहा, नाना बोले, आठों पोली तो वैसी ही पड़ी हैं। बाबा बोले, मैंने पोली चख ली है। यह सुनते ही नाना गुस्से से बोले, न मैं थाली वापस लूंगा और न स्वयं भोजन करूंगा और वाड़े लौट गये। बाबा ने उन्हें बुलाया और कहा, तुम मेरे साथ 18 साल से हो, क्या यही तुमने मेरा मूल्यांकन किया है? क्या तुम मुझे सिर्फ साढ़े तीन फुट हांड-मांस का पुतला समझते हो। सुनो, मैं चींटी के रूप में, मक्खी के रूप में भी खाता हूं। तुम्हारी पोली मैं पहले ही ग्रहण कर चुका हूं। यह सुन नाना को तुरंत भान हुआ कि बाबा ने उन्हें पहले भी दो बार, एक बार हरिशचन्द्र पहाड़ी व पद्मालय के घने जंगलों में एक भील के रूप में पानी व रात के समय चाय का इंतज़ाम किया था। (साभार श्री साई लीला)

श्री उपासनी महाराज जी के लिये साई बाबा ने एक बार कहा था, 'मेरे पास जो कुछ था, मैंने इसे दे दिया है। उसमें और मुझ में कोई अन्तर नहीं है। यह शुद्ध सोना है।' उपासनी जी की आध्यात्मिक उन्नति हेतु बाबा ने उन्हें चार वर्ष मौन धारण कर खंडोबा मंदिर में रहने को कहा। बाबा स्वयं कण-कण में हैं। प्रत्येक जीव-प्राणी में हैं, साकार भी हैं व निराकार भी हैं, इसे समझाने हेतु कहा, मैं खंडोबा मंदिर आऊंगा, अगर तुमने पहचाना तो मैं तुम्हारे साथ चिलम पीऊंगा। कुछ दिनों के बाद एक दिन उपासनी महाराज जब भोजन लेकर द्वारकामाई चले, एक कुत्ता जो बड़ी देर से उन्हें भोजन बनाते देख रहा था, पीछे-पीछे आने लगा। कुत्ते को दुत्कार व भगाकर वे द्वारकामाई पहुंचे। धूप में इतनी दूर खाना क्यों लाये, मैं तो वहीं बैठा था अरे, गुरू खंडोबा में ही थे और मुझे पता नहीं चला, उपासनी ने सोचा। वे पुनः बोले, वहां तो सिर्फ एक काला कुत्ता था। बाबा तुरंत बोले, हां वो मैं ही था। उपासनी सुनते ही अपनी इस नादानी पर रो पड़े। अगले दिन भोजन बनाते समय उन्होंने उस कुत्ते को ढूंढने की कोशिश की, कुत्ता तो नज़र नहीं आया, हां, एक शुद्र भिखारी भोजन बनाते हुए उन्हें ज़रूर देख रहा था। शुद्र को वहां खड़ा देख उन्हें बुरा लगा और उसे डांट कर भगा दिया। भोजन लेकर जब वो गये, बाबा बोले, कल तुमने भोजन नहीं दिया और आज खड़े नहीं होने दिया। अब से मेरे लिये भोजन लाने की आवश्यकता नहीं। उपासनी जी को पता चल गया कि वह शुद्र स्वयं बाबा थे। इससे उनको विश्वास हो गया कि श्री साई व ईश्वर एक ही हैं। वे साकार भी हैं निराकार भी हैं (साभार श्री साई बाबा)

सुधिजन, हम साकार की पूजा करते हैं, निराकार पाने के लिये। चूंकि विश्वरूपी निराकार ईश्वर को मन में धारण करना इतना आसान नहीं है, इसलिये भक्तों ने पहले सगुण पूजा की और जब वे मन में स्थिर हो गये तो वे सगुण से निकलकर निर्गुण और निराकार की पूजा करने लगे। ठीक ऐसा ही श्री साई बाबा जी के संदर्भ में है। सदेह समय शिरडी में भक्तों का तांता लगा रहता था, महान आश्चर्य, बाबा श्री की महासमाधि पश्चात् भी भक्तों की कतार लगी हुई है। और लगभग प्रत्येक आने वाले भक्त को बाबा श्री के निराकार स्वरूप का आनंदमय अनुभव मिल रहा है। श्री चरित्र में भी लिखा है, 'आस्था विश्वास न रखने वालों के लिये वे अदृश्य रहते हैं। विश्वास करने वाले भक्त चाहे कहीं भी क्यों न हों, वे उनके लिये प्रकट हो जाते है। चावड़ी में वे अदृश्य रूप में उपस्थित होते है, मस्जिद में ब्रह्म-रूप में, समाधि मंदिर में समाधि रूप में और बाकी सर्वत्र वे सुख-स्वरूप में होते हैं। भक्तों को दृढ़ विश्वास है बाबा यहां अखंड व अविनाशी रूप से विद्यमान हैं। देवता अपने धाम जाते हैं परन्तु संत यही ब्रह्म-पद प्राप्त कर लेते हैं। वे आवागमन को नहीं लेते हैं। जड़ स्थिति को लांघ कर बाबा अव्यक्त स्थिति में ज़रूर लीन हो गये हैं परन्तु उनकी उपस्थिति हर समय, हर जगह पर है। साई जड़-चेतन, सम्पूर्ण सृष्टि में व्याप्त हैं। साई समर्थ दीन-दयालु हैं, भक्तों के रक्षक हैं। हालांकि चर्म-चक्षु से वे दिखाई नहीं देते, परन्तु वे सर्वत्र, व्याप्त हैं। तहे-दिल से पूजन करने और भक्ति-भाव के साथ उनका स्मरण करने से सभी भक्तों को अनुभव होगा और वे बाबा श्री के निराकार स्वरूप को पहचान लेगें।

यह सर्वविदित है कि बाबा श्री का कहा गया प्रत्येक वचन ब्रह्म-लिखित था और आज भी ब्रह्म-लिखित है, जैसाकि बाबा का वचन है, 'मुझ पर पूर्ण विश्वास रखो। यद्यपि मैं देहत्याग भी कर दूंगा, परन्तु फिर भी मेरी अस्थियां आशा और विश्वास का संचार करती रहेंगी, जो अनन्य भाव से मेरे शरणागत होगें। निराश न होना कि मैं तुमसे विदा हो जाऊंगा। तुम सदैव मेरी अस्थियों को भक्तों के कल्याणार्थ ही चिंतित पाओगे।

भक्तगण, बाबाश्री ने एक समय बापू साहेब जोग से कहा था कि मैंने अपनी कृपा सिर्फ पावभर अर्थात् वन फोर्थ दिखाई है, महासमाधि बाद देखना। दूसरा-महासमाधि उपरान्त उनकी जेब से सोलह रूपये निकले थे। अर्थात् बाबा सोलह कलाएं सम्पूर्ण थे। यह पूर्णतः सत्य है कि आज बाबा ज़्यादा शक्तिशाली बनकर भक्तों की रक्षा कर रहे हैं। शिरडी महातीर्थ बन गया है। बाबा को एक महान सद्गुरू, औलिया, महायोगी और विशेष रूप से 'युग का अवतार' कहा जाता है। साई भक्ति का मार्ग सरल, सुगम और सुलभ है। साई कृपा की प्राप्ति के लिये सिर्फ अटल श्रद्धा और सबूरी की आवश्यकता है। साई आज भी साकार रूप में विद्यमान हैं। श्री साई सच्चरित्र के रूप में तथा धूनी मां से प्राप्त उदि में साई आज निराकार के रूप में भी हैं। भक्तों के हृदय में बाबा स्वयं ही शुद्ध व परिपूर्ण ज्ञान सागर हैं जो अनुभव पर आधारित है, यही उनका असली दर्शन है।

संकलनः साईदास योगराज मनचंदा

-शेष अगले अंक में

नगरी-नगरी फिरा मुसाफिर घर का रस्ता भूल गया

हर व्यक्ति को अपनी ज़िंदगी में सुख-सुविधाओं की आवश्यकता होती है। इंसान जीते जी सुख चाहता तो है, लेकिन मरने के बाद भी उसे सुख की आवश्यकता होती है, और इसी कारण से इन्सान अपनी ज़िंदगी में थोड़ा बहुत पुण्यकर्म करता रहता है। कुछ हिसाब लगाने वाले लोग केवल सोचते रहते हैं कि क्या यह पुण्यकर्म हमें स्वर्ग में लेकर जायेगा? क्या इस पुण्यकर्म से हमें सुख शांती मिलेगी? क्या इस पुण्यकर्म से हमें निश्चित रूपसे फल प्राप्ति हो सकती है? क्या पुण्यकर्म से हमें मोक्ष प्राप्ति हो सकती है? क्या इस पुण्यकर्म से हमारे जाने के बाद भी हमारा परिवार सुखी रह सकता है?

तुझे मोक्ष प्राप्ति के लिए स्वर्ग जाने की क्या ज़रुरत है? तू यहां पर जो हिसाब लगा रहा है, वही तो तेरे दुःख का असली कारण है और अगर तू यहां पर सुख महसूस नहीं कर सकता तो स्वर्ग में तेरे लिए कौन सा दरवाज़ा खोलकर भगवान तेरा स्वागत करने के लिए बैठा है? वहां पर कौन तेरी आरती उतारने के लिए बैठा है? तू यहां पर जो हर समय नफा-नुकसान का गणित करता रहता है, यही तो तुझे नरक में ले जाने के लिए काफी है। अगर तू यहां पर सुख शांति से रहेगा तो यहीं पर तुझे मोक्ष मिल सकता है। मोक्ष प्राप्ति के लिए तुझे मरने की ज़रूरत ही नहीं थी। संसार मे दुःख-दर्द हम खुद ही पैदा करते हैं। हर छोटी-छोटी सी बातों पर हम ज़रूरत से ज़्यादा सोचते रहते हैं। बड़ी बड़ी बातों से हमें ज़्यादा तकलीफ होती ही नहीं, लेकिन हम लोग छोटी-छोटी बातों पर ही बड़ी गंभीर सोच रखकर खुद परेशान रहते हैं। जिस बात से तुझे खुद को तकलीफ होती है, वही बात तू दूसरों को तकलीफ देने के लिए जान बूझकर करता रहता है। जैसे दिवाली के त्यौहार में बड़ा धमाका करने वाला सुतली बम हम खुद हाथ में अगरबत्ती लेकर जलाते हैं, उससे हमारे कान को तकलीफ ना हो इसलिये हम दूर खड़े रहकर खुद के दोनों कान अपने हाथों से दबाकर बंद करके खड़े रहते हैं। तो तुझे खुद को अगर इतनी तकलीफ बर्दाश्त नहीं हो रही थी, तो तूने बम जलाया क्यों? मतलब धमाका होते ही दूसरा अनजान आदमी डरकर जगह पर खड़ा हो जाये, उसके कान अचानक फटे बम से सुन्न हो जायें तो तुझे खुशी मिलती है। वो डर जाता है तो तू मुस्कुराता है। तू छोटी सी बात सोच ले जब तुझे तकलीफ बर्दाश्त नहीं होती है तो तूने दुसरों को तकलीफ देने का ठेका लेके रखा है क्या?

दीवाली के त्यौहार में 100 पटाकों की माला तू कभी अगरबत्ती से जलाता है, उसमें 99 पटाके अच्छी तरह से फट गये। तुने आवाज़ भी अच्छी सुनी। लेकिन उस जले पटाकों के कागज़ के ढेर में तुझे आधा जला पटाका मिलता है। उसकी थोड़ी सी बची हुई बाती को तू बार बार अगरबत्ती लगाकर दूर भागता है, तुझे 99 से खुशी नहीं मिल सकी तो तुझे एक पटाका कौनसी खुशी दे सकता है। तेरी दुःख की यही सबसे बड़ी वजह थी, कि तुझे एक पटाका ही ज़्यादा परेशान कर रहा था। और कभी-कभी तो वह एक पटाका मुंह के सामने ही फट जाता है। हर इंसान हर एक छोटी सी बात पर ज़रूरत से ज़्यादा सोचता है, यही उसके दुःख का कारण है।

-भाऊ थोरात, शिरडी

श्री साईबाबा मंदिर सरदारनगर अहमदाबाद में जन्माष्टमी उत्सव

अहमदाबादः दिनांक 16 अगस्त 2025 शनिवार के दिन श्री साईबाबा मंदिर, सरदारनगर, अहमदाबाद में श्री जन्माष्टमी उत्सव, भगवान श्री कृष्ण और सदगुरु श्री साईबाबा जी की असीम कृपा और आशीर्वाद से हर्षोल्लास से मनाया गया। सुबह 5 बजे से रात 11 बजे तक श्री साई सच्चरित्र का अखंड पारायण (पाठ) किया गया। सुबह 5 बजे भगवान श्री कृष्ण जी एवं सदगुरु श्री साईबाबा जी का विशेष महाभिषेक किया गया। इस दिन सुबह 6 बजे से रात 1 बजे तक मंदिर में दर्शनार्थियों को श्री जन्माष्टमी उत्सव का विशेष खीर प्रसाद का वितरण किया गया। सुबह 10 बजे से दोपहर 1 बजे तक नारायण सेवा भंडारा प्रसाद का वितरण किया गया। रात 11 बजे श्री साई सच्चरित्र अखंड पारायण की आरती करके पूर्णाहुति की गई। रात 9 बजे से 12 बजे तक साई भजन संध्या में मंदिर की साई भक्त भजन मंडली द्वारा भजनों का गुणगान किया गया। इस अवसर पर सांस्कृतिक कार्यक्रम, श्री कृष्ण लीलाओं के भजनों पर नृत्य एवं प्रेरणादायक प्रसंगों का भी आयोजन किया गया। जिसमें करीब 1000 दर्शनार्थी, श्रद्धालु, भजन प्रेमी, स्थानीय रहवासी एवं साई भक्तों ने उपस्थित रहकर कार्यक्रम का आनंद लाभ लिया। भजन संध्या के कार्यक्रम में उपस्थित सभी भक्तों को चाय, पानी एवं विशेष खीर का प्रसाद और बाबा का खिचड़ी प्रसाद वितरण किया गया। रात 12 बजे श्री कृष्ण जन्म के समय मंदिर के अंदर बाल गोपालों द्वारा दही हांडी फोड़ी गयी और मंदिर प्रांगण में मंदिर के सेवादारों द्वारा दही हंडी फोड़कर श्री कृष्ण जन्मोत्सव मनाया गया। इसके पश्चात उपस्थित सभी भक्तों को भगवान श्री कृष्ण का प्रिय माखन-मिसरी का प्रसाद वितरित किया गया।

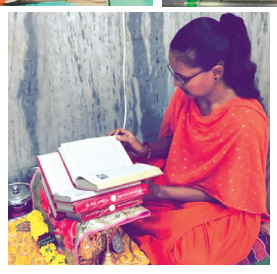

इस कार्यक्रम में बाल गोपालों के स्वरूप में आए हुए प्यारे बच्चों को मंदिर की तरफ से विशेष भेंट प्रसाद अर्पण किया गया और सभी को श्री कृष्ण जन्माष्टमी की बधाई दी गयी। श्री जन्माष्टमी उत्सव के दिन भारी संख्या में साई भक्तों ने, स्थानिक रहवासियों ने, श्रद्धालुओं ने, एवं दर्शनार्थियों ने सुबह 4:30 बजे से रात 1 बजे तक भगवान श्री कृष्ण एवं श्री साईबाबा जी के दर्शन एवं सेवाओं का लाभ लिया। **-सुरेश संगतानी**

श्रीराम मंदिर हरि नगर में भजन कीर्तन

दिल्लीः दिनांक 16 अगस्त 2025 को श्रीराम मंदिर, CB ब्लाक, हरि नगर में जन्माष्टमी महोत्सव हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर महिला परिवार के सदस्यों द्वारा भजनों का गुणगान किया गया। उन्होंने श्रीकृष्ण एवं श्री साई के कई भजन सुनाये। सभी भक्तों ने उनके भजनों का खूब आनंद लिया। आरती के बाद सभी भक्तों को प्रसाद बांटा गया। कार्यक्रम का आयोजन श्रीमती पूनम सचदेवा जी द्वारा अन्य भक्तों के सहयोग से किया गया।

श्रीराम मंदिर में हर महीने के आखिरी रविवार को भजन कीर्तन किया जाता है। **-गायत्री**

पिछले अंक से आगे...

साई के चरण कमलों में
डा. मोतीलाल गुप्ता की जीवनी- साई धाम की यात्रा

डॉ. गुप्ता, श्रीमती गुप्ता तथा साई धाम के अन्य सदस्यों ने स्कूल भवन के निर्माण हेतु बहुत विचार-मंथन किया। आरंभ में यह योजना बनाई गई कि मंदिर के भवन को थोड़ा बढ़ा कर, उसके ऊपर कक्षाएं बनाई जाऐं। इस नए भवन के लिये एक विस्तृत परियोजना बनाई गई परन्तु जब वे अनुमति के लिए शिक्षा-विभाग गये तो उन्हें बताया गया कि एक पंजीकृत स्कूल के लिये स्वतंत्र भवन होना आवश्यक है। कक्षाओं का आकार 18X24 फीट, गलियारा 10 फीट तथा लड़के-लड़कियों के लिये अलग-अलग शौचालय आवश्यक हैं। एक आर्किटेक्ट की नियुक्ति की गई जिसने सरकारी मानदंड के अनुसार स्कूल के लिये तीन मंज़िलों वाले भवन का प्रारूप तैयार किया।

साई बाबा की दया से डॉ. गुप्ता भवन बनाने की धन-राशि की व्यवस्था कर पाए। उनकी दोषरहित ख्याति, जो एक व्यावसायिक के रूप में उन्होंने स्थापित की थी वह इस मोड़ पर लाभदायक हुई। ख़ास कर कनारा बैंक के साथ उनके पुराने गूढ़ सम्बन्ध काम आए। गुरू जी ने कनारा बैंक के प्रबंधक, श्री पी.पी. मल्लिया को गुरू पूर्णिमा के आयोजन पर बतौर मुख्य अतिथि का न्यौता दिया। उनके साई धाम आगमन पर गुरू जी ने उनसे गरीब वंचित बच्चों के स्कूल निर्माण के लिये विचार-विमर्श किया। महाप्रबंधक इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने तुरंत पचास हजार रूपयों के दान की घोषणा कर दी। इस पुराने ग्राहक के दीर्घकालिक संबंधों पर विश्वास करते हुए महाप्रबंधक ने अपने मुख्यालय को आश्वस्त करते हुए कक्षा बनाने के लिये 2,50,000 की राशि की भी स्वीकृति करवा ली।

उसी अवधि में कनारा बैंक के पूर्व महाप्रबंधक, श्री के.एम. शेठ, जिनकी प्रोन्नति होकर सिंडिकेट बैंक में स्थानान्तरण हो गया था, उन्होंने भी डॉ. गुप्ता की इस योजना से अपनी सहमति जताई। उसी समय सिंडिकेट बैंक के अध्यक्ष सह निर्देशक अवकाश पर चले गए। श्री शेठ ने कार्यकारी निर्देशक का पद संभाला तथा कक्षा बनाने के लिये 2,50,000 की धन राशि साई धाम के नाम त्वरित निर्गत करा दी। एक्साइज़ के एक अधिकारी ने इस पुनीत कार्य के लिए, अपने अच्छे रिश्तों के एवज में, फरीदाबाद के अनेक व्यवसायियों से 62 ट्रक गिट्टी और पत्थर का चूरा मुहैया करवा दिया। धन राशि और सामग्री मिलने पर शिरडी साई बाबा स्कूल का भवन-निर्माण तीव्र गति से प्रारंभ हो गया।

12 दिसंबर 2004 को हरियाणा के

राज्यपाल, माननीय डॉ. ए.आर. किदवई ने विद्यालय की नींव डाली। एक वर्ष से भी कम अवधि में ही नीचे की मंज़िल, जिसमें छह कक्षाएँ, एक प्राध्यापक का कक्ष तथा तीन शौचालय तैयार हो गए। अगले वर्ष अक्टूबर 2005 में विजयदशमी के पावन अवसर पर श्री के.वी. सिंह, हरियाणा के मुख्यमंत्री के आफिसर ऑन स्पेशल ड्यूटी (ओ.एस.डी) ने नव-निर्मित शिरडी साई बाबा स्कूल का उद्घाटन किया।

स्कूल भवन का विस्तार काफी शीघ्रता से होने लगा। जर्मनी के दूतावास ने भी स्कूल के विस्तार में अहम भूमिका निभाई। जर्मन दूतावास के अधिकारी साई धाम देखने आए थे। यहाँ के कार्य से प्रभावित होकर दूतावास ने करीब साढ़े चार लाख रूपये निर्गत किये। कई अन्य भक्तों ने कक्षाओं के निर्माण को प्रायोजित किया। फलस्वरूप 2008 तक द्वितीय तथा तृतीय मंज़िल का निर्माण हो गया। धीरे-धीरे कक्षाओं तथा छात्रों की संख्या बढ़ती गयी।

कई गणमान्य अतिथियों को कक्षाओं के उद्घाटन के लिये बुलाया गया तथा स्कूल के आयोजन एवं वार्षिकोत्सव के लिये भी उन्हें निमंत्रण दिया गया। डॉ. गुप्ता विशेष प्रयत्न करते हैं कि गणमान्य उद्योगपति, सरकारी अधिकारी तथा समाज के अन्य महत्त्वपूर्ण शख्सियतों को साई धाम में निमंत्रित किया जाए। इस प्रकार साई धाम को अपने कार्य को प्रदर्शित करने का मौका मिलता रहता है।

डॉ. गुप्ता के विचार से जब इस तरह के प्रबुद्ध नागरिक, जो एन.जी.ओ को सहयोग देने में सक्षम हैं, साई धाम का दौरा करते हैं तो इसका संस्थान पर दीर्घकालिक प्रभाव पड़ता है। इनके आगमन से एन.जी.ओ की मान्यता एवं सत्यता प्रमाणित होती है। अगर पैसे ऑनलाईन भेज दिये जाएँ तो इस बात की मन में शंका रहेगी कि संस्थान ने पैसों का सही उपयोग किया या नहीं। परन्तु अगर लोग संस्थान का दौरा स्वयं ही करें तो इस बात का विश्वास तो हो ही जाता है कि उनके पैसों का दुरुपयोग नहीं हुआ, साथ-ही-साथ दान देने वाला यह भी देख पाता है कि किस प्रकार उसके योगदान से लोग लाभान्वित हो रहे हैं। इस तरह वह संस्थान से लम्बे काल के लिये जुड़े रहने को प्रेरित होते हैं। यह ध्यान देने योग्य बात है कि सिर्फ एक या दो बार के दान से किसी स्वयं-सेवी संस्थान को ज़्यादा लाभ नहीं पहुँचता। संस्थानों में कर्मचारी काम करते हैं तथा साधनों की ज़रुरत होती है। कर्मचारियों को वेतन देना पड़ता है, आफिसों के किराये देने पड़ते हैं तथा नियमित कार्यकलापों का भी खर्च वहन करना पड़ता है। जब तक एक संस्थान को नियमित आय का स्रोत नहीं मिलता तब तक वे अपना कार्यकलाप किस प्रकार चला पाएँगे? साई धाम ऐसे एन.जी.ओ., जो गरीबों की मुफ्त सेवा करते हैं, उन्हें हमारे ऐसे लोगों की सहायता की ज़रुरत होती है ताकि कम से कम उन तक इतनी राशि पहुँच पाए कि संस्थानों को बंद करने की नौबत ना आ जाए।

हम सबको ये सवाल पूछना होगा कि आखिर एक समाज को एन.जी.ओ. की आवश्यकता क्यों पड़ती है? इसका जवाब यह है कि सामूहिक तौर पर कहीं हमसे यह चूक हो रही है कि हम समाज के हर नागरिक को रोटी, कपड़ा और मकान जैसी बुनियादी ज़रूरतों को मुहैया कराने में विफल हुए हैं। इसलिये अपने गरीब नागरिकों की विषम परिस्थिति के लिये हम सभी ज़िम्मेदार हैं। निश्चित तौर पर गरीबों ने अपनी ऐसी स्थिति का अपनी इच्छा-अनुसार चयन तो नहीं किया है। यह तो नियति का खेल है कि एक ही घड़ी में एक शिशु किसी डाक्टर के परिवार में जन्म लेता है तथा दूसरा किसी दिहाड़ी मजदूर की झोपड़ी में। एक राष्ट्र के तौर पर हम विश्व गुरू कैसे बन सकते हैं जब कई राज्यों में करीब 40 प्रतिशत नागरिक गरीबी रेखा के नीचे हैं। बढ़ती हुई आबादी इस दुर्गति को बढ़ावा दे रही है।

-क्रमशः

-साई की चरण धूलि,
गुरू जी की सेवा में, ***नीति शेखर***

मैं कर्त्ता हूं-यह भावना मन में मत लाओ अभिमान एवं अहंकार से परे होकर कर्म करो। ईश्वर ही कर्त्ता है, ईश्वर ही प्रेरक है, मैं तो उनका आज्ञाकारी सेवक हूं-अपने को ईश्वर के प्रति कृतज्ञ मानो और उन पर पूर्ण विश्वास रखो। तुम्हारे कष्ट दूर हो जाएंगे और तुम जीवन के समस्त दुखों से मुक्त हो जाओगे।

साई धाम हंबड़ा रोड लुधियाना में जन्माष्टमी महोत्सव

लुधियानाः दिनांक 16 अगस्त 2025 को साई धाम, साई नगर, हंबड़ा रोड, लुधियाना में जन्माष्टमी महोत्सव धूमधाम से मनाया गया। मंदिर को फूलों से अति सुन्दर सजाया गया। इस अवसर पर मंदिर में

भजन संध्या का आयोजन किया गया। दिन भर मंदिर में भक्तों का आना-जाना लगा रहा। दोपहर 12 बजे की आरती के बाद भक्तों के लिए पकौड़े एवं चाय का वितरण किया गया। करीब 4-5 हज़ार भक्तों ने पकौड़े एवं चाय प्रसाद ग्रहण किया। भजनों का गुणगान जाने-माने गायक श्री मनदीप मनी जी द्वारा किया गया। उनके मधुर भजन सुनकर सभी भक्त भावविभोर हो गये और मंदिर का पूरा माहौल साईमय हो गया। हज़ारों भक्तों ने इस कार्यक्रम में शामिल होकर अपने सद्गुरू श्री साई बाबा एवं श्री कृष्ण भगवान का आशीर्वाद प्राप्त किया।

कार्यक्रम का आयोजन मंदिर समिति के ट्रस्टी श्री संजय सूद, श्री अदीश धवन, श्री राजेश शर्मा व मैनेजर संजीव अरोड़ा, एवं कुमारी शबनम द्वारा बखूबी किया गया।

-**संजीव अरोड़ा,** लुधियाना

श्रद्धा और सबूरी का गूढ़ रहस्य

सभी पाठकों को मेरा ऊँ साई राम। मैं न तो कोई लेखक हूं न ही कोई खास हूं, मैं तो बाबा का दास हूं। शुक्रगुज़ार हूं श्री साई सुमिरन टाइम्स का जिसके माध्यम से मैं आप सबके बीच गोचर हूं।

'श्रद्धा और सबूरी' ये बाबा के बताए दो ऐसे गूढ़ मंत्र हैं जिनका पालन करने से आप जीवन में बहुत कुछ हासिल कर सकते हैं। श्रद्धा और सबूरी को आत्मसात करके अपने लक्ष्य प्राप्ति के पथ पर अग्रसर होंगे तो आपको अपने ध्येय की अवश्य प्राप्ति होगी। बाबा कहते हैं कि तुम जो सोचते हो, जो चाहते हो वह सब मुझे ज्ञात है पर याद रखो, हर कर्म का फल अपने सही समय पर ही मिलता है। मैं तुम्हें खाली हाथ नहीं लौटाऊंगा, पर तुम्हें सबूरी की परीक्षा देनी होगी। तुम बस विश्वास बनाए रखो। कभी-कभी प्रतीक्षा भी भक्ति होती है। बाबा के इस कथन से स्पष्ट है कि यदि श्रद्धा और सबूरी मंत्र का हम संयम से पालन करें तो हमारी जीवन की नैया पार लग जाऐगी। परन्तु हम सबमें श्रद्धा और सबुरी की कमी है। अक्सर लोग सोचते हैं कि मंदिर तब जाऐंगे जब काम बन जाएगा, भण्डारा तब कराऐंगे जब मन्नत पूरी होगी या promotion होगी या मनचाहा वर मिलेगा, कम्बल तब बांटेंगे जब हमारी मनोकामना पूरी होगी। अर्थात् बाबा की भक्ति भी शर्तों पर करेंगे।

आजकल लोगों की श्रद्धा और सबूरी ऐसी है कि भगवान से जो मांगे वो उन्हें तुरंत मिल जाय वरना वो अपने भगवान भी बदल देते हैं। अगर पहले हनुमान जी की पूजा करते थे, काम नहीं बना तो किसी और भगवान के पास चले गये। यदि ईश्वर को पाना है तो ईश्वर में unconditional श्रद्धा रखो और अगर फल सालों तक भी न मिले, तो भी हर हाल में सबूरी रखो। अगर आपकी श्रद्धा और सबूरी दृढ़ है तो एच्छिक ध्येय की अवश्य प्राप्ति होगी।

-**बलराम गुप्ता,** बक्सर

देव नगर साई मंदिर में छठी पर्व

दिल्लीः प्राचीन साई धाम मंदिर देव नगर, करौल बाग में दिनांक 21 अगस्त 2025 को 'कृष्ण-भगवान' जी की छठी का पर्व धूमधाम से मनाया गया। यह पर्व मंदिर में प्रति सप्ताह मंगलवार को कीर्तन करने वाली 'महिला मण्डल' की सदस्यों द्वारा और अन्य साई भक्तों द्वारा मिलकर मनाया गया। इस आयोजन में बहुत सुन्दर कृष्ण भजनों का गुणगान किया और नृत्य पेश किये गये। यह कार्यक्रम 2-3 घंटे तक

चला जिसमें बहुत से भक्त शामिल हुए। अंत में आरती की गई। उसके बाद सभी भक्तों को प्रसाद वितरित किया गया।

-**मंजु पालीवाल**

माफी मांगने से यह साबित नहीं होता कि हम गलत हैं और दूसरा सही है, माफी का असली अर्थ है हम रिश्तों को निभाने की काबलियत उससे ज़्यादा रखते हैं।

साई ध्यान मंदिर पानीपत में जन्माष्टमी उत्सव धूमधाम से सम्पन्न

पानीपतः दिनांक 16 अगस्त 2025 को सुप्रसिद्ध साई ध्यान मंदिर, पानीपत के प्रांगण में श्री कृष्ण जन्माष्टमी उत्सव बड़े ही धूमधाम से मनाया गया। सभी भक्तों ने मंदिर में आकर श्रीकृष्ण भगवान की झांकीयों का आनन्द लिया। दिनभर मंदिर में भजनों का गुणगान चलता रहा। छोटे-छोटे बच्चों ने नृत्य नाटिका आदि की प्रस्तुति देकर कार्यक्रम में चार चांद लगा दिये। रात्रि 12 बजे भक्तगण राधा श्रीकृष्ण के नारे लगाते हुए झूम झूम कर नाचने लगे। भक्तों की खुशी का ठिकाना नहीं था। यह बहुत ही सुंदर नज़ारा था। कान्हा जी के जन्मोत्सव पर केक भी काटा गया जो भक्तों को प्रसाद स्वरूप बांटा गया। आरती के बाद सभी भक्तों ने प्रसाद लेकर अपने-अपने घरों को प्रस्थान किया। मंदिर के प्रधान श्री राजकुमार डाबर जी ने सभी भक्तों को जन्माष्टमी की शुभकामनायें दीं।,

-**डा. पंकज कुमार,** पानीपत

श्री साई सुमिरन टाइम्स की सदस्यता एवं विज्ञापन के लिए सम्पर्क करें-
Ph: 9818023070
9212395615
For Daily Shirdi Darshan, Experiences of Sai Devotees & Latest News Subscribe Youtube Channel of Shri Sai Sumiran Times

गुरूजी ने मुझे गृहस्थ जीवन वापस दिलाया

मेरा नाम ऋतु विज है। मैं दिल्ली में गीता कालोनी की रहने वाली हूं। मैं अपने घर परिवार से पिछले काफी सालों से परेशान हूँ। मेरे विवाह को 15 वर्ष हो चुके हैं। मेरा एक 13 वर्ष का बेटा भी है। मेरे पति और ससुराल वाले मुझे घर में रहने नहीं देते थे। मुझे बार बार घर से निकाल देते थे। मैं बहुत समय से परेशान थी। मैं पहले छत्तरपुर गुरूजी के आश्रम भी गई थी। मैं 10 फरवरी को छत्तरपुर गयी थी। वहाँ से आने के 2 दिन बाद अचानक मुझे श्री सुशील कुमार गुरूजी की धर्मपत्नी मिली। जबकि वह 8 साल से मेरे माताजी के साथ वाले घर में रहती थी। पिछले कुछ सालों से मेरे और मेरे पति के बीच में बहुत लड़ाई हुई है। अब वह मुझे कहते हैं कि वह अपनी माताजी के साथ रहेंगे, मेरे साथ नहीं। मैं गुरूजी के पास गुरूजी की बेटी के जन्मदिन के दिन गयी थी। वहाँ साई बाबा जी का बहुत ही सुन्दर दरबार सजा हुआ था। मैं वहाँ सारा दिन थी, मेरे मन को वहां बहुत शांति मिली। मुझे वहां बहुत अच्छा लगा। फिर मैंने गुरूजी की धर्मपत्नी को सब कुछ बताया। उन्होंने मुझे कहा कि आप परेशान ना हो, सब ठीक हो जाऐगा। 2 दिन के बाद मैंने गुरूजी को सब बताया, उन्होंने मुझे विश्वास दिलाया कि सब सही होगा, जब आप अपने घर

वापस जाओगे तो मुझे एक बेसन का लड्डू दे देना। यह बात 15 फरवरी को हुई थी। 24 फरवरी को कोर्ट से आर्डर पास हो गया कि मुझे मेरे पति और ससुराल वाले घर से नहीं निकाल सकते। गुरूजी ने मेरे लिए बहुत दिल से साई बाबा जी से अरदास लगायी थी, इसीलिए आज मेरी जीत हुई है। गुरूजी किसी भी भक्त में भेदभाव नहीं करते, वह सभी को एक सामान समझते हैं। गुरूजी को अब मैं अपना पिता मानती हूँ क्योंकि जब बात बेटी के रिश्ते की थी तो गुरूजी ने मुझे जिताया है, इसके लिए मैं उनका जितना धन्यवाद करूं उतना कम है। गुरूजी के बच्चे भी बहुत अच्छे हैं। उनके बड़े बेटे हितेश ने मुझे अपनी बहन माना और मुझे बहुत हिम्मत भी दी। उसमें मुझे अपने बेटे की झलक दिखाई देती है, जिसको मैं 3 महीने से घर से निकाल देने के कारण नहीं देख पायी थी। मैं बाबा को और गुरूजी को जितना धन्यवाद करूँ उतना कम है।

-रितु विज, गीता कॉलोनी, दिल्ली

शुकराना मेरे साई

शुकराना मेरे साई। हर पल शुकराना जहां जीने के रास्ते बंद थे। वहां साई ने मंज़िलों से मिलवाया। कभी साई, कभी कान्हा और कभी मैया के भजनों के रूप में अपना नाम जपवाया। इस महीने भी

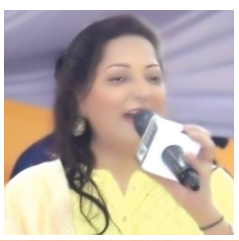

साई कृपा से किसी के घर शादी, जन्माष्टमी और कई शुभ अवसरों पर साई कृपा और माता की चौकी के रूप में अपना गुणगान करवाया। शुक्रिया साई।

-संगीता ग्रोवर

साई सागर मंदिर राजेन्द्र नगर में स्थापना दिवस

दिल्ली: दिनांक 3 अगस्त 2025 को न्यू राजेन्द्र नगर, रिज रोड स्थित साई सागर मन्दिर का 17वां स्थापना दिवस धूमधाम एवं हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। मंदिर को फूलों व लाईटों से अति सुंदर सजाया गया। इस अवसर पर शाम को साई भजन संध्या का आयोजन किया गया। बाबा की लीलाओं का गुणगान करने के लिए

सुप्रसिद्ध भजन गायक रोहित राजस्थानी जी को आमंत्रित किया गया। उन्होंने अपनी मधुर आवाज़ में अनेक भजन एवं कव्वालियां सुनाकर वहां उपस्थित भक्तों को साई की मस्ती में डूबो दिया। सांय आरती के बाद स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में बाबा के समक्ष केक भी काटा गया जो सभी भक्तों को प्रसाद स्वरूप बांटा गया। पूरा मंदिर भक्तों से खचाखच भरा था। कार्यक्रम का आयोजन

मंदिर की प्रधान श्रीमती आशा गांधी, चमन गर्ग, वेद मेहता, अनामिका शर्मा एवं समस्त दुर्गा मंदिर प्रबन्धक समिति के सदस्यों द्वारा किया गया। मंदिर की प्रधान श्रीमती आशा गांधी स्वास्थ ठीक न होने के बावजूद भी कार्यक्रम में शामिल हुई। उन्हा.ंने इस अवसर पर सभी भक्तों को अपनी शुभकामनाऐं दीं। सभी भक्तों ने भजनों के बाद स्वादिष्ट भंडारे का भी आनन्द लेकर प्रस्थान किया।

-जी.आर. नंदा

सैनी एन्क्लेव में जन्माष्टमी एवं श्री सुन्दरकांड पाठ

दिल्ली: दिनांक 15 अगस्त 2025 को श्री राधाकृष्ण मंदिर, सैनी एन्कलेव में हर वर्ष की भांति 79वां स्वतन्त्रा दिवस बड़ी धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर श्री सुन्दरकांड पाठ का आयोजन किया गया। मंदिर के पंडित श्री हीरा मणि भट्ट जी ने विधिपूर्वक पूजा अर्चना की तथा श्री राजकुमार जी राही ने अपनी मधुर वाणी से संगीतमय सुन्दरकांड का पाठ किया जिसमें बहुत से भक्तों ने हिस्सा लिया। स्वतन्त्रता दिवस समारोह के उपलक्ष्य में 55 विद्यार्थीयों और जिन बच्चों ने Drawing competition एवं Essay competion में भाग लिया उन सभी बच्चों को स्कूल बैग, स्टेशनरी देकर सम्मानित किया गया। श्रीमती भगवान देवी स्कूल (Recognised)कड़कड़डूमा के प्रधानाचार्या, टीचर ने समारोह में भाग लिया। मानव कल्याण समिति के अध्यक्ष श्री ओ.पी. कपूर जी ने बादल साहब का अभार प्रकट किया तथा बच्चों ने देशभक्ति

के गीत सुनाकर सबका मन मोह लिया। इसके बाद सभी भक्तों ने भंडारे का आनन्द लिया। दिनांक 16 अगस्त 2025 को श्री राधा कृष्ण मंदिर में श्री कृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव बड़े धूमधाम से मनाया गया। मंदिर में सुन्दर झांकिया प्रस्तुत की तथा भजन सम्राट श्री राकेश शर्मा जी ने अपनी मधुर वाणी में भगवान कृष्ण, भगवान शंकर जी एवं माता की भेंटे सुनाई। भजन सुनकर एवं सुन्दर झांकियां देखकर सभी भक्त झूमने के लिये मजबूर हो गये। रात्रि 12 बजे जन्मोत्सव के पश्चात् प्रसाद वितरण किया गया। लगभग 1000 लोगों ने प्रसाद ग्रहण किया।

-ओम प्रकाश कपूर

साई आश्रम ट्रस्ट द्वारा शिरडी में भजन एवं पालकी

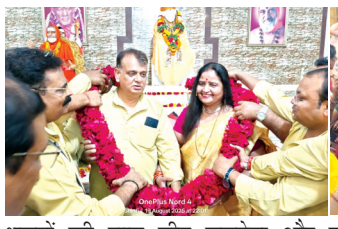

शिरडी: दिनांक 19 अगस्त 2025 को लखनऊ के साई भक्तों ने साई बाबा नारायण आश्रम में भजनों की शाम मीनू सचदेवा और पार्टी के सहयोग से शिरडी में रखी, जिसमें बाबा की स्तुति कर कहा लगन तुमसे लगा बैठे जो होगा देखा जायेगा, ओ पालन हारे, रहमत बरस रही है आदि प्रसिद्ध भजनों के साथ नृत्य करते साई भक्तों ने वातावरण आध्यात्मिक बना दिया। साई आश्रम ट्रस्ट के सहयोगियों ने संजय मिश्रा और संध्या मिश्रा जी की निस्वार्थ अनवरत सेवाओं के प्रतिफल स्वरुप गुलाब के फूलों का विशाल हार पहना कर उन्हें सम्मानित किया। इस कार्यक्रम में सर्वश्री नंदराम मारवाड़ी के परिजन बाबा के चरण लेकर आये। शिरडी संस्थान के मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री गोरक्ष गाडिकर जी ने आकर सबको आशीर्वाद दिया। निमोणकर जी ने भी आकर हमारा मान बढ़ाया। संजय मिश्रा जी ने सुझाव दिया कि पालकी यात्रा वालों को तीन नंबर गेट से सीधा प्रवेश की व्यवस्था की जाये। दिल्ली से श्री साई सुमिरन टाइम्स की संपादक सुश्री अंजु टंडन, अनुराधा सिंगला, ममता उपाध्याय, देहरादून से योगेश पंत, लखनऊ से जयशंकर वर्मा बूटी बाबा, संजय निगम, उमेश मिश्रा, जयनारायण शर्मा, अतुल मिश्रा, इन्द्रेश सिंह, मनोज मिश्रा, दानवीर सिंह, डा. हिमांशु श्रीवास्तव, शिवराम त्रिपाठी, मनमोहन तिवारी, प्रमोद जायसवाल, नीलेश सोनकर, हरीश सनवाल, आर. के. तिवारी, राजेश पटेल, अरविन्द शर्मा, ओंकार गुप्ता, अंजली निगम, प्रमिला गोस्वामी, सावित्री विश्वकर्मा, सुनिता दीक्षित, प्रेमा पांडे, दीपिका उप्रेती, अर्चना वर्मा और उनकी शिष्या कु. आंकाक्षा मिश्रा ने रास्ते भर आध्यात्मिक नृत्य किया। सम्मानित लोंगो के साथ ही श्री गोरक्ष गाडिलकर जी, निमाणकर जी व अंजु टंडन जी को शाल तथा बाबा का प्रतीक चिन्ह देकर अनुग्रहित किया गया। सभी आमंत्रित साई भक्तों को ट्रस्ट ने इस भव्य आयोजन में शामिल होने के लिए धन्यवाद दिया।

20 अगस्त को सभी भक्त प्रातः 9 बजे सप्तश्रृंगी देवी मंदिर, वणी, ज़िला नासिक में दर्शन करने गए। **-गायत्री जैसवाल**

शिरडी धाम साई मंदिर विकासपुरी में साई भजन

दिल्ली: शिरडी धाम, के जी - 1 - के जी - 2, डिस्पेंसरी रोड, विकासपुरी में शिरडी साई बाबा का मंदिर स्थित है जहां बाबा की प्रतिमा अत्यंत खूबसूरत है। इस मंदिर में हर वीरवार को साई भजन संध्या एवं पालकी का आयोजन किया जाता है। अगस्त माह में दिनांक 7 अगस्त को महेश गौर, 14 अगस्त को आकाश सहारे, 21 अगस्त को कुणाल कालरा और 28 अगस्त को विम्मी पहूजा ने भजनों का गुणगान किया। हर वीरवार को भजनों का आनन्द लेने बहुत से भक्त आते हैं और मंदिर का आंगन भक्तों से भरा रहता है। सभी भक्त भजनों का आनंद लेते हैं और बाबा का आशीर्वाद प्राप्त करते हैं। इस मंदिर में कई बच्चे भी भक्तों को तिलक लगा कर, जल एवं फूल वितरित कर अपनी सेवा देते हैं।

भजनों का आनन्द लेने के बाद सभी भक्त पंक्तिबद्ध होकर प्रसाद एवं स्वादिष्ट भंडारे का आनन्द लेते हैं। सर्वप्रथम आस पास के गरीब बच्चों को प्रसाद एवं भंडारा दिया जाता है जो अत्यन्त सराहनीय है। इस मंदिर में सभी भक्त भक्तिमय माहौल का आनन्द लेते हैं और बाबा की मौजूदगी महसूस करते हैं।

कार्यक्रम का आयोजन मंदिर की संस्थापक डॉ. मीनू महाजन एवं श्री विशाल सेठ द्वारा किया जाता है। **-कृष्णा पुरी**

शिरडी साई मन्दिर फरीदाबाद में स्वतंत्रता दिवस

फरीदाबाद: शिरडी साई मन्दिर, सैक्टर 16, फरीदाबाद में 79वां स्वतंत्रता दिवस बड़ी धूमधाम से हर साल की तरह मनाया गया। मन्दिर में चल रहे फ्री स्कूल के नन्हें बच्चों द्वारा अनेक सांस्कृतिक प्रोग्राम प्रस्तुत किए गए। कार्यक्रम की शुरुआत मन्दिर की प्रधान योगेश दीक्षित जी द्वारा ध्वजारोहण से की गयी। अन्य ट्रस्टीगण, श्री एस. पी. सिंह, श्री गगन दुआ व मंदिर कार्यकारणी सदस्य श्री पी.आर. सिक्का जी, ज्योति सिक्का जी, नरेंद्र खन्ना जी, श्रीपाल चंदीला, मैनेजर जीत सिंह जी व मन्दिर के सभी पंडित, सेवादारों ने सम्मान के साथ राष्ट्रीय गान गाया और राष्ट्रध्वज को सलामी दी। इस अवसर पर विशेष सांस्कृतिक प्रोग्राम का आयोजन किया गया जिसमें देशभक्ति गीत, नृत्य नाटिका, सोशल मीडिया का उपयोग, भगवान राम मंदिर के आगमन का विशेष कार्यक्रम आदि मन्दिर के छोटे छोटे बच्चों द्वारा प्रस्तुत किया गया। दहेज पर नाटक व गगनयान का सुन्दर चित्रण व देशभक्ति के गीतों पर सुंदर नृत्य प्रस्तुत किया गया। ये कार्यक्रम मंदिर परिसर में चल रहे फ्री कंप्यूटर शिक्षा व फ्री सिलाई कढ़ाई प्रशिक्षण के बच्चों द्वारा प्रस्तुत किया गया। प्रोग्राम के समापन पर सभी बच्चों व बाहर से आए लोगों को रिफ्रेशमेंट दी गई।

-योगेश दीक्षित, प्रधान

श्रद्धेय श्रवण जी महाराज के जन्मदिन पर भजन संध्या

दिल्ली: दिनांक 12 अगस्त 2025 को श्रद्धालय धाम मंदिर, सैक्टर-30, किशन कालोनी, रोहिणी में श्रद्धेय श्रवण जी महाराज के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में विशाल भजन संध्या का आयोजन किया गया। भजनों का गुणगान सुप्रसिद्ध भजन गायक परवीन मुदगुल जी, भुवनेश नाथनी जी और अंकित अरोड़ा जी द्वारा किया गया। सभी ने अपने-अपने अंदाज़ में कई लोकप्रिय मधुर भजन सुनाए जिससे पूरा माहौल भक्तिमय हो गया। खुशी का मौका होने के कारण उन्होंने कई ऐसे भजन सुनाए जिनपर भक्तों ने खूब नृत्य भी किया। सभी ने आचार्य श्रवण जी महाराज को जन्मदिन की बधाईयां दी और उनकी दीर्घ आयु की कामना की। मंदिर को रंगबिरंगे फूलों एवं गुब्बारों से अति सुंदर सजाया गया। पूरा मंदिर भक्तों से खचाखच भरा हुआ था। भजनों के बाद आरती की गई और उसके पश्चात् सभी को प्रसाद वितरित किया गया। सबके लिए भंडारे का प्रबन्ध भी किया गया। कार्यक्रम का आयोजन आचार्य श्रवण जी महाराज के मार्गदर्शन में भक्तों के सहयोग से किया गया। **-गायत्री सिंह**

तंवर परिवार द्वारा गाज़ियाबाद में साई भजन संध्या

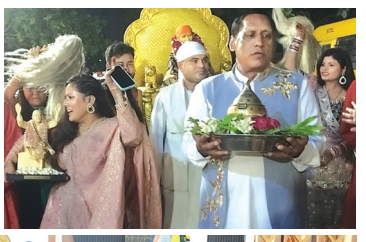

दिल्ली: दिनांक 2 अगस्त 2025 को श्री जयवीर सिंह तंवर जी ने अपनी रिटायरमैंट celebrate करने के लिए एवं बाबा का शुक्रिया करने हेतु साई भजन संध्या का आयोजन, रूद्राक्ष बैंक्वेट हॉल, शास्त्री नगर, गाज़ियाबाद में किया। 38 साल GDA में सफलतापूर्वक नौकरी करने के बाद 31 जुलाई 2025 को वो रिटायर हुए। भजन संध्या का शुभारंभ सांय 5 बजे पूजा अर्चना से किया गया। सुप्रसिद्ध भजन गायक भुवनेश नथानी जी ने अपनी मधुर आवाज़ में अनेक भजनों का गुणगान किया। वहां पर आए सभी लोगों ने उनके भजनों का खूब आनन्द लिया। कई भक्तों ने अपने मनपसंद भजनों की फरमाईश भी की जिसे भुवनेश जी ने सहजता से पूरा किया। भक्तों ने उनके भजनों पर खूब नृत्य भी किया। बाबा की पालकी भी निकाली गई जिसमें बहुत से भक्तगण नाचते गाते हुए बाबा की मस्ती में पालकी के साथ-साथ चले। भुवनेश नथानी जी के बाद तरूण सागर जी व अन्य कई गायकों ने भी भजनों की प्रस्तुति दी। इस अवसर पर साई शिशोदिया जी, मीनाक्षी शर्मा व वी.के. शर्मा जी, शिरडी से श्री सचिन ताम्बे सपरिवार, अरविंद भारद्वाज व मीना भारद्वाज व अन्य कई गणमान्य अतिथियों ने इस कार्यक्रम में शिरकत की। आरती से कार्यक्रम का समापन हुआ। उसके बाद सभी भक्तों ने स्वादिष्ट भोजन प्रसाद ग्रहण किया। कार्यक्रम का आयोजन श्रीमति व श्री जयवीर सिंह तंवर एवं निहारिका तंवर द्वारा अत्यंत सुचारू रूप से किया गया। श्रीमति व श्री जयवीर सिंह तंवर ने सबका शुक्रिया किया व सभी को तोहफा देकर विदा किया। **-ऊषा कोहली**

The Spiritual Heritage of India - Sainath and Neem Karoli Baba

With this article, we are embarking on starting a new series to learn more about the spiritual heritage of India. While studying the books on the life of Neem Karoli Baba, it was observed that some of the internationally acclaimed books have also referred to the life and sacred teachings of Shirdi Sai Baba in several places. Thus, it becomes imperative to begin the series with a detailed account about Neem Karoli Baba and learn necessary lessons for exploring similarities of his and teachings of Lord Sainath.

As is well known, India is a country of mystics and Godmen, who keep coming amidst. They make us realise that whatever we see, whatever we do and whatever is happening around us or in the world, is part of the passing show, enacted on the screen of existence. We have been sent here to find how to reach the Source of that Eternal Existence. Thus, the company of the holy men is the most important.

It is also a strange phenomenon that these holy men like Shirdi Sainath, appear to be ordinary human beings like us, but in fact they belong to the realm of extraordinary Divinity. That is why one gets deeply surprised when one, for example, gazes at the image of Neem Karoli Baba who looks like a rustic, barefoot ordinary man, wearing a simple white cotton dhoti and having a rough blanket over the upper part of his body. He appears to be an old grandfatherly figure. But we have to be cautious. Hiding behind the form of an old man is the Divine Reality personified amongst us for the well-being of the entire humankind. Even today his devotees get bewildered when they feel they have seen him here, and learn that he has simultaneously been seen somewhere else. The truth is that he was & is the Omnipresent Divinity who can be anywhere & everywhere at the same time.

As we know, Sainath identified himself with Lord Hanuman. Neem Karoli Baba is also venerated as an incarnation of Lord Hanuman by his devotees. He is always there to guide and instruct. He always keeps reminding us: "When you have started on the path to God, proceed; do not stop. He will take care of you." Now how to go forward? The question is answered by him in his inscrutable way that is described overtly and covertly in a number of highly valuable books written on the life and the time of Baba.

In this context, it is imperative to mention about those books for the benefit of all those who want to know more and more about Baba Neem Karoli in detail. These books can definitely help in finding the much desired answers for the questions that are related to our day to day mundane issues as well as the concise and precise advice on our spiritual growth. These include: "Be Here Now," and "Miracle of Love," by Ram Dass; "By His Grace" and "The Near and the Dear" by Dada Mukherjee; "The Divine Reality" by Ravi Prakash Pande "Rajida"; "Love All" and "Whisper of the Heart" by Parvati Markus; "Chants of A Lifetime" by Krishna Das; "I and my Father are One" by Rabboo Joshi; "Journey: Maharaj to Ma" by Manjul Joshi; "Sri Siddhi Ma" by Jaya Pradada; and "Neem Karoli Baba" by Vishnu Ratna, among others.

The life span of Neem Karoli Baba was approximately from 1900 to 11 September 1973. He was born around 1900 in Akbarpur village, Firozabad district, Uttar Pradesh, India. While his physical body is no longer with us, his divine spirit continues to guide and bless all who seek refuge in him even today. He was known as Lakshman Narayan Sharma in his early years and was married at age 11. He left his home to become a wandering sadhu, later returning to his family before eventually leaving again to pursue his spiritual path.

Baba (Neem Karoli) attained Mahasamadhi at the age of 73 on 11 September 1973 in Vrindavan. He is revered as a Sadguru and an incarnation of Lord Hanuman. He is well known for his simple but profound teachings of love, serve, feed and respect all and always remember God. Lord Hanuman temples built by him, like in Kainchi Dham, Hanumangarh, Bhumiadhar, Kalighat, Pithoragarh, Lucknow, Shimla, Vrindavan, Delhi, Dharchula, Veerapuram, Jipti, Kotmanya, Rishikesh, Badrinath, Taos, USA, Germany etc. continue to attract millions of devotees from all over the world. The prominent foreign devotees that have visited Baba during his lifetime and afterwards included Ram Dass (Richard Alpert), Larry Brilliant, Larry Page, Jeffrey Skoll, Steve Jobs, Mark Zuckerberg, among several other important persons.

In order to enable us to understand the divine nature of Neem Karoli Baba "Rajida" stated in his book: "Baba's mystical leela inspires us to discover the essence of truth and often brings about a spontaneous change in our perception of this world."

"Sri Baba Neem Karoli Maharaj was the very embodiment of grace and compassion. He showered affection, fed people and made them laugh. He loved every one without discrimination and could not bear to see anyone in distress. He was so affable that each of his devotees felt that Baba had special affection for them and believed him to be their own. Even simple words spoken by him always brought good, just as seeds, in whatever way they are sown, always sprout upright. He was like a kalpataru (a celestial wish-fulfilling tree) in satisfying the beneficial wishes of people."

For understanding the process of continuity of the strong spiritual legacy of Baba, it is imperative to study in depth the book, mentioned above, by Jaya Pradada that records in detail how the revered Sri Sidhi Ma, "the beacon of light" took forward with faith dedication and devotion the spiritual legacy of Baba, with the consistence support of Sri Jivanti Mata ji. Meanwhile, let's benefit from glimpses of a few of the sacred teachings of Neem Karoli Baba from the highly acclaimed book, "The Divine Reality" by "Rajida". It quotes: "It is not necessary to seek God so long as the parents are alive. The worship of living parents is difficult, but it is the best sadhana (spiritual practice)."

"All religions are basically the same and they lead to God. All human beings are equal. The blood that circulates in the body through the heart is the same in all."

"God resides within every heart."

"God exists in all aspects of nature, his creation. He is everywhere so is never out of our sight. The fault is ours if we are not able to see him or do not earnestly try to see him. We must not limit our vision. The narrow tendencies of the mind keep us so entangled in mundane activities that we are not aware of him. Our impure thoughts prevent us from achieving peace of mind and divine love.'

"A pious life, bhajan, and spiritual practice are essential. Go on reciting Ram and one day the true' call of Ram will come out and you will be redeemed."

"Go on worshipping God in thought, word and action. Then you will be able to perform nishkama karma (deeds performed without any attachment or desire). The ability of nishkama karma can be achieved only by his grace and cannot be acquired by any other means. None can claim a right to his grace. It is up to him to give it, to refuse it. or to take it away."

"O Lord of the Helpless! The strings of my destiny are in thy hand." "Like a fish in deep water, everyone is secure and happy under the protection of God."

"Have trust in God and the most difficult tasks become easy. For success, hard work alone is not enough. God's grace is essential."

Neem Karoli Baba always urged the devotees to recite Sri Hanuman Chalisa and Sundarkand from Sri Ramacharitmanas. Along with these, he insisted on keep chanting with love and attention, "Jai Sita Ram Sita Ram Sita Ram Jai Sita Ram." As "Rajia" underlined, the Baba's "divine ways are so exceedingly impressive and attractive that contemplation of them encourages us to seek improvement of the inner self. As a consequence of this inner cleaning, people start experiencing Baba's grace and sometimes see him in dreams as well as in waking reality. Thus, by thoroughly contemplating and reflecting on his character and divine leela, it is natural that there will be changes in the thoughts and tendencies of aspirants." Sai Baba also urged to chant Ram Naam. Before ending, we bow down to Lord Sainath for enabling us to learn from the sacred teachings of Baba Neem Karoli. -**Tish Malhotra**

Sai Devotee Offers Golden Bracelet To Shri Sai Baba

Shirdi: Karnataka based Sai devotee Shri Vyankappa Ganapati Ghodke offered a gold bracelet weighing 56.710 grams worth Rs.4,76,364/- at the lotus feet of Shri Sai Baba and later handed them over to Smt. Mangala Varade, Chief Accountant of Shri Sai Baba Sansthan. Smt. Mangala Varade, felicitated donor Sai devotees on behalf of Shri Sai Baba Sansthan.

शिरडी में घर जैसे खाने का आनन्द लेने के लिए आऐं
Hotel
Sai Krishna
One Minute Walking Distance from Dwarkamai
& For Room Booking in
Hotel Sai Nityanand
Contact:
Monu Agrawal
Ph: 8171521277, 9373447866

Hotel J.K. Palace

Nagar-Manmad Highway,
Near Bhakta Niwas, Shirdi
Ph.(02423) 255155
7218181876, 9511111009
Visit us: www.hoteljkpalace.com
Email: jkpalaceshirdi@yahoo.com

श्रद्धा सबूरी
साई की रसोई
शिरडी से जाने वाले भक्तों के लिए घर का बना शुद्ध व स्वादिष्ट भोजन पैक कराने के लिए सम्पर्क करें
रश्मि वाही
Ph 8587058762

Shri Krishna Janmashtami Celebrated By Shri Sai Baba Sansthan Shirdi

Shirdi: On 15th August 2025, on the occasion of Shri Krishna Janmashtami, Shri Saibaba Sansthan Trust, Shirdi organized Shri Gokulashtami Utsav at Shri Saibaba Samadhi Mandir from 10:00 PM to 12:00 PM. H.B.P.S. Smita Ajegaonkar performed Shri Krishna Janmashtami Kirtan. On this occasion, Sansthan Chief Executive Officer Shri Goraksh Gadilkar, Deputy Chief Executive Officer Shri Bhimraj Darade, Temple Head Shri Vishnu

Thorat, Priests, Sansthan Employees and Sai devotees were present. After the completion of Shri Krishna Janmotsav, at midnight 12:00 AM, Shri Sai Baba's Shej Aarti was held inside Samadhi Mandir. On 16th August 2025 dahihandi was broken at the Samadhi Mandir by Shri Pareshwar Babasaheb Kote, a descendant of Shri Saibaba's contemporary devotee Late Shri Tatya Kote Patil. CEO Shri Goraksh Gadilkar, Temple Head Shri Vishnu Thorat, Temple Priests, Employees, Shirdi Villagers and Sai devotees were present in large numbers on this occasion. At 9:00 pm, Chairot procession was taken throughout Shirdi Town on Shri Gokulashtami festival. Entire festival organized by Shirdi Sai Baba Sansthan, was celebrated in a joyful and devotional atmosphere. **-H.P. Sharma**

Shri Sai Baba Sansthan Security Officer Offers Golden Trident to Sai Baba

Shirdi: Security Officer of Shri Sai Baba Sansthan Shri Annasaheb Bansi Pardeshi, donated a golden trident weighing 36.200 grams worth Rs.3,31,845 at the lotus feet of Shri Sai Baba as a mark of gratitude as both his son and his daughter got jobs in the government service. Deputy Chief Executive Officer of Shirdi Saibaba Sanathan Shri Bhimraj Darade felicitated him on behalf of Shri Sai Baba Sansthan. He also felicitated his son and his daughter.

-Nilesh Sanklecha

Shirdi Sansthan Celebrated Raksha Bandhan

Shirdi: On the auspicious occasion of Raksha Bandhan and Narali Poornima, Shri Sai Baba Sansthan Chief Executive Officer Shri Goraksh Gadilkar and his wife Smt. Vandana Gadilkar performed ritualistic worship of Shri Sai Baba at Samadhi Mandir and offered Special Rakhi to Shri Sai Baba.

A grand Rakhi based on "Operation Sindoor" theme weighing 35 kgs, & 30 feet long and 6 feet wide was offered by a Sai devotee from Bilaspur, Chattisgarh at the lotus feet of Shri Sai Baba on the occasion. This unique Rakhi was created by renowned artist Shri Dilip Diwakar Patrikar in just 15 days, and is made with the delicate use of attractive decorative materials like fiber ply, pearls, zari, buti, etc. This attractive Rakhi was duly worshipped on behalf of Shri Sai Baba Sansthan by Chief Executive Officer Shri Goraksh Gadilkar and his wife Smt. Vandana Gadilkar. On this occasion, temple department head Shri Vishnu Thorat, temple priests and Sansthan employees were also present. **- H.P. Sharma**

Shree Sainath Gnyan Mandir Bhatrenahalli Bangalore

Bangalore: Shree Sainatha Gnyana Mandira, Mallur, Bhatrenahalli, Vijaypura, celebrated Purnima on 14th August 2025. Special Puja was organised & Surdarshan Homa, Satyanarayanswamy puja was performed. After attending this puja temple's lady devotees tied Rakhi to Shri Sai Baba. On 15th August, Independence Day was celebrated in the temple. In the morning, after kakar arti, Manglasnan, Alankar, Maha mangal arti, at 9 AM Flag hoisting was done. A Social worker from Devanahalli, Mr. Nagraj came as Chief Guest. Mr. Muttur Venketesh Swamy and Venketaramanna, Kampini Devraj Junior Gansala, Sita Ramana, Gopalanna, all seva kartas and many devotees participated in this program. Sweets and prasadam was distributed to all.

Independence Day was celebrated in the temple to make people realise the importance of Independence. 200 years ago our country was slave to Britishers. When leadership is weak in ruling then external powers rule on us. It is our responsibility to keep unity among people and to bring awareness regarding importance of Independence. The entire program was organised beautifully by members of temple committee.

-M. Narayanaswamy

Pujyashri Narasimha Swamiji - Ramanujacharya analogy (Part-1)

This article is a humble submission to exhibit the similarities between Pujyashri Narasimha Swamiji & Ramanujacharya in rendering their services to the Supreme God.

Whenever the Lord incarnates on earth the celestial beings, the Rishis do come along with Him for they cannot bear the separation from Him and fulfill their desire to serve him on earth as well. As the Supreme Lord incarnated as Krishna the Gopikas too descended on earth. Similarly, When the Trimurti incarnated as Shri Sai Baba every ardent devotee that served Him at Shirdi were none but the Rishis that came to earth along with Him. In this regard Nanasaheb Chandorkar was instrumental in bringing many devotees to Shri Sai Baba's darshan, then Dasganu Maharaj, he is ranked first among Shri Sai Baba's Apostles, by his kirtans throughout Maharashtra he brought thousands to Shri Sai Baba's darshan. Shri Sainatha Stavana Manjari is a masterpiece from Dasganu Maharaj, also there are stanzas in Shri Sai Baba Arti songs that were compiled by Dasganu Maharaj such as: *Shridi Maajhe Pandharpura, Sai Raham Nazar Karnaa.*

He also incorporated 7 chapters in his works: Santakathamrita, Arvachina Bhaktalilamrita and Bhakta Saramrita that embodied Shirdi Sai Baba's teaching and miracles.

Devotees, We are greatly indebted to Hemadpanthji for authoring the biography of Shri Sai Baba -the holy book Shri Sai Satcharitra. Balakrishna Vishwanath Deo is another enlightened devotee, his contributions are remarkable. B.V. Dev wrote many articles under the pen name "Babache Bal" i.e. "child of Baba." He composed the arati song 'Ruso mama priyambikaa and wrote the index & 53rd chapter of Shri Sai Satcharitra.

We Sai devotees must be grateful to Shriman Buti for giving us the holy Samadhi shrine. Ramachandra Dada Patil must be paid due respects for successfully convincing the Shirdi villagers and honoring the last words of Shri Sai Maharaj by preserving the holy remains of Shri Sai Maharaj inside the samadhi mandir. Kakasaheb Dixit's Guru bhakti is mind boggling, Baiyja Ma's love for Shri Sai Baba is incredible. Tatya's association with Shri Sai Baba is phenomenal. Raghuvir Bhaskar Purandare's unswerving faith exhibits the quality of a first-class devotee. Radhakrishna mai is an epitome of prema bhakti, Her services to the Guru are unparallel, Mother wanted Shri Sai Baba to have all the grandeur of Vittal, the Lord of Pandharpur and Balaji at Tirupathi, organized Chavadi procession, made Shirdi Sai Sansthan into what it is today. The friendship of Shri Sai Baba and Shyama is enthralling, the association of Tarkhad family leaves me in tears of joy. Lakshmibhai Shinde exhibited unconditional love for the Guru. Sivanesan Swamiji was another greatest apostle who found his light in Shri Sai, has rendered j unparallel service encouraging devotees to do pradakshina, taking care of Dwarakamai and advocated Sai naamjapa Aum Sai Shri Sai, Jai Jai Sai. Upasini Maharaj- was transformed into a wonderful saint with vast miraculous powers by the direct guidance of Shri Sai Maharaj. Shivamma Tayee is another dedicated devotee who got mantra upadesh from Shri Sai Baba and has witnessed the Khanda yoga, Dhouti yoga (refer SSC) performed by Him. The list is never ending. Today inside Shirdi Sai Baba mandir we see 53 portraits of mahabhaktas being placed, but who brought these devotees to the limelight. The experiences bestowed by Shri Sai Baba upon all His children are extraordinary and amazing. Reading their life and experiences have transformed countless people as devotees of Shri Sai Baba. How did we get to read those divine plays of Shri Sai Baba? Who was instrumental in giving an exhaustive note of their experiences? Let's ponder on that deeply now.

What happened after Shri Sai Baba's mahasamadhi, is really shocking. Many ardent devotees who were stationed at Shirdi also left the holy abode. Few thought that Shri Sai Baba is no longer in His mortal body, so His Supreme powers have also gone. Some of them left Shirdi as it was tormenting to live in a place where the physical presence of their beloved and most revered God that lived on earth, Shri Sai Baba was missing. For they sought refuge at His feet for all trivial and significant matters concerning both spiritual and worldly. His Darbar was always open to his bhaktas. Their welfare was assured, their doubts, longing, problems, turbulence were taken care of. He was their Father, Mother, Friend, Philosopher, guide and above all the God they worshipped. Dawn to Dusk they involuntarily engaged themselves with Him. He was their only solace. Those devotees couldn't imagine residing in a place where they thought they were deprived of all joy, protection, guidance, welfare and most of all the divine form of the Holy spirit Shri Sai Baba.

Even Sagun Meru Naik had to close his restaurant temporarily as the number of visitors coming to Shirdi has reduced drastically. At this juncture, i.e. 18 years after

His mahasamadhi, Shri Sai Baba brought His crown jewel Pujyashri Narasimha Swamiji to his abode, yes, Pujyashri Narasimha Swamiji reached Shirdi after 11 years of wandering. In these 11 years he had met many Self-realized masters, visited temples and tombs, but His quest for guru came to an end only in Shirdi when he met Sai Baba face to face. Shri Sai Baba transformed Narasimha Swamiji into Sai Swaroopi Narasimha Swamiji. This change happened when Narasimha Swamiji was 63 years old. From that moment Narasimha Swamiji's only objective was to spread the glory of Shri Sai Maharaj outside Shirdi and all over India. Narasimha Swamiji has drunk the Sai nectar, how can he hold it to himself, he says, "At Shirdi I was given more than I could take.", it is inevitable to compare Narasimha Swamiji to Ramanujacharya at this point. Ramanujar was turned down 17 times by his guru Thirukkottiyur Nambi and finally He was awarded the divine mysteries on the condition that he would not share it with unqualified persons, and if He broke the promise He would go to hell. But as soon as the divine benediction was granted the next moment Ramanujacharya went to the temple tower inviting all his disciples and pronounced the holy truth. Just like Shri Sai Baba exhibited His apostle Narasimha Swamiji to this world after 18 years of His mahasamadhi, Ramanujar was initiated by His guru during his 18th visit to his place. Number 18 has a deeper connotation and is considered very auspicious in spiritual realm.

Narasimha Swamiji did not find an exhaustive biography of Shri Sai Baba in English hence he decided to meet the devotees closely associated with Shri Sai Maharaj. So, he went and met M.B. Rege, Rao Bhahadur M.W. Pradhan and they extended their support to him and introduced Swamiji to few other devotees. Swamiji travelled far and wide to collect the experiences of the devotees and to talk about the greatness of His Guru the Trimurti avatar Shri Sai Baba. He compiled the experiences of devotees and published the Devotees Experiences of Shri Sai Baba which was a monumental publication that carried the miracles, teachings and experiences of the devotees. Other books authored by Swamiji were (1) Introduction to Sai Baba (2) Who is Sai Baba (3) Wondrous Saint (4) Charters and Sayings (5) Gospel of Shri Sai Baba (6) Glimpses of Sai Baba (7) Life of Sai Baba (a comprehensive biography of Shirdi Sai Baba) another masterpiece. He went on Sai prachar to every town, village and home and became a Sai Pracharak.

Similarly, Ramanujar travelled to every corner of the country to propagate the path of devotion. He also visited all the Vaishnavite shrines in India. He wrote three books: Vedanta Sara, Vedanta Sangraha and Vedanta Deepa. He preached Visishtadvaita philosophy and wrote many books. Thousands of people flocked to him every day to hear his lectures.

Narasimha Swamiji founded the All-India Sai Samaj; He organized All India Sai devotees' convention in the year 1946 and other conventions followed in the subsequent years in other cities. Das Ganu Maharaj, Marthand Mhalsapathy and Swami Keshavaiah participated actively in the convention. Dasganu Maharaj also participated in the one held at Coimbatore, T.N. in the year 1946.

For the next 20 years Narasimha Swamiji's goal was to spread the glory of His Guru in all means possible like writing books, meetings, public lectures, printing calendars, making finger rings, Sai padukas, lockets and buttons with Shri Sai Baba's image engraved on them. Wrote Sai Harikathas, conducted regular satsangs. Now thousands have been drawn to Shri Sai Baba's path all over India, Narasimha Swamiji felt a need to formulate puja vidhi to guide the devotees to perform their puja at home to Shri Sai Baba. He wrote Sri Sainath Pooja Vidhi and brought a systematic way of worship at Shirdi. He authored Shri Sai Ashtotharam, Shri Sai Sahasranamavali, and a garland of hymns titled Shri Sainatha Mananam which would enable a devotee to have instant contemplation on Shri Sai Baba. Narasimha Swamiji was also a member of the Samsthan committee. He built a Sai temple at Mylapore Chennai and the kumbabhishekam was held in the year 1953. Narasimha Swamiji was the helmsman of the message of Shri Sai Baba, and the Sai movement grew in leaps and bounds. By 1946-sixty-five Upasamajams spread all over India and affiliated to All India Samaj was in operation. Fifteen Shirdi Sai Baba temples were built in various towns. Swamiji was immensely happy to see the growth and development of Sai movement and he attained mahasamadhi in the year 1956. Before he passed away, he entrusted the leadership of Sai movement to his most efficient, worthy and dynamic disciple Sri Radhakrishna Swamiji. Who also was the member of Shirdi samsthan and evolved into Saipadananda Radhakrishna Swamiji. Prior to attaining mahasamadhi Narasimha Swamiji transformed all his spiritual powers into Radhakrishna Swamiji. Justice Rege when he visited the All-India Headquarters at Chennai said he could find Dwarakamai in Madras and declared that as long as Shri Sai Baba will be worshipped so long Narasimha Swamiji's name will be remembered.

Similarly, Ramanujar stayed for nearly 20 years in the vicinity of Mysore to set up a strong Vaishnavite community. His followers numbered several thousands. He cleansed the temples and established the rituals to be observed in them. He visited Tirupathi Venkateshwara temple, solved the dispute that was prevailing between the Saivites and Vaishnavites. He held a congregation of 700 Sannyasins, 74 dignitaries who held special offices of ministry and thousands of holy men and women who revered him as God. Ramanujar's fame had spread far and wide. He constructed a few more Vishnu temples in and around Mysore. He wrote commentary on the Brahma Sutras, and it was known as Sri Bhashya. He constructed many more temples and mutts and transformed many thousands to Vishistadvaita philosophy. He is also known for His compassion and social equality. Ramanujacharya attained mahasamadhi at the age of 120 years.

Narasimha Swamiji must be considered as the father of all Sai literature, he did not reserve any copyrights for His works and so all the Sai philosophers and authors could use the information as required. If the book Devotees Experiences was not written we wouldn't be able to know how every devotee was drawn to Shri Sai, what their experiences were and how they evolved. These are very important for aspirants to inculcate unswerving faith and patience upon Shri Sai Baba and to contemplate His teachings and divine sport.

-Sai Asha

to be continued….

https://www.youtube.com/@saiasha1825

Sri Sai Spiritual Centre, Bengaluru

A Legacy of Seva and Spirituality

Sri Sai Spiritual Centre was founded on the 4th of April, 1954, by **H.H. Sri Radhakrishna Swamiji.**

The Life and Legacy of H.H. Radhakrishna Swamiji

H.H. Radhakrishna Swamiji was born into a prosperous family in the village of Poyyamani, Karur District, Tamil Nadu. From a young age, he displayed a deep spiritual inclination. He once shared an extraordinary childhood experience — at the tender age of eight, Goddess Kamakshi appeared to him in a dream, awakened him, led him to the terrace, and played with him. When the child grew tired, the Goddess lovingly returned him to his bed.

As he grew older, Swamiji moved to Ooty to stay with his elder brother and worked as a steward at the Ooty Race Club. It was during this time that his life took a profound turn after meeting H.H. Narasimha Swamiji. Drawn by his quest to understand the meaning of his own name, Radhakrishna traveled to Chennai to meet the revered saint at the All India Sai Samaj in Mylapore. Under Narasimha Swamiji's guidance, he was brought into the Sai fold, marking the beginning of his spiritual journey.

Recognizing his devotion, Narasimha Swamiji gave him the title "Saipadananda" and sent him to Bengaluru to propagate Sai Baba's teachings.

Arrival in Bengaluru

In the late 1940s, Radhakrishna Swamiji settled in a modest room in N.R. Colony, South Bangalore. With relentless satsangs and continuous chanting of the Vishnu Sahasranama, his following grew steadily. Among his early supporters was Sri V.S. Shastry, who facilitated a land donation from Sri Domlur Krishnamurthy — inspired by a divine vision to offer the land for a Shirdi Sai Temple. After much persuasion, Swamiji humbly accepted the land, where today stands a grand Sai Temple, a beacon of faith for thousands.
The Mandir flourished under Swamiji's guidance, attracting devotees from all walks of life — including prominent businessmen, high-profile politicians, and even the President and Vice President of India. Despite such influence, Swamiji never sought favors for the Temple, remaining steadfast in his mission to serve selflessly.

Notably, Swamiji also served as a Trustee on the Shirdi Sai Sansthan Board, contributing significantly to Sai Baba's legacy. He frequently traveled to Mumbai for board meetings, ensuring the sanctity and service spirit of Shirdi were upheld.

Having dedicated his life to Sai Baba's message, Swamiji chose to leave his physical body on January 14th, 1980, during the auspicious Uttarayana Punyakala — a testament to his divine journey.

Continuing the Legacy

For the past 45 years, the Mandir has steadfastly followed Swamiji's path of devotion and service. In 2004, a second Shirdi Sai Baba Temple was established at Vasantapura, off Kanakapura Road, expanding the reach of his mission.

In 2019, honoring Swamiji's ancestral roots, his family dedicated their ancestral home in Poyyamani, Karur District, transforming it into a magnificent Shirdi Sai Baba Temple — a sacred tribute to his birthplace.

(To be continued...)

Sri Sai Spiritual Centre
1st Block, Thyagarajanagar, Bengaluru - 28. Tel. +91 80 26766922.
www.srisaispiritualcentre.org

Contributions are exempted under 80G of Income Tax Act & Eligible for CSR Grant

Our Associates

Agra - Sandhya Gupta
Aligarh- Seema Gupta
Ashok Saxena, D.P. Agarwal
Ambala - Ashok Puri
Amritsar- Amandeep
Ahmedabad - Arjun Vaghela
Aurangabad-Ashok Bhanwar Patil
Assam - Bidyut Sarma
Badayun - Varinder Adhlakha
Bhilwada - Kailash Rawat
Banas - P.K.Paliwal
Bareilly - Kaushik Tandon
Sapna Santoria, Prathmesh Gupta
Bhopal
Ramesh Bagre, Surendra Patel
Bangalore-Chandrakant Jadhav
Bathinda-Govind Maheshwari
Bikaner- Deepak Sukhija
Surender Yadav, Pt. Sadhu Ji
Purnima Tankha,
Bihar- Balram Gupta
Bokaro - Hari Prakash
Bhagalpur - Anuj Singh
Bhuvneshwar (Odisha)
Pabitra Mohan Samal
Chandigarh - Puneet Verma
Chennai - M. Ganeson
Chattisgarh- Nikhil Shivhare
Dehradun - H.K. Petwal,
Akshat Nanglia, Mala Rao
Dhanaula - Pradeep Mittal
Faridabad - Nisha Chopra
Ashok Subromanium,
Firozpur - P.C. Jain
Goa - Raju
Gurgaon - Bhim Anand,
Chander Nagpal
Ghaziabad - Bhavna Acharya
Usha Kohli, Dinesh Mathur
Gujarat - Paresh Patel
Gwalior - Usha Arora
Haridwar - Harish Santwani
Hissar - Yogesh Sharma
Hyderabad - Saurabh Soni,
T.R. Madhwan
Indore- Dr. R. Maheshwari
Jalandhar - Baba Lal Sai
Jabalpur
Chandra Shekhar Dave
Jagraon - Naveen Khanna
Jaipur - Puneet Bhatnagar
Kolkata - Sushila Agarwal,
D. Goswami
Kapurthala - Vinay Ghai
Korba - T.P. Srivastava
Kurukshetra - Yash Arora
Pradeep Kr. Goyal
Kaithal - Naveen Malhotra
Lucknow - Gayatri Jaiswal,
Sanjay Mishra, Rajiv Mohan
Ludhiana - Umesh Bagga,
Rajender Goyal, Sai Puja,
Sanjiv Arora
Mandi Govind Garh
Shunti Bhaji, Rajiv Kapoor
Mawana - Yogesh Sehgal
Meethapur - Shrigopal Verma
Meerut - Kamla Verma
Mumbai-Anupama Deshpandey
Kirti Anurag, Sunil Thakur
Moradabad - Ashok Kapur
Mussoorie- R.S. Murthy,
Surinder Singhal
Nagpur - Pankaj Mahajan,
Srinivasan, Narendra Nashirkar
Noida - Amit Manchanda
K.M. Mathur, Kanchan Mehra,
Panipat- Raj Kumar Dabar,
Sanjay Rajpal
Patiala - P.D.Gupta,
Dr. Harinder Koushal
Panchkula - Anil Thaper
Palampur - Jeewan Sandel
Parwanoo - Satish Berry,
Chand Kamal Sharma
Pune - Bablu Duggal
Sapna Lalchandani
Port Blair
J.Venkataramana, Ghanshyam
Pundri - Bunty Grover
Patna - Anil Kumar Gautam
Ranchi - Deepak Kumar Soni
Rewari- Rohit Batra
Rishikesh- S.P. Agarwal,
Ashok Thapa
Raigarh - Narinder Juneja
Roorkee - Ram Arya
Rudrapur-Naresh Upadhyaye
Shirdi - Sandeep Sonawane
Nilesh Sanklecha, H.P. Sharma
Sonepat- Rahul Grover
Sangrur - Dharminder Bama,
Sirsa-Komal Bahiya, Bunty Madan
Surat - Sonu Chopra
Udaipur - Dilip Vyas
Ujjain - Ashok Acharya
Vidisha - Sunil Khatri
Zeera - Saranjeet Kaur

साई धाम फरीदाबाद में धूमधाम से मनाया 79वाँ स्वतन्त्रता दिवस

फरीदाबाद: दिनांक 15 अगस्त 2025 को सेक्टर 86 स्थित शिरडी साई बाबा स्कूल में 79वाँ स्वतंत्रता दिवस बड़े ही हर्षोल्लास के साथ रोटरी क्लब फरीदाबाद सेंट्रल के सहयोग से मनाया गया। कार्यक्रम में सर्वप्रथम रोटरी क्लब फरीदाबाद सेंट्रल के प्रेसिडेन्ड रोटेरियन नरेश वर्मा व अन्य पदाधिकारियों के साथ साथ शिरडी साई बाबा स्कूल की प्रधानाचार्या डॉ. बीनू शर्मा, साई धाम एडवाइज़री बोर्ड मेम्बर्स, शिक्षक व छात्रों द्वारा ध्याजारोहण कर राष्ट्रगान किया गया। उसके बाद शिरडी साई बाबा स्कूल के बच्चों ने विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये। देश भक्ति से ओत प्रोत कार्यक्रमों ने सभी का मन मोह लिया। साई धाम के संस्थापक अध्यक्ष डॉ. मोतीलाल गुप्ता जी ने वीडियो संदेश में देश को स्वतंत्रता दिवस की शुभकामनायें देते हुए कहा कि हमें अधिक से अधिक संख्या में पेड़ लगाने चाहिए ताकि हम अपनी आने वाली पीढ़ी को स्वच्छ हवा और शुद्ध वातावरण दे पाऐं। रोटरी क्लब फरीदाबाद सेंट्रल के प्रेसिडेन्ड रोटेरियन नरेश वर्मा ने साई धाम द्वारा किये जा रहे कार्यों की प्रशंसा करते हुए कहा कि हमें डॉ मोतीलाल गुप्ता के जीवन से प्रेरणा लेनी चाहिए साथ ही हमें बढ़-चढ़ कर साई धाम के सामाजिक कार्यों में सहयोग करना चाहिए। शिरडी साई बाबा स्कूल के बच्चों की प्रशंसा करते हुए उन्होंने सभी छात्रों को भविष्य के लिए शुभकामनाऐं दी। कार्यक्रम के अंत में प्रधानाचार्या डॉ. बीनू शर्मा ने सभी अतिथियों का धन्यवाद देते हुए आज़ादी की शुभकामनायें दी। कार्यक्रम का संचालन आज़ाद शिवम् दीक्षित व दो छात्रों, नोविता और हिमांशी ने किया। कार्यक्रम में ओ.पी. गुलाटी, जे. एस. गुप्ता, कृष्ण कौशिक, योगराज गुप्ता, अनिल राहत, नीरू राहत, प्रिंस गुलाटी, रेणू गुलाटी, प्रेम अमर, अनीता अमर, संदीप सिंघल, मनोहर पुनयानी, यू.एस. अग्रवाल, अमित आर्या, के.ए. पिल्ले, विकास मल्होत्रा आदि शामिल हुए।

श्री साई सागर मंदिर इंदौर में जन्माष्टमी महोत्सव

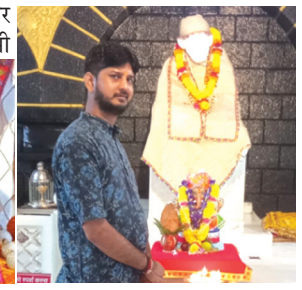

इंदौर: दिनांक 16 अगस्त 2025 को श्री साई सागर मंदिर, गुलाब बाग कॉलोनी, इंदौर में जन्माष्टमी कार्यक्रम धूमधाम से मनाया गया। मंदिर को फूलों से अति सुंदर सजाया गया। मंदिर में रात्रि 12 बजे भगवान कृष्ण का जन्म पंचामृत से स्नान करवाया गया। तत्पश्चात् श्रीकृष्ण भगवान की पूजा पाठ किया गया। तत्पश्चात् मुख्य पुजारी पंडित कृष्णकांत शर्मा जी एवं पंडित दुबे जी के सान्निध्य में बाबा का अभिषेक व पूजा अर्चना की गई। अंत में मंदिर के संस्थापक डॉ. राजेश पी. माहेश्वरी व डॉ. जीवन मोदी ने वहां उपस्थित सभी भक्तों का आभार व्यक्त किया। **-जीवन मोदी**

सैनी एन्कलेव में श्री श्याम संकीर्तन

दिल्ली: दिनांक 3 अगस्त 2025 को श्री राधाकृष्ण मंदिर सैनी एन्कलेव में श्री कृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव के उपलक्ष्य में 26वां श्री श्याम संकीर्तन, सावन झूला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर भजन गायक श्री दीपक सरगम जी एवं श्री चमन लाल जी गर्ग ने अपनी मधुर वाणी से भजन प्रस्तुत किये। बहुत से भक्तों ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया श्री राधा कृष्ण मंदिर सैनी एन्कलेव में पहला श्री श्याम बाबा जी का मासिक संकीर्तन जुलाई माह

के पहले रविवार को किया गया तभी से हर महीने के पहले रविवार को मासिक संकीर्तन किया जाता है। सांय 5 बजे श्री दीपक सरगम जी ने श्याम बाबा, श्री कृष्ण भगवान जी के भजन प्रस्तुत किये उसके बाद श्री चमन लाल जी गर्ग के भजनों को सुनकर भक्तगण नाचने को मजबूर हो गये। भजनों के बाद भक्तों ने स्वादिष्ट भंडारे का आनन्द लिया। **-ओम प्रकाश कपूर**

ज़ीरा में जन्माष्टमी महोत्सव

ज़ीरा: श्री शिरडी साई वैलफेयर सोसाइटी ज़ीरा द्वारा 16 अगस्त को साई धाम, मल्लोके रोड, ज़ीरा में जन्माष्टमी महोत्सव बहुत खुशी और उत्साह के साथ मनाया गया। लड्डू गोपाल जी का आसन बिछाकर उनका बहुत ही सुन्दर श्रृंगार किया गया। मंदिर की बहुत ही सुंदर सजावट की गई। बाबा जी के आसन सहित सभी दीवारें रंग बिरंगे फूलों और गुब्बारों से सजी हुई थी। बच्चों को राधा कृष्ण जी की वेशभूषा में तैयार किया गया। अगमवीर सिंह धुना, सेजल अरोड़ा और हिताक्षी शर्मा राधा कृष्ण बनकर आए। सबसे छोटा और बहुत ही प्यारा कृष्ण नाज़नीन जुनेजा तो फूलों से सजे हुए झूले में बहुत ही प्यारा लग रहा था। गणेश वंदना करके कीर्तन शुरू किया गया। कीर्तन में साई परिवार के सदस्य, शरण दीदी, सुमन सदियोड़ा, रेणु धुन्ना, सिंपल अरोड़ा, सोनिया अरोड़ा, मधु शर्मा, सोनिया कोछड़, किरण चोपड़ा, किरण जुनेजा, रूपम जुनेजा, वंदना बांसल और कमलेश राणा ने साई जी का और कृष्ण जी के मधुर भजनों का गुणगान किया। उनके भजनों पर सभी भक्तों ने नाचते झूमते हुए आनन्द लिया। आरती के बाद सारी संगत को माखन मिश्री का प्रसाद बांटा गया। कई भक्त भी अपनी श्रद्धा अनुसार स्वादिष्ट व्यंजन लेकर आए। राधा कृष्ण बने बच्चों को साई दीदी के द्वारा उपहार दिये तो बच्चे बहुत ही खुश हुए। साई महिला परिवार के सभी सदस्यों का स्वागत किया गया। रेणु धुना की तरफ से सभी का धन्यवाद किया गया।

-रेणु धुना, ज़ीरा (पंजाब)

एक प्रार्थना

तुम्हारी आशीष की छाया में
अनंत प्रेम की धारा बहाए,
बस प्रार्थना इतनी सी है
प्रार्थना कामना ना बन जाए।
तुम्हारे चरणों की धूल से
सुशोभित मेरा मस्तक हो,
बस किसी की व्यथा आँसुओं में
नाम ना मेरा अंकित हो।
द्वार तेरे चाहे ना आऊं
दीन द्वार पर मेरी उपस्थिति हो,
फूल माला न चढ़ाऊं तुझे
हर गीली आँखें मेरी अतिथि हों।
यदि तूफान के प्रभाव में
दिशा मेरी विपरीत हो,
हाथ पकड़ लेना मेरा तुम
इतना मधुर जीवन का संगीत हो।

बिंदेश कुमार झा

तुम ही तुम

हर दिल में तुम, धड़कन में तुम,
हर दिशा में तुम, हर फिज़ा में तुम,
गीतों में तुम, गज़लों में तुम,
चन्दा में तुम, सूरज में तुम,
तारों की झिलमिल में हो तुम,
हर सुबह में तुम, हर शाम में तुम,
बन्दों में तुम, परिन्दों में तुम,
पक्षियों के कलरव में हो तुम,
मेरे सुख में तुम और दुःख में तुम,
मां गंगा में तुम, यमुना में तुम,
सरस्वती की लहरों में तुम,
काशी में तुम, काबा में तुम,
वृन्दावन की गलियों में तुम,
मेरे राम हो तुम, घनश्याम हो तुम,
मेरा ये कहना, मेरे प्राण हो तुम,
रामायण में तुम, गीता में तुम,
गुरू नानक की, वाणी में तुम,
मेरी आस हो तुम, विश्वास हो तुम,
मेरे जीवन में कुछ खास हो तुम।

-प्रेम हंस, फरीदाबाद

साई सुकून

साई, तुम ही बताओ,
क्यूं तुमसे इतना प्यार है,

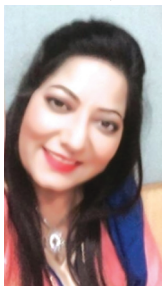

पल-पल आपको
देखती जाऊं,
फिर भी ये दिल
बेकरार है,
जो सहारा दिया साई
तुमने,
वो सहारा कहीं
न मिला,
फिरूं मैं दर बदर साई,
पर सुकून तुमसे ही
मिला,
तेरे ही भरोसे साई चले,
ज़िंदगी तो अब मेरी,
जीने की वजह है मेरी,
साई बंदगी बस तेरी,
तेरा शुक्रिया, साई शुक्रिया,
करूं पल-पल साई शुक्रिया,
रंगों से रंग दिया ये जीवन,
मेरे बाबा तेरा शुक्रिया।

-संगीता ग्रोवर
गायिका, लेखिका, कवियत्री

शिरडी साई मन्दिर फरीदाबाद में श्री कृष्ण जन्माष्टमी उत्सव

फरीदाबाद: शिरडी साई मन्दिर, सैक्टर 16, फरीदाबाद में सभी त्यौहार बड़ी धूमधाम से मनाये जाते हैं, जैसे राम नवमी, श्री कृष्ण जन्माष्टमी दशहरा, दीवाली, स्वतंत्रता दिवस, गणतंत्र दिवस,

होली आदि। जन्माष्टमी का उत्सव हर साल की तरह बड़ी धूमधाम से मनाया गया। मन्दिर परिसर में श्री कृष्ण के मधुर भजनों का प्रस्तुति गायक सज्जन सिंह एंड पार्टी द्वारा दी गई, जिसका भक्तों ने नाच गाकर आनंद लिया व विभिन्न प्रकार की झांकियां जिसमें राधा कृष्ण, शिव पार्वती, कृष्ण सुदामा आदि का प्रस्तुतीकरण किया गया। मध्यरात्रि में श्रीकृष्ण जन्म पर प्रधान योगेश दीक्षित व अन्य ट्रस्टीगण, गगन दुआ व मंदिर कार्यकारणी सदस्य पी.आर. सिक्का जी, ज्योति सिक्का जी, श्रीपाल चंदीला, राजीव ग्रोवर व मन्दिर के सभी पंडितों ने श्रीकृष्ण आरती व श्री साई बाबा की आरती की। उसके पश्चात मटकी फोड़ने का कार्यक्रम किया गया। प्रोग्राम के समापन पर सभी भक्तों को प्रसाद में मक्खन, चरणामृत और फ्रूट का वितरण किया गया।

-योगेश दीक्षित (प्रधान)

साई की भक्ति

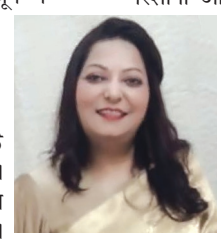

पतझड़ में बसंत की फुहार हो मेरे साई तुम,
ज़िंदगी की तपतपाती धूप में
सुकून भरी छाया हो साई
तुम।
बाबा शक्ति, भक्ति, मुक्ति
का भंडार,
जो साई का हो गया उसके
जीवन में आई बहार।
बाबा ने सदा सादगी, भाईचारा
और संगठन का संदेश दिया।
दया की मूर्त मेरे साई ने कभी किसी को संशय में नहीं डाला। पशु-पक्षी, अच्छे-बुरे सबको अपनाया। मानव चोले में रह कर दुनिया को शांति और अपनत्व का रास्ता दिखाया। बाबा की शरण में रहते हुए कभी-कभी हमारे जीवन में कठिनाई या परेशानी आती है तो वो हमारे पूर्व जन्म या इस जन्म के प्रारब्ध हैं। साई हर पल साथ रहकर इनसे मुक्ति दिलाते हैं। कौन कहता है साई दिखते नहीं। मन और श्रद्धा की आंखों से देखो, साई दिखेंगे भी और आपके व्याकुल मन को शांत भी करेंगे। चंद लोग जो साई जी के लिए भ्रांतियां फैलाते हैं, मूर्ख हैं। उनकी इन बातों से साई जी के भक्तों पर कोई असर नहीं पड़ेगा। अपितु वह स्वयं के कर्म खराब कर रहे हैं। जो साई जी को ध्याता है, वो साईमय हो जाता है। **-संगीता ग्रोवर,** गायिका, लेखिका, कवियत्री

मोक्ष प्राप्ति का साधन

परमात्मा प्राप्ति के मार्ग हैं- सत्य, धर्म, दया परमात्मा प्राप्ति के मार्ग हैं- सत्य, धर्म, दया और प्रेम। इन मार्गों के लिए हमें संस्कार, सद्व्यवहार, सदाचार एवं सत्संग का अनुसरण करना अत्यन्त आवश्यक है क्योंकि मानव धन एवं काम का दास हो गया है तथा उसी में अपने जीवन के कल्याण को देखता है। ईश्वरत्व हमारा मूल स्वरूप है। अज्ञानता ने हमें अपने ईश्वरत्व से अलग कर दिया है इसलिए ज्ञान अत्यंत आवश्यक है, वही अज्ञानता का पर्दा हटाकर हमें ईश्वर से जोड़ता है। ज्ञान के लिए सत्संग, सुविचार एवं साधना आवश्यक है। अज्ञानता दूर होने पर जो शेष बचता है वही तो ज्ञान है। वही तो हमारा सर्वोच्च परमात्मा-स्वरुप है। इसके बाद तो हम स्वयं ही दिव्य विभूति का अनुभव कर सकेंगे। इसलिए हमारे पूज्य संत कहते हैं कि प्रत्येक मनुष्य को चाहे वह किसी भी धर्म या मत का हो, उसका परम कर्तव्य है कि वह प्रतिदिन कुछ समय ईश्वर की प्रार्थना, उपासना, वंदना एवं स्वाध्याय सत्संग आदि में अवश्य गुज़ारे, जिससे उसकी चारित्रिक शुद्धि हो सके, उसका अज्ञान दूर होकर वह ईश्वर के परम तत्व को समझ सके। विश्व सदा परिवर्तनशील है। बसंत, ग्रीष्म, शरद, शिशिर आदि ऋतुओं के माध्यम से वर्ष का स्वरूप बदलता रहता है। प्रातः, दोपहर, संध्या, रात्रि के रूप में दिन परिणित होता रहता है। हमारा भौतिक शरीर भी बचपन, किशोरावस्था, यौवन, प्रोढ़त्व एवं वृद्धावस्था, इस प्रकार बदलता रहता है। हमारी भावनाएं एवं विचार हर समय बदलते रहते हैं। दुनिया की कोई भी वस्तु स्थिर नहीं है। क्षण भंगुरता ही प्रकृति का नियम है। इस बदलते संसार में मानव फिर भी यही चाहता है कि वह सदैव रमणीय विषयों, मुदित भावनाओं और सुखद विचारों में ही रमण करता रहे। लेकिन कैसे हो सकता है यह सब। लगता है मानव यह नहीं मानता कि संसार सुख-दुख, हंसने रोने, हर्ष विषाद, हानि लाभ का ही एक मिश्रित पिटारा है। यद्यपि दुख, शोक, पीड़ा, व्यथा सहना अत्यंत कठिन है, लेकिन इन्हीं के ज़रिए तो हम अपने अंदर देखना शुरू करते हैं। जीवन के यह कष्टदाई थपेड़े ही तो हमें अपने आप को अंतर्मुखी होने के लिए बाध्य करते हैं। इन्हीं के सहारे हम अपनी आंतरिक गहराइयों में उतरते हैं। बस शुरू हो जाता है ज्ञान का वह क्रम जिससे हम अपने परमात्मा तत्व को ही अपने अंदर ढूंढने लगते हैं। इसलिए अध्यात्म एवं धर्म की और उन्नत होना अत्यंत आवश्यक है। श्री सच्चिदानंद सद्गुरु श्री साई बाबा ने कहा है कि जो व्यक्ति स्वयं कष्ट सहन करता है और दूसरों को सुख पहुंचाता है वह मुझे अत्यंत प्रिय है। इसलिए दुखों एवं कष्टों के समय विचलित नहीं होना चाहिए। ऐसे समय में मेरा स्मरण करो, अनन्य भाव से मेरी लीला एवं कथा श्रवण करो। बाबा कहते हैं कि मैं सात समुंदर पार भी तुम्हारी रक्षा करूंगा। प्राणी मात्र तो ईश्वर की ही संतान है। उसका असली रूप तो आत्मा-रूप है। यह शरीर तो केवल उसका वस्त्र है जो की नश्वर है। ईश्वर तो अदृश्य रूप से सभी जीवों की सहायता करते हैं। वह सभी जीवों में समाया हुआ है। मनुष्य का स्वभाव तो सदैव ऊंचा उठना है और आगे बढ़ना है। पशुओं और मानव में यही तो अंतर है। इसलिए पशु जहां के तहां पड़े हैं। हमें अगर अपने जीवन के असली ध्येय को प्राप्त करना है तो हमें- प्रभु की सत्ता को स्वीकार करना होगा, मन में शुद्ध और विश्वास के भाव जागृत करने होंगे व आत्मीयता का संबंध स्वीकार करना होगा।

इन्हीं पर आधारित श्री साई सच्चरित्र पवित्र ग्रंथ हमारी अज्ञानता को दूर करके हमें ज्ञान के पथ पर अग्रसर करता है। बाबा के द्वारा शिरडी प्रवास के दौरान दिए गए उपदेश, उनकी लीलाएं हमें अपने आत्म स्वरूप की दिशा दिखाते हैं। बाबा की महिमा अपरम्पार है। उनकी महान कथाएं अनंत हैं। श्री साई सच्चरित्र इतना गहरा ग्रंथ है कि उसमें जितने गोते लगाए जाएं उतना ही कम है। श्री साई तो कृपा के मेघ हैं, अपनी दया बरसायेंगे तो हम सभी तृप्त हो जायेंगे। इस परिवर्तनशील संसार में जहां जन्म है वहां मृत्यु है। इस पर बाबा ने दिव्य सन्देश दिया है कि मृत्यु से डरो नहीं बल्कि अंत समय के प्रति सजग रहो। मृत्यु के समय मन में जो अंतिम इच्छा या भावना होती है, वही भवितव्यता का निर्माण करती है। जहां तक अनुभव में आया है कि उस समय में अर्थात अंत समय के आने पर अनेक कारणों से भयभीत होने की संभावना रहती है। ऐसे समय में मानव किसी घरेलू उलझन में ना पड़ जाए इसलिए साई बाबा ने प्रभु स्मरण को ही श्रेष्ठ बताया है। भगवान श्री कृष्ण ने गीता के अध्याय 8 में कहा है कि

यं यं वापि स्मरन्भावं त्यजत्यन्ते कलेवरम्।
तं तमेवैति कौन्तेय सदा तद्भावभावितः

मनुष्य अंत काल में जिस जिस भाव का स्मरण करता है, वह उसी को प्राप्त होता है। इसलिए भगवान कृष्ण ने कहा है कि जीवन के अंतिम क्षणों में जो मुझे याद करता है, वह मेरे स्वरूप को प्राप्त होता है। इसलिए यह कथा प्रचलित है कि जब किसी का अंतकाल निकट आ जाए तो उस समय उसे धार्मिक ग्रंथ आदि पढ़कर सुनाए जाते हैं, ताकि उस प्राणी का मन सांसारिक उलझनों से हटकर अध्यात्म की ओर लग जाए और वह प्राणी कर्मवश अगले जन्म में जिस योनि को प्राप्त हो, उसमें उसे सद्गति मिले। राजा परीक्षित को एक ब्रह्म ऋषि के श्राप देने पर एक सप्ताह पश्चात् ही उनका अंत समय आने पर उन्हें महात्मा शुकदेव जी ने श्रीमद्भागवत् कथा सुनाई थी जिससे उन्हें मोक्ष की प्राप्ति हुई थी। शिरडी में एक बाघ जो ज़ंजीरों से बंधा हुआ था, एवं किसी अज्ञात पीड़ा से दुखी था, ऐसा लगता था कि उसका अंतकाल निकट है, जब उसके पालक उसे लेकर बाबा के पास पहुंचे तो वह बाघ उसी समय बाबा के तेज पुंज स्वरूप का दर्शन कर पीछे हटा और अपनी गर्दन झुका दी। जब बाबा की और बाघ की दृष्टि आपस में एक हुई तो बाघ ने प्रेमपूर्वक बाबा की ओर निहारा और अपने प्राण त्याग दिए। इस प्रकार बाघ सरीखे एक हिंसक पशु को साई बाबा के चरणों में प्राण त्याग कर सद्गति प्राप्त हुई। कितना सुखद अंत था इस बाघ का। कहते हैं कि जब कोई प्राणी संतों के चरणों पर अपना मस्तक रखकर प्राण त्याग दे तो उसे मुक्ति मिलती है। संसार को सामने रखेंगे तो अंतकाल में मरते समय संसार ही सामने आएगा। साई बाबा सदैव अपने अंतिम क्षण के प्रति सजग और चैतन्य रहते थे। जब बाबा को विदित हो गया कि अब शीघ्र ही मैं इस नश्वर शरीर का त्याग करूंगा, तब उन्होंने अत्यंत सावधानी से काम लेते हुए श्री वझे को आठों पहर रामविजय प्रकरण सुनाने की आज्ञा दी। श्री साई तो परब्रह्म अवतार हैं लेकिन ऐसा बाबा ने इसलिए किया कि दूसरों के समक्ष एक उदाहरण प्रस्तुत हो सके, अन्यथा उन्हें बाहरी साधनाओं की कोई आवश्यकता नहीं थी। कहा गया है कि भगवान तो अंतर्यामी हैं। अपने भक्तों के हृदय की भावनाओं को जानकर उन्हें मनवांछित फल की प्राप्ति कराते हैं। ऐसे भक्त वत्सल सच्चिदानंद श्री साई नाथ महाराज जो दया के सागर हैं, जिन्होंने स्वेच्छा पूर्वक मानव के कल्याण हेतु मानव शरीर धारण किया। हम उन्हें कोटि-कोटि नमन करते हैं कि वह हमारी त्रुटियों की ओर ध्यान न देकर हमें समस्त कष्टों से बचा लें। भक्तों के दोष दूर कर उन्हें सही रास्ते पर ला देने की बाबा की त्रिकालज्ञता की एक छोटी सी कथा है जिसका वर्णन श्री साई सच्चरित्र में है।

एक समय पंढरपुर के एक वकील शिरडी आकर बाबा के दर्शन और चरण स्पर्श करके एक कोने में बैठ गए। बाबा उनकी ओर देखकर कहने लगे कि कुछ लोग तो ऐसे हैं जो यहां आकर चरणों में गिरते हैं और पीठ पीछे निंदा करते हैं। वहां बैठे हुए कोई भी इन शब्दों का अर्थ न समझ सका। परंतु वकील साहब बाबा द्वारा कही बात को समझ गए। वकील साहब ने यह बात वहां से लौटकर काका साहब दीक्षित को बताई कि बाबा द्वारा कही बात सत्य है और वह मुझे इंगित करके कही गई है। क्योंकि एक समय किसी रोग से ग्रस्त एक उपन्यायाधीश श्री नूलकर स्वास्थ्य लाभ के लिए पंढरपुर से शिरडी आए तो बार रूम में चर्चा हुई कि क्या नूलकर जैसे शिक्षित व्यक्ति को यह व्यवहार शोभा देता है कि साई चरणों में जाकर बिना औषधि के वह रोग से छुटकारा पा लेंगे। उस समय बाबा का उपहास किया गया जिसमें वकील साहब ने भी हिस्सा लिया था। वकील साहब को शिक्षा मिल गई कि अंतर्यामी बाबा से क्या छिपा है और हमें किसी की निंदा नहीं करनी चाहिए। एक दिन दोपहर की आरती के पश्चात भक्तगण अपने-अपने घरों को लौट रहे थे तब बाबा ने एक अति सुंदर उपदेश दिया- तुम चाहे कहीं पर भी रहो, जो इच्छा हो सो करो, परंतु यह सदैव स्मरण रखो कि जो कुछ भी तुम करते हो वह सब मुझे ज्ञात है। मैं ही समस्त प्राणियों का प्रभु और घट-घट में व्याप्त हूं। मेरे ही उदर में समस्त जड़ व चेतन प्राणी समाए हुए हैं। सारांश यही है कि मनुष्य का कर्तव्य है कि सदा के लिए दुखों से छुटकारा पाकर परमानंद, परम शांति को प्राप्त करें और यह तभी संभव होगा जब संसार को भुलाकर सर्वत्र साई प्रभु का ही दर्शन करेंगे।

प्रिय पाठको, मानव जन्म को यूं ही बेकार न जाने दें बल्कि इसके अंदर अदृश्य रूप में बसे हुए आत्म तत्व को पहचान कर प्रेम और भक्ति द्वारा उसे प्राप्त करने का प्रयास करें ताकि हम अपने बाबा साई तक पहुंच सकें। हे प्रभु साई, सांसारिक पदार्थों से हमारी आसक्ति दूर कर हमें आत्मानुभूति प्रदान करें, हम अपनी काया और प्राण आपके श्री चरणों में अर्पित करते हैं। हे प्रभु मेरे नेत्र को तुम अपने नेत्र बना लो ताकि हमें सुख-दुख का आभास ही ना हो। मेरे मन को तुम अपनी इच्छा अनुसार चलने दो और मेरे मन को अपने चरणों की शीतल छाया में विश्राम करने दो।

-एस.पी. अग्रवाल, ऋषिकेशऋषिकेश

भगवत्-सुमिरन हर अवस्था में

पानी भरने वाली पनिहारी-घड़े सिर पर व बगल में लेकर घर की तरफ चली आती है। उसकी दृष्टि रास्ता देखने में व्यस्त होती है। कान सहेली की बातें सुनने में व्यस्त होते हैं। जुबान उसके प्रश्नोत्तर में व्यस्त होती है। पांव अपना चलने का कार्य करते हैं। इतनी सारी व्यस्तता के बावजूद भी घड़ा अडोल है, कारण उसका सारा ध्यान केंद्रित है सिर पर रखे घड़ों में, उसको हिचकी भी नहीं लगती। इस तरह हे मनुष्य, तुम भी खाओ-पीओ, सभी व्यवहार करो, अपने कर्तव्यों का पालन करो, परन्तु अपने मन को प्रभु के नाम में केंद्रित करो। सदैव प्रभु का ध्यान करो। अपने ध्यान को कभी भी प्रभु से हटने मत दो। तुम्हारा ख्याल हर वक्त अपने निशाने पर कायम रहे।

सुमिरन की सुधि यों करो, ज्यों गागर पनिहार
हाले डोले सुरत में, कह कबीर विचार।

-सद्गुरू श्री साई नारायण बाबा

आभार: ज्ञान सागर

बाबा के फोटो पर धूल

आई एक बार सपरिवार मास्टरजी के जमखंडी वाले पैतृक घर गई थी और बाबा की एक फोटो उस घर में लगाने के लिए बड़े प्रेम से अपने साथ लेकर गई थी। वहां पहुंचने पर, उस फोटो को उन्होंने वहां के पूजा घर में रख दिया और मास्टरजी की माताजी से, यानी अपनी सास से उस चित्र के सामने हर गुरूवार को एक अगरबत्ती जलाने और दर्शन करने का आग्रह किया।

मास्टरजी की माताजी ऐसा करने के लिए मान गई। मास्टरजी के पिताजी तो बाबा के बड़े भक्त थे, लेकिन माताजी बाबा में उतनी आस्था नहीं रखती थीं। परम्परावादी ब्राह्मण होने के कारण, वे अपने पारम्परिक तौर-तरीकों को बहुत मानती थीं। लेकिन फिर भी, आई का मन रखने के लिए बाबा के उस फोटो को भक्ति भाव से रखने के लिए वे सहमत हो गई थीं।

उनके गोआ लौट जाने के बाद आई की सास पर पड़ोसी की एक बात का असर पड़ा जब उसने प्रश्न किया कि एक ब्राह्मण होने के बावजूद वे एक मुस्लिम की पूजा क्यों करती हैं। इस बात का असर यह हुआ कि उन्होंने बाबा की फोटो उठा कर टांड (परछती) पर रख दी।

इस घटना के बाद जल्द ही आई को एक सपना आया जिसमें बाबा ने उनसे कहा, 'उन्होंने तो मुझे उठा कर टांड पर रख दिया है। मुझ पर बहुत सारी धूल भी चढ़ गई है, मैं चाहता हूं तुम मुझे वापस ले आओ।'

इस सपने को देखकर आई बहुत विक्षुब्ध (अशांत) हो गई। बाबा के प्रति उनका प्रेम अकल्पनीय है। सुबह मास्टरजी को अपना सपना सुनाने के बाद उन्होंने पूछा, 'क्या आपकी माताजी ने ऐसा किया होगा? मास्टरजी ने यह कहते हुए इंकार किया कि उनकी माताजी तो बहुत पुण्यात्मा हैं और वे ऐसा नहीं कर सकती। लेकिन आई तो बुरी तरह परेशान थी और इसलिए उन्होंने मास्टरजी से तुरंत जमखंडी जाने का आग्रह किया।

जिस स्कूल में मास्टरजी ने हाल ही में जॉइन किया था उसकी छुट्टियां खत्म हो चुकी थीं और उन्हें पता था कि हाल-फिलहाल उन्हें छुट्टी मिल नहीं सकेगी। इसलिए, उन्होंने आई से कहा कि अभी वे नहीं जा सकेंगे। इस पर आई बस चुप रही।

आई की इस बात के बारे में कुछ और सोचे बिना मास्टरजी हर रोज़ की तरह स्कूल चले गए। वहां पहुंचने पर स्कूल के ऑफिस में उनसे कुछ दस्तावेज़ों की मूल प्रतियां लाने के लिए कहा गया। उस नौकरी के लिए आवेदन के साथ दिए दस्तावेज़ों की पुष्टि के लिए उनकी मूल प्रतियां प्रस्तुत किया जाना आवश्यक था और इत्तफाक की बात यह थी कि वे मूल दस्तावेज़ जमखंडी वाले घर में रखे हुए थे। स्कूल की तरफ से उन्हें कुछ दिनों की छुट्टी प्रदान की गई ताकि जमखंडी जाकर वे उन दस्तावेज़ों को ला सकें।

मास्टरजी घर आये और जो हुआ उसके बारे में आई को बताया। अगले दिन वे जमखंडी के लिए रवाना हो गए। उनकी माताजी को उनके इतनी जल्दी पुनः आने की आशा नहीं थी। वहां पहुंचकर मास्टरजी सीधे पूजा वाले कमरे में यह देखने के लिए गए कि वहां बाबा की फोटो है या नहीं। उनको अचंभा हुआ यह देखकर कि वह फोटो वाकई वहां नहीं थी।

मास्टरजी उत्तेजित हो उठे और उन्होंने माताजी से पूछा, 'यह क्या? आपने बाबा की फोटो क्यों हटाई?'

'मुझे उससे परेशानी हो रही थी,' माताजी ने कहा।

'यह तो बहुत गलत बात है। मीना ने सपना देखा है जिसमें बाबा ने उसे बता दिया कि आपने क्या किया है' मास्टरजी बोले। यह सुनकर माताजी स्तब्ध रह गई और उन्हें बड़ा पछतावा भी हुआ। दोनों ने मिलकर उस फोटो को टांड से उतार कर पुनः वहां रख दिया जहां आई उसे रख कर गई थीं और क्षमा मांगी।

समय के साथ-साथ मास्टरजी की माताजी का विश्वास बाबा में बढ़ता गया और आई के प्रति प्रेम भी।

-निखिल कृपलानी

आभार: साई बाबा और आई

प्रतियोगिता नम्बर 238

नीचे लिखी पंक्तियां श्री साई सच्चरित्र से ली गई हैं, आपको बताना है कि ये कौन से अध्याय से हैं। सही जवाब भेजने वाले को मिलेगा इनाम। अपने जवाब हमें 9818023070 पर whatsapp करें या saisumirantimes@gmail.com पर ई-मेल करें। अपना पता व फोन नंबर अवश्य लिखें।

1. मां मैं कुछ भोजन पाने के विचार से तुम्हारे घर बांद्रा गया था, द्वार में ताला लगा देखकर भी मैंने किसी प्रकार गृह में प्रवेश किया।
2. जिस प्रकार नदी या समुंद्र पार करते समय नाविक पर विश्वास रखते हैं, उसी प्रकार का विश्वास हमें भवसागर से पार होने के लिए सद्गुरू पर करना चाहिए।

पहला ईनाम- कंचन मेहरा के सौजन्य से शिरडी आने जाने की स्लीपर क्लास की दो टिकटें। (शिरडी टिकट तीन महीने तक ही मान्य है)

दूसरा इनाम- साई माऊली ट्रस्ट राजपार्क के सौजन्य से बाबा का वस्त्र।

पिछले माह की प्रतियोगिता के सही उत्तर: 1. अध्याय- 18-19, अध्याय- 25

सही जवाब भेज कर शिरडी यात्रा की 2 टिकटों (स्लीपर क्लास) का पहला इनाम जीता है सिरसा, हरियाणा से सोनिया रानी ने और दूसरा ईनाम जीता है दिल्ली से अमिता सिंह ने। आपको जल्द ही ईनाम भेजे जायेंगे।

पुरानी चोट अथवा दर्द के इलाज हेतु तेल तथा लेप श्री साई मंदिर, एच ब्लॉक, सरोजनी नगर, नई दिल्ली से प्राप्त किया जा सकता है। सम्पर्क करें- प्रीति भाटिया फोन: 9899038181

प्रकाशक, मुद्रक, स्वामी व सम्पादक अंजु टंडन ने वीबा प्रैस प्रा. लि., C-66/3, ओखला इंडस्ट्रीयल एरिया, फेस-2, नई दिल्ली से छपवा कर F-44-D, MIG फ्लै. टस, G-8 एरिया, हरि नगर, नई दिल्ली-110064 से प्रकाशित किया। PRGI No. DELBIL/2005/16236

किसी भी विज्ञापन पर अमल करने से पहले उसकी सत्यता की जांच स्वयं कर लें। प्रकाशक व सम्पादक इसकी प्रमाणिकता के लिए किसी तरह से ज़िम्मेदार नहीं होंगे। विज्ञापन एवं लेखकों की राय से सम्पादकीय का सहमत होना अनिवार्य नहीं।

सम्पादन मण्डल

मुख्य संरक्षक -सी.एल. टिक्कू, स्वामी बलदेव भारती, राकेश जुनेजा, सुमित पोंदा, मोतीलाल गुप्ता, पवार काका, सर्वेंट्स ऑफ शिरडी साई
मुख्य सलाहकार -स्वामी सत्यानंद महाराज, संदीप सोनवणे, सुरेन्द्र सक्सैना, भरत मेहता, अशोक सक्सैना, सुनील नागपाल, नीरज कुमार, जी.आर. नंदा, अशोक खन्ना, मुकुल नाग, मंजु बवेजा
सलाहकार -महेन्द्र दादू, भीम आनंद, मीता साई, के.बी. शर्मा, के.सी. गुप्ता, नरेश मदान, अमित माथुर, सचिन जैन, सुरेन्द्र सेठी, संदीप अरोड़ा
विशेष सहयोग -अमित सरीन, महेन्द्र शर्मा
सम्पादक -अंजु टंडन
सह सम्पादक -शिवम चोपड़ा
उप सम्पादक -पूनम धवन,
डिज़ाइनर -गायत्री सिंह
कानूनी सलाहकार -प्रेमेन्द्र ओझा
सहयोगी -ज्योति राजन, कृष्णा पुरी, मीरा साव, अंजली, कंचन मेहरा, मीनू सिंगला, साईना पुरी, दिनेश माथुर, सुनीता सग्गी, ओंकार नाथ अस्थाना, विवेक चोपड़ा, आंचल मारवा, संजय उप्पल, शैली सिंह, किरण, विशाल भाटिया, सुषमा ग्रोवर, गुरबचन सिंग, उषा अरोड़ा, योगेश शर्मा, उषा कोहली, रूपलाल अहूजा, राजीव भाटिया, प्रेम गुलाटी, योगेश बहल, नीलम खेमका, सीमा मेहता, वर्षा शर्मा, नीलू जग्गी, गीतांजलि छाबड़ा।

-प्रशासनिक कार्यालय-
F-44-D, MIG Flats, G-8 Area, Hari Nagar,
New Delhi -110064, Ph- 9818023070, 9212395615
(सभी पद अवैतनिक हैं)

Publication date- 5th September 2025, Posting date- 9th/10th September 2025, Place of posting- Naraina

साई मंदिर पिम्पल सौदागर रोड पुणे में साई मित्र द्वारा साई भजन

पुणे: दिनांक 23 अगस्त 2025 को साई बाबा मंदिर, पिम्पल सौदागर रोड, पुणे (महाराष्ट्र) में 71वें साई मिलन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर साई मित्र के श्री

पहुंची। शेज आरती से कार्यक्रम का समापन हुआ। उसके बाद सभी भक्तों ने भंडारा प्रसाद ग्रहण कर प्रस्थान किया।

दिनांक 24 अगस्त को प्रात: काकड़

आरती व मंगल स्नान के बाद नगर संकीर्तन किया गया। उसके बाद सत्यनारायण पूजा हुई। भिक्षा झोली कार्यक्रम के पश्चात् प्रात: 10 बजे से दोपहर 3 बजे तक लगातार भजनों का कार्यक्रम चलता रहा। दोपहर 1 बजे से भंडारा आरंभ हुआ। शाम 5 बजे बाबा की रथ यात्रा निकाली गई। जिसमें बहुत से भक्त शामिल हुए। रात 8 बजे से डांस ड्रामा की प्रस्तुति दी गई जिसका सभी ने आनन्द लिया। रात 9:30 बजे हनुमान चालीसा का गायन करने के बाद शेज आरती की गई। सभी भक्तों ने भंडारा प्रसाद ग्रहण किया। **-प्रेमा अलमद**

नटराजन जी एवं उनके साथी कलाकारों द्वारा साई भजनों का मधुर गुणगान किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ सांय 5 बजे गणेश चालीसा एवं गणेश आरती से हुआ। सांय 6 बजे भजनों का गुणगान आरंभ हुआ जो रात 10 बजे तक चलता रहा। श्री नटराजन जी एवं उनके साथियों ने एक के बाद एक हृदयस्पर्शी भजन सुनाकर सभी भक्तों को भावविभोर कर दिया। पूरा मंदिर भक्तों से भरा था सभी ने उनके भजनों का खूब आनन्द लिया। बाबा की परम भक्त श्रीमती प्रेमा अलमद मुम्बई से विशेष तौर से इस कार्यक्रम में शामिल होने पुणे

फरीदाबाद साई धाम में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी उत्सव

फरीदाबाद: दिनांक 15 अगस्त 2025 को फरीदाबाद सैक्टर 86 स्थित शिरडी साई बाबा टेम्पल सोसाइटी के प्रांगण में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी बड़ी धूमधाम से मनाई गई। इस अवसर पर शिरडी

साई बाबा स्कूल के बच्चों ने रंग-बिरंगी झांकियां व रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किया। विभिन्न छात्रों द्वारा श्रीकृष्ण का जीवन चरित्र, राधा से उनका प्रेम, सुदामा से उनकी मित्रता, गीता सार जैसी झांकियों से कलयुग में द्वापर युग की झलक दिखाई। उसके पश्चात् मनमोहक भजनों ने सभी को मंत्रमुग्ध किया। इस अवसर पर साई धाम के संस्थापक अध्यक्ष डा. मोतीलाल गुप्ता ने सभी भक्तों को जन्माष्टमी की बधाई व शुभकामनाऐं दी। रात्रि 12 बजे श्रीकृष्ण का अभिषेक कर विशेष पूजा का आयोजन किया गया। जिसमें भारी संख्या में भक्त शामिल हुए। तत्पश्चात सभी भक्तजनों को प्रसाद वितरण किया गया। **-के.ए. पिल्ले**

होटल साई संगम शिरडी में नेत्र जांच शिविर

शिरडी: दिनांक 24 अगस्त 2025 को साई संगम सेवाभावी संस्था शिरडी और संगम शिरडी में लगाया गया जहां कई अनुभवी डॉक्टरों ने मरीज़ों की जांच की। यह शिविर श्री संदीप भाऊ सोनेवने के अथक प्रयास से लगाया गया।

आर. झुनझुनवाला, शंकरा आई हॉस्पीटल, नवीन पनवेल के सयुक्त प्रयास से शिरडी के सुप्रसिद्ध होटल साई संगम में नि:शुल्क नेत्र जांच व मोतियाबिंद चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। यह शिविर सुबह 10 बजे से दोपहर 1 बजे तक होटल साई इससे कई लोगों को, जिनकी आखें खराब थी और जिन्हें मोतियाबिंद की शिकायत थी, उनको बहुत लाभ मिला। डॉक्टरों के परामर्श से उनका निशुल्क इलाज किया गया। इसके अतिरिक्त रोगीयों के रहने व भोजन की व्यवस्था भी निशुल्क की गई।

श्री संदीप भाऊ सोनेवने द्वारा समय-समय पर अनेक सामाज सेवा के कार्य किये जाते हैं। वो अपना जन्मदिन भी वृद्धाश्रम में अन्नदान व वस्त्रदान करके व गरीब बच्चों को भोजन करवा कर मनाते हैं जो अत्यंत सराहनीय है। **-निलेश संक्लेचा**

साई आश्रम ट्रस्ट द्वारा साई मंदिर गोवा में भजन

गोवा: दिनांक 23 अगस्त 2025 को हम सभी ने गोवा का भ्रमण किया साई मंदिरों को देखा सांयकाल क्रूज़ में सभी ने मीनू सचदेवा और संजय मिश्रा जी के साथ मौज मस्ती की, बच्चों और युवाओं ने डीजे की धुन पर मनमोहक नृत्य किया।

दूसरे दिन दोपहर को हम सभी गोवा के प्रसिद्ध साई मंदिर सनगोल्डा टेंपल में राजू भाई और बाबू भाई के निमंत्रण पर गये, वहां पर मीनू सचदेवा और प्रतिभा जी ने भजनों की रस गंगा बहा दी उन्होंने अपने ट्रस्टियों सहित संजय मिश्रा, मीनू सचदेवा, हरीश सनवाल सहित सभी को बाबा का पटका पहना कर सम्मानित किया और सभी ने भोजन प्रसाद ग्रहण कर प्रस्थान किया। उसी दिन सांय को मीनू सचदेवा जी ने अपने साथियों के ग्रुप साई आशीर्वाद साथ गोवा के पणजी स्थित होटल होलीडे विलेज में साई भजनों का गुणगान किया जिसका स्थानीय लोगों ने भी जमकर आनंद उठाया। ऐसा डमरू बजाया भोलेनाथ ने, नौकरी ते नौकरी कर बाबा की नौकरी, भरोसे हम हैं तो बाबा के जो होगा देखा जायेगा, भोग गीत के साथ ही बाबा को भोग लगाया इसके साथ ही प्रसाद वितरण प्रारम्भ हो गया। अंत में संजय मिश्रा जी ने आमंत्रित साई भक्तों सर्वश्री उमेश मिश्रा, राजेश पटेल, अनुराग जी, योगेश पंत (देहरादून से) अवधेश जी, हरीश सनवाल, बीनू शुक्ला जी, औंकार गुप्ता, पंकज शर्मा, सर्वेश साई, आर.के. तिवारी, जयनारायण शर्मा, अरविन्द शर्मा, संध्या मिश्रा, सुनीता दीक्षित, प्रेमा पांडे, दिल्ली से अनुराधा सिंगला, ममता उपाध्याय, हेमा बिष्ट, अंजलि निगम, प्रमिला गोस्वामी, साधना सारंग, दिपिका उप्रेती, रीता पंत, कुमकुम गुप्ता, सावित्री विश्वकर्मा इत्यादि को धन्यवाद देकर कार्यक्रम की समाप्ति की घोषणा की। **-संजय मिश्रा**

श्रीराम मंदिर शिलांग में जन्माष्टमी महोत्सव धूमधाम से सम्पन्न

शिलांग: दिनांक 16 अगस्त 2025 को निधी अष्टमी को श्री राम मंदिर शिलांग में श्री कृष्ण जन्माष्टमी

कृष्ण को 56 भोग का प्रसाद अर्पित किया गया। रात्रि 8 बजे से 10 बजे तक रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन हुआ। तत्पश्चात् भजन कीर्तन का आयोजन किया गया। पूरा मंदिर भक्तों से भरा था। भजनों के उपरांत कार्यक्रम में भाग लेने वाले बच्चों को पुरस्कृत किया गया। तदोपरांत श्री कृष्ण जन्मोत्सव पर आरती की गई। का त्यौहार बहुत ही धूमधाम से मनाया गया। दिन में भक्तों के द्वारा पूरे मंदिर को भव्य तरीके से सजाया गया। महिला भक्तों द्वारा मंदिर में स्थापित सभी देवी देवताओं को नये वस्त्र पहनाये गये। मंदिर की मुख्य सेविका सुधा रानी गुप्ता ने श्री साई बाबा के लिए विशिष्ट अंगवस्त्र एवं पटका अपने हाथों से सिलाई कर बाबा को पहनाया। सांयकाल में भगवान श्री

मंदिर में उपस्थित सभी भक्तों ने आरती कुंज बिहारी की गायन कर समां बांध दिया। पूरे कार्यक्रम का संचालन मंदिर के मुख्य सेवक व सेविका बलराम गुप्ता एवं सुधा रानी गुप्ता के कुशल नेतृत्व में बखूबी किया गया। ऊँ साई राम।

-बलराम गुप्ता

शिरडी संस्थान ग्लोबल बुक ऑफ इंगलैंड वर्ल्ड रिकॉर्ड में शामिल

शिरडी: दिनांक 30 अगस्त 2025 को शिरडी साई बाबा संस्थान के उच्चतम कार्यों को दिखते हुए शिरडी संस्थान को Global Book of Excellence England World Records

की आस्था का केन्द्र बन गया है, उसे Global Book of Excellence England के प्रधान डॉ. मनीष कुमार, उप-प्रधान डॉ. दीपक हारके और कार्यकारी निर्देशक श्री जितेन्द्र मित्तल ने संस्थान के मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री गोरक्ष गाडिलकर को World Record Certificate देकर सम्मानित किया। इस अवसर पर संस्थान के उपमुख्य कार्यकारी अधिकारी और प्रशासनिक अधिकारी श्री संदीप कुमार भोसले, प्रशासनिक अधिकारी श्री विश्वनाथ बजाज, मुख्य कार्यकारी अभियंता श्री भीकन दाभडे और सभी विभागों के प्रमुख भी उपस्थित थे। इस अन्तराष्ट्रीय पहचान ने शिरडी संस्थान के धार्मिक, सामाजिक और मानवता के योगदान को विश्व भर में उजागर किया है। **-शिरडी संस्थान**

श्री साई सुमिरन टाइम्स की सदस्यता एवं विज्ञापन के लिए सम्पर्क करें-
Ph: 9818023070
9212395615
For Daily Shirdi Darshan, Experiences of Sai Devotees & Latest News Subscribe Youtube Channel of Shri Sai Sumiran Times

SAI DHAM
OFFERS
HOME LIKE STAY & HOME LIKE FOOD
GUEST FACILITIES IN SAIDHAM
- 45 Well Furnished AC Rooms with Modern Amenities
- TV with Satellite channels/Intercom facility
- Geyser in each room to ensure round the clock hot water
- "Babaji" The Pure Veg. Restaurant & 3 Hall for Function
- Round the clock power backup with AC • Ample car parking
- Situated just 10 minute walking AIIMS/ Safdarjung Hospital.

Address : No.- 2 August Kranti marg Hauz Khas, New Delhi
Contact No. : 011-41656601, 9650053654

साई धाम मंदिर
उप्पल साउथएण्ड कालोनी सैक्टर-49, गुरूग्राम में शुभ कार्यों के लिए 2 हाल एवं 5 कमरे उपलब्ध हैं।
सम्पर्क करें:
श्री अरूण मिश्रा
फोन: 9350858495, 0124-2230021